

“सदा स्नेही के साथ अखण्ड महादानी बनी तो विघ्न-विनाशक, समाधान स्वरूप बन जायेंगे”

आज प्रेम के सागर अपने परमात्म प्रेम के पात्र बच्चों से मिलने आये हैं। आप सब भी स्नेह के अलौकिक विमान से यहाँ पहुंच गये हो ना! साधारण प्लेन में आये हो वा स्नेह के प्लेन में उड़कर पहुंच गये हो? सभी के दिल में स्नेह की लहरें लहरा रही हैं और स्नेह ही इस ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। तो आप सभी भी जब आये तो स्नेह ने खींचा ना! ज्ञान तो पीछे सुना, लेकिन स्नेह ने परमात्म स्नेही बना दिया। कभी स्वप्न में भी नहीं होगा कि हम परमात्म स्नेह के पात्र बनेंगे। लेकिन अब क्या कहते हो? बन गये। स्नेह भी साधारण स्नेह नहीं है, दिल का स्नेह है। आत्मिक स्नेह है, सच्चा स्नेह है, निःस्वार्थ स्नेह है। यह परमात्म स्नेह बहुत सहज याद का अनुभव कराता है। स्नेही को भूलना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं, भूलना मुश्किल होता है। स्नेह एक अलौकिक चुम्बक है। स्नेह सहज योगी बना देता है। मेहनत से छुड़ा देता है। स्नेह से याद करने में मेहनत नहीं लगती। मुहब्बत का फल खाते हैं। स्नेह की निशानी विशेष चारों ओर के बच्चे तो हैं ही लेकिन डबल विदेशी स्नेह में दौड़-दौड़ कर पहुंच गये हैं। देखो, 90 देशों से कैसे भागकर पहुंच गये हैं! देश के बच्चे तो हैं ही प्रभु प्रेम के पात्र, लेकिन आज विशेष डबल विदेशियों को गोल्डन चांस है। आप सबका भी विशेष प्यार है ना! स्नेह है ना। स्नेह है कितना! कितना? तुलना कर सकते हो किससे! कोई तुलना नहीं हो सकती। आप सबका एक गीत है ना - न आसमान में इतने तारे हैं, ना सागर में इतना जल है..., बेहद का प्यार, बेहद का स्नेह है।

बापदादा भी स्नेही बच्चों से मिलने पहुंच गये हैं। आप सब बच्चों ने स्नेह से याद किया और बापदादा आपके प्यार में पहुंच गये हैं। जैसे इस समय हर एक के चेहरे पर स्नेह की रेखा चमक रही है। ऐसे ही अब एडीशन क्या करना है? स्नेह तो है, यह तो पक्का है। बापदादा भी सर्टीफिकेट देते हैं कि स्नेह है। अभी क्या करना है? समझ तो गये हो। अभी सिर्फ अण्डरलाइन करना है - सदा स्नेही रहना है, सदा। समटाइम नहीं। स्नेह है अटूट लेकिन परसेन्टेज में अन्तर पड़ जाता है। तो अन्तर मिटाने के लिए क्या मन्त्र है? हर समय महादानी, अखण्डदानी बनो। सदा दाता के बच्चे विश्व सेवाधारी समान। कोई भी समय मास्टर दाता बनने के बिना नहीं रहें क्योंकि कार्य विश्व कल्याण का बाप के साथ-साथ आपने भी मददगार बनने का संकल्प किया है। चाहे मन्सा द्वारा शक्तियों का दान वा सहयोग दो। वाचा द्वारा ज्ञान का दान दो, सहयोग दो, कर्म द्वारा गुणों का दान दो और स्नेह सम्पर्क द्वारा खुशी का दान दो, कितने अखण्ड खजानों के मालिक, रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड हो। अखुट और अखण्ड खजाने हैं। जितने देंगे उतने बढ़ते जाते हैं। कम नहीं होंगे, बढ़ेंगे क्योंकि वर्तमान समय इन खजानों के मैजॉरिटी आप सबके आत्मिक भाई और बहनें प्यासी हैं। तो क्या अपने भाई बहनों के ऊपर तरस नहीं पड़ता! क्या प्यासी आत्माओं की प्यास नहीं बुझायेंगे? कानों में आवाज नहीं आता “हे हमारे देव देवियां हमें शक्ति दो, सच्चा प्यार दो”। आपके भक्त और दुःखी आत्मायें दोनों ही दया करो, कृपा करो, हे कृपा के देव और देवियां कहकर चिल्ला रहे हैं। समय की पुकार सुनाई देती है ना! और समय भी देने का अब है। फिर कब देंगे? इतना अखुट अखण्ड खजाने जो आपके पास जमा हैं, तो कब देंगे? क्या लास्ट टाइम, अन्तिम समय देंगे? उस समय सिर्फ अंचली दे सकेंगे। तो अपने जमा हुए खजाने कब कार्य में लगायेंगे? चेक करो हर समय कोई न कोई खजाना सफल कर रहे हैं! इसमें डबल फायदा है, खजाने को सफल करने से आत्माओं का कल्याण भी होगा और साथ में आप सब भी महादानी बनने के कारण विघ्न-विनाशक, समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप सहज बन जायेंगे। डबल फायदा है। आज यह आया, कल यह आया, आज यह हो गया, कल वह हो गया। विघ्न-मुक्त, समस्या मुक्त सदा के लिए बन जायेंगे। जो समस्या के पीछे समय देते हो, मेहनत भी करते हो, कभी उदास बन जाते, कभी उल्हास में आ जाते, उससे बच जायेंगे क्योंकि बापदादा को भी बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। जब बापदादा देखते हैं, बच्चे मेहनत में हैं, तो बच्चों की मेहनत बाप से देखी नहीं जाती। तो मेहनत मुक्त, पुरुषार्थ करना है लेकिन कौन सा पुरुषार्थ? क्या अभी तक अपनी छोटी-छोटी समस्याओं में पुरुषार्थी रहेंगे! अब पुरुषार्थ करो अखण्ड महादानी, अखण्ड सहयोगी, ब्राह्मणों में सहयोगी बनो और दुःखी आत्मायें, प्यासी आत्माओं के लिए महादानी बनो। अब इस पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पसन्द है ना! पसन्द है! पीछे वाले पसन्द है! तो अभी कुछ चेंज भी करना चाहिए ना, वही स्व प्रति पुरुषार्थ बहुत टाइम किया। कैसे पाण्डव! पसन्द है? तो कल से क्या करेंगे? कल से ही शुरू करेंगे या अब से? अब से संकल्प करो - मेरा समय, संकल्प विश्व प्रति, विश्व की सेवा

प्रति। इसमें स्व का ऑटोमेटिक हो ही जायेगा, रहेगा नहीं, बढ़ेगा। क्यों? किसी को भी आप उसकी आशाये पूरी करेंगे, दुःख के बजाए सुख देंगे, निर्बल आत्माओं को शक्ति देंगे, गुण देंगे, तो वह कितनी दुआये देंगे। और दुआये लेना सबसे लेना सबसे सहज साधन है, आगे बढ़ने का। चाहे भाषण नहीं करो, प्रोग्राम ज्यादा नहीं कर सकते हो, कोई हर्जा नहीं, कर सकते हो तो और ही करो। लेकिन नहीं भी कर सकते हो तो कोई हर्जा नहीं, सफल करो खजानों को। सुनाया ना - मन्सा से शक्तियों का खजाना देते जाओ। वाणी से ज्ञान का खजाना, कर्म से गुणों का खजाना और बुद्धि से समय का खजाना, सम्बन्ध-सम्पर्क से खुशी का खजाना सफल करो। तो सफल करने से सफलता मूर्त बन ही जायेगे, सहज। उड़ते रहेंगे क्योंकि दुआये एक लिफ्ट का काम करती हैं, सीढ़ी का नहीं। समस्या आई, मिटाया, कभी दो दिन लगाया, कभी दो घण्टा लगाया, यह सीढ़ी चढ़ना है। दुआये सफल करो, सफलता मूर्त बनो, तो लिफ्ट में सेकण्ड में पहुंच जायेगे, जहाँ चाहो। चाहे सूक्ष्मवतन में पहुंचों, चाहे परमधाम में पहुंचो, चाहे अपने राज्य में पहुंचो, सेकण्ड में। लण्डन में प्रोग्राम किया था ना वन मिनट। बापदादा तो कहते हैं वन सेकण्ड। वन सेकण्ड में दुआओं की लिफ्ट में चढ़ जाओ। सिर्फ स्मृति का स्वीच दबाओ बस, मेहनत मुक्त। तो बापदादा आज डबल विदेशियों का दिन है ना तो पहले डबल विदेशियों को किस स्वरूप में देखने चाहते हैं? मेहनत मुक्त, सफलता मूर्त, दुआओं के पात्र। बनेगे ना? क्योंकि डबल विदेशियों का बाप से प्यार अच्छा है, शक्ति चाहिए लेकिन प्यार अच्छा है। कमाल तो की है ना? देखो 90 देशों से अलग-अलग देश, अलग-अलग रसम-रिवाज लेकिन 5 ही खण्डों के एक चन्दन के वृक्ष बन गये हैं। एक वृक्ष में आ गये हैं। एक ही ब्राह्मण कल्चर हो गया, अभी है क्या इंगलिश है, कल्चर हमारा इंगलिश है, नहीं ना। ब्राह्मण है ना? जो समझते हैं अभी तो हमारा ब्राह्मण कल्चर है वह हाथ उठाओ। ब्राह्मण कल्चर और एडीशन नहीं। एक हो गये ना। इसकी मुबारक दे रहे हैं बापदादा कि सभी एक वृक्ष के बन गये। कितना अच्छा लगता है! किसी से भी पूछो, अमेरिका से पूछो, यूरोप से पूछो, आप कौन हो? तो क्या कहेंगे? ब्राह्मण है ना! कि नहीं, यू.के. के हैं, अफ्रीकन है, अमेरिकन हैं नहीं, सब एक ब्राह्मण हो गये। एक मत हो गये, एक स्वरूप के हो गये ब्राह्मण और एक मत श्रीमत। मज़ा आता है ना इसमें। मज़ा है? कि मुश्किल है? मुश्किल तो नहीं है ना! कांध हिला रहे हैं, अच्छा है।

बापदादा सेवा में नवीनता क्या चाहता है? जो भी सेवा कर रहे हो - बहुत-बहुत-बहुत अच्छी कर रहे हो, उसकी तो मुबारक है ही। लेकिन आगे एडीशन क्या करना है? आप लोगों के मन में है ना कोई नवीनता चाहिए। तो बापदादा ने देखा, जो भी प्रोग्राम किये हैं, समय भी दिया है, और मुहब्बत से ही किया है, मेहनत भी मुहब्बत से की है और अगर स्थूल धन भी लगाया है तो वह तो पदमगुणा होके आपके परमात्म बैंक में जमा हो गया है। वह लगाया क्या, जमा किया है। रिजल्ट में देखा गया कि सन्देश पहुंचाने का कार्य, परिचय देने का कार्य सभी ने बहुत अच्छा किया है। चाहे कहाँ भी किया, अभी दिल्ली में हो रहा है, लण्डन में हुआ और बापदादा को डबल फारेनर्स का कॉल ऑफ टाइम करते हैं, पीस ऑफ माइण्ड करते हैं, यह सब प्रोग्राम बहुत अच्छे लगते हो। जो भी और काम कर सको करते रहो, लेकिन सन्देश मिलता है, स्नेही भी बनते हैं, सहयोगी भी बनते हैं, सम्बन्ध में भी कोई-कोई आ जाते हैं लेकिन अभी एडीशन चाहिए - कि जब भी कोई बड़ा प्रोग्राम करते हो उसमें सन्देश तो मिलता है, अनुभव करके जायें कुछ, अनुभव बहुत जल्दी आगे बढ़ाता है। जैसे यह कॉल ऑफ टाइम में, या पीस ऑफ माइण्ड में थोड़ा-थोड़ा अनुभव ज्यादा करते हैं। लेकिन जो बड़े प्रोग्राम होते हैं उसमें सन्देश तो अच्छा मिल जाता है, लेकिन जो भी आवे उसके पीठ करके कुछ न कुछ अनुभव करे, क्योंकि अनुभव कभी भूलता नहीं है और अनुभव ऐसी चीज़ है जो न चाहते हुए भी उस तरफ खींचेंगे। तो पहले बापदादा कहते हैं जो सभी ब्राह्मण भी हैं, जो भी ज्ञान की प्वाइंटस हैं, उनका स्वयं अनुभवी बने हो? हर शक्ति का अनुभव किया है, हर गुण का अनुभव किया है? आत्मिक स्थिति का अनुभव किया है? परमात्म प्यार का अनुभव किया है? ज्ञान समझना इसमें तो पास हो, नॉलेजफुल तो बन गये हो, इसमें तो बापदादा भी रिमाक्स देते हैं, ठीक है। आत्मा क्या, परमात्मा क्या, ड्रामा क्या, ज्ञान तो समझ लिया है, लेकिन जब चाहे जितना समय चाहें, जिस भी परिस्थिति में हो, उस परिस्थिति में आत्मिक बल का अनुभव हो, परमात्म शक्ति का अनुभव हो, वह होता है? जिस समय, जितना समय, जैसे अनुभव करने चाहो वैसे होता है? कि कभी कैसे कभी कैसे? सोचो आत्मा हूँ, और फिर बार-बार देहभान आ जाए, तो क्या अनुभव काम में आया? अनुभवी मूर्त हर सब्जेक्ट के अनुभवी मूर्त, हर शक्तियों के अनुभवी मूर्त। तो स्वयं में भी अनुभव को और बढ़ाओ, है, ऐसे नहीं कि नहीं है, लेकिन कभी-कभी है, समटाइम। तो बापदादा समटाइम नहीं चाहते हैं, समर्थिग हो जाता है, तो समटाइम भी हो जाता है क्योंकि आप सबका लक्ष्य है, पूछते हैं क्या बनने का लक्ष्य है? तो कहते हो बाप समान। एक ही जवाब सभी देते हो। तो बाप समान, तो बाप समटाइम और समर्थिग नहीं था, ब्रह्मा बाप सदा राज्युक्त, योगयुक्त, हर शक्ति में सदा, कभी-कभी नहीं। अनुभव जो होता है, वह सदाकाल चलता है, वह सम टाइम नहीं होता

है। तो स्वयं अनुभवी मूर्त बन हर बात में, हर सबजेक्ट में अनुभवी, ज्ञान स्वरूप में अनुभवी, योगयुक्त में अनुभवी, धारणा स्वरूप में अनुभवी। आलराउण्ड सेवा मन्सा वाचा कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें अनुभवी, तब कहेंगे पास विद आनर। तो क्या बनने चाहते हो? पास होने चाहते हो या पास विद ऑनर बनने चाहते हो? पास करने वाले तो पीछे भी आयेंगे, आप तो टूलेट से पहले आ गये हो, चाहे अभी नये भी आये हैं लेकिन टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। लेट का लगा है, टूलेट का नहीं लगा है। इसीलिए चाहे कोई नये भी हैं लेकिन अभी भी तीव्र पुरुषार्थ करे, पुरुषार्थ नहीं तीव्र, तो आगे जा सकता है। क्योंकि नम्बर आउट नहीं हुआ है। सिर्फ दो नम्बर आउट हुए हैं, बाप और माँ। अभी कोई भी भाई बहन का तीसरा नम्बर आउट नहीं हुआ है। भले आप कहेंगे दादियों से बहुत प्यार है, बाप का भी दादियों से प्यार है, लेकिन नम्बर आउट नहीं हुआ है। इसीलिए आप बहुत-बहुत सिकीलधे, लाडले भाग्यवान हो, जितना उड़ने चाहो उड़ो क्योंकि देखो जो छोटे बच्चे होते हैं ना उसको बाप अपनी अंगुली देके चलाता है, एकस्ट्रा प्यार करता है, और बड़े को अंगुली से नहीं चलाता है, अपने पांव से चलता है। तो नया भी कोई मेकप कर सकता है। गोल्डन चांस है। लेकिन जल्दी में जल्दी टूलेट का बोर्ड लगाना है, इसलिए पहले ही कर लो। नये जो आये हैं पहली बारी, वह हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो। पहले बारी अपने घर मधुबन में पहुंच गये हो, इसलिए बापदादा और सारे परिवार चाहे देश वाले, चाहे विदेश वाले सबकी तरफ से पदम-पदमगुणा मुबारक हो।

अभी सुना - जितना हो सके योग्य आत्मायें देख करके अनुभवी मूर्त बनाओ। फिर आपको कहना नहीं पड़ेगा, आते रहो। आप कहेंगे नहीं आओ, तो भी आयेंगे। अनुभव ऐसी चीज़ है। स्वयं को भी अनुभव में बढ़ाओ, जितना-जितना अनुभव में और महादानी बनके सेवा में बिजी रहेंगे ना, तो यह जो टाइम वेस्ट होता है ना समस्याओं में, दादियों को भी समय देना पड़ता है और अपने को भी समय देना पड़ता है, वह समय बच जायेगा क्योंकि समय के महत्व को भी जानते हो, अचानक होना है। कई भाई बहिनें सोचते हैं थोड़ा सा इशारा मिल जाए ना, 10 साल हैं, 20 साल है, कितना है, लेकिन बापदादा ने कह दिया है, अचानक होना है। एवररेडी रहना है। फास्ट गति करो अभी - स्वयं की भी, औरों को भी योग्य बनाने की।

अच्छा है, फॉरेन की सेवा भी अच्छी वृद्धि को प्राप्त कर रही है। 90 देशों तक पहुंच गये हो, बाकी क्या रहा! 10 तो और बढ़ाओ, 100 तो हो जायें। (जयन्ती बहन ने सुनाया, 129 कन्ट्री तक पहुंच गये हैं, 100 में रजिस्ट्री भी हो चुकी है, बाकी में कुछ न कुछ बाबा का कार्य चल रहा है) अच्छा है, बापदादा ने अफ्रीका का भी समाचार सुना, वह भी थोड़े टाइम में अच्छी वृद्धि कर ली है। अच्छा है। बापदादा खुश होते हैं, कि मर्सीफुल आत्मायें हैं। आत्माओं के प्रति प्यार है, और देखो कहाँ-कहाँ से बच्चे पहुंचे हुए हैं चाहे और धर्म में भी चले गये हैं, कितने बिखर गये हैं। तो अपने परिवार को तो दूँढकर निकालना है ना। अच्छा कर रहे हैं सभी। अभी दिल्ली में भी बड़ा प्रोग्राम, है तो मेला कामन, लेकिन नये रूप से करने से लोगों को भी रूचि होती है। लण्डन का प्रोग्राम भी बहुत अच्छा किया, और इतने लोगों को परिचय भी मिला, अभी जो एड्रैसेज हैं उससे कान्टैक्ट करके, जहाँ से भी आये, जिस प्रोग्राम में भी कोई आते हैं तो एड्रेस और फोन जरूर लिखाओ, चाहे 8-10 जगह पर रखो, क्योंकि तभी उन्हीं को बुला करके, समय दे करके फिर उनको आगे बढ़ा सकेंगे। बाकी समय का बिगुल तो अचानक बजना है, उसके पहले अपने भाई बहिनों का कल्याण तो करना है ना। तरस आता है ना? अब छोटी-छोटी बातों में टाइम नहीं लगाओ। जैसे देखो मक्खी आती है, मच्छर आता है, ठहरने देते हो, फौरन उड़ा देते हो, कि बैठने देंगे। अच्छा मच्छर भले आओ। कोई भी समस्या क्या है? मच्छर और मक्खी तो है। फौरन भगाओ। उन्हीं का काम है आना, माया आने का काम नहीं छोड़ती है, लेकिन ब्राह्मण भगाने के काम में कभी कभी थोड़ी देरी लगा देते हैं। बाकी बापदादा ने सभी देशों का कुछ-कुछ परिवर्तन किया है, वह लिखत देखी, 5-6 खण्डों का देखा। लेकिन परिवर्तन किया और लिखा है, उसकी मुबारक तो है लेकिन इसको अविनाशी बनाना। ऐसे नहीं कि कोई छोटी सी बात आ गई, परिवर्तन बदल जाये, यह नहीं करना। अमरभव का वरदान लो। जो परिवर्तन किया है, बापदादा ने सुना, कोई कोई ने परिवर्तन अच्छा किया है लेकिन सदा शब्द को कभी नहीं भूलना क्योंकि माया भी सुन रही है तो यह प्रतिज्ञा कर रहे हैं, वह भी तो अपना अजमाइस करेगी ना, लेकिन आप तो मायाजीत हो ना, मायाजीत तब तो जगतजीत बनेंगे। तो माया को देख करके, माया का आना देख करके आप याद करो मेरा काम भगाना है। वह भी आपको सिखलाती है, कि मैं आना नहीं छोड़ूंगी, आप विजय पाना नहीं छोड़ो, तो क्या? अभी छोटे-छोटे मच्छर और मक्खी को आने नहीं देना। सम्पूर्ण स्थिति के आगे यह छोटी-छोटी चीज़ें क्या हैं!

अच्छा आप सबकी प्यारी-प्यारी मीठी दादी सम्मुख आ गई है। (वीडियो कान्फ्रेंसिंग से) बहुत मीठा मुस्करा रही है।

देखो सभी हाथ हिलाओ, देखेगी वहाँ दिखाई देगा। अच्छा है। देखो, दादी ने ब्रह्मा बाप से भी ज्यादा समय सेवा का पार्ट बजाया है। तो विशेष हीरो एक्टर है ना। देखो दादी आपको देख करके सभी बहुत-बहुत खुश हो रहे हैं। (दादी ने सभी डबल विदेशियों को खास याद देते दीवाली की मुबारक दी) देखो, यह भी प्रैक्टिकल दिवाली है ना, आप प्रैक्टिकल इतने जगे हुए दीपक चमक रहे हो तो दादी को दीवाली याद आ रही है। कितनी रिमझिम है, एक एक के मस्तक में आत्मा चमक रही है, तो यह दीपक कितने अच्छे हैं, अविनाशी दीपक हैं। (दादी ने कहा - सभी बाबा-बाबा कर रहे हैं, बाबा आपकी बहुत याद आ रही है) अभी जल्दी आ जायेगी। देखो, बीमारी कितनी भी हो लेकिन दर्द की फीलिंग नहीं हो तो वह बीमारी आराम देती है। हीरो एक्टर है ना, शान्ति की देवी है। अभी जल्दी आ जायेगी, मिलेगी आप सबसे। अच्छा,

लण्डन के प्रोग्राम का जस्ट ए मिनट ग्रुप:- बहुत अच्छा यह विशेषता अच्छी रही जो एक साथ और देशों ने भी भाग लिया या देखा भी, तो यह नवीनता अच्छी रही और इसको और भी रिफाइन कर एक ही समय पर अनेक तरफ एक ही सेवा का आवाज हो। तो यह अच्छा है। रिफाइन होता जायेगा और बढ़ता जायेगा तो सभी को पता पड़ेगा कि एक ही समय पर एक ही आवाज चारों ओर गूँज रहा है, तो सभी ने मेहनत बहुत अच्छी की और दिल से किया और विशेषता लण्डन की यह रही कि बड़ी दिल से बेफिक्र होकरके किया। इसकी मुबारक हो। कोई भी प्रोग्राम अगर बड़ी दिल से करते हैं तो अच्छा होता है। क्या होगा, कैसे होगा, यह कै कै नहीं आवे, होना ही है, करना ही है, सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो यह अच्छा रिजल्ट है। बड़ी दिल लण्डन की है ही। जनक बच्ची की बड़ी दिल नम्बरवन है क्यों, क्या नहीं सोचती। और हो ही जाता है। सभी ने देखा होगा तो कितना सहज हो गया। बापदादा ने सुना कि खर्चा तो हुआ लेकिन और ही बचत हुई। बच गया, और ही बढ़ गया, कम नहीं हुआ। तो यह किसकी कमाल है? बड़े दिल की। कभी भी कोई भी प्रोग्राम करो तो पहले बड़ी दिल करेंगे तो सफलता होगी। तो मुबारक है। बड़ी दिल की और बड़े प्रोग्राम की। बाकी रिफाइन तो होता रहेगा। एडीशन तो होती रहेगी। अभी पीठ करना, इतने जो आये, उनसे कम से कम कुछ तो सम्बन्ध सम्पर्क वाले स्टूडेंट तो बने ना, बनेंगे। (अमेरिका की मोहिनी बहन का बहुत अच्छा सहयोग रहा) सभी ने मिलके किया है ना। अच्छा है। बहुत अच्छा। संगठन की शक्ति कमाल करती ही है। तो संगठित होकरके किया, सफलता है, सफलता रहेगी। थकावट नहीं हुई ना। खुशी हो गई। जब देखा सभा में रौनक हो गई तो खुशी हो गई। अच्छा। मुबारक हो।

आई.टी. ग्रुप:- अच्छा है आप लोगों के कार्य से सभी तरफ जो समाचार मिलता है तो सभी की दिल खुश हो जाती है क्योंकि परिवार है ना, तो परिवार में समाचार मिलने से खुशी होती है। तो अच्छा किया है, चलता तो रहता था काम, लेकिन अभी संगठित रूप में मिल करके कायदे प्रमाण कर रहे हैं, बढ़ा रहे हैं, यह बहुत अच्छा बनाया भी है और बढ़ाया भी है। इसमें आपोजीशन तो होगी लेकिन आप अपनी पोजीशन में दृढ़ हैं तो आपोजीशन खत्म हो जायेगी। आपोजीशन हो तब तो आपको उमंग आवे, यह करें, यह करें.. तो आपोजीशन पोजीशन को बढ़ा लेती है और सफलता मिलती भी है और मिलती रहेगी। यह निश्चित है। कभी भी कुछ भी हो जाए घबराना नहीं, सफलता आपके साथ है। आपोजीशन के साथ नहीं है, पोजीशन वालों के साथ है। बहुत अच्छा कर रहे हैं, हर एक देश में सिस्टम अच्छी बनाई है। (आई.टी.ग्रुप की मुख्य मोहिनी बहन हैं) अच्छा है, कोई कायदे प्रमाण निमित्त बनता है ना तो जो भी कार्य होता है उसमें कायदे से फायदा होता है। अच्छा हिम्मत रखकर उठाया है, इसकी बहुत-बहुत मुबारक हो। हर एक देश से बापदादा के पास समाचार आते रहते हैं, कैसे आपस में मीटिंग करते हो, कैसे आगे का प्लैन बनाते हो वह बापदादा के पास पहुंचते हैं इसीलिए मुबारक हो, मुबारक हो।

आर.सी.ओ ग्रुप:- अच्छा यह प्लैनिंग बुद्धि वाली आत्मायें हैं। नये-नये प्लैन बनाते रहते हो। चारों ओर सेवा की वृद्धि और ब्राह्मण आत्माओं में भी वृद्धि कैसे हो, विधि क्या हो, यह आपस में मिलकर जो मीटिंग करते हो वह बहुत अच्छा है। बापदादा के पास सब समाचार तो उसी समय ही पहुंच जाते हैं, क्योंकि बाप स्वच आन करता है टी.वी. का तो उसमें सब दिखाई-सुनाई देता है, तो बापदादा को पसन्द है। आपस में मिलके प्लैन और प्रोग्राम बनाते हो और प्रैक्टिकल में लाने का अच्छा पुरुषार्थ करते हो। बढ़ते चलो, बढ़ना है और सफलता बच्चों के गले का हार है। अच्छा है। मुख्य सभी इक्टू हो जाते हैं तो प्लैन भी ऐसे ही बड़े अच्छे बनते हैं। सभी देश के मिल जाते हैं। अच्छा, बहुत अच्छा। बढ़ते रहो, उड़ते रहो।

सेवा के निमित्त और भी मुख्य बहिनें बाबा के सामने खड़ी हुई:- अच्छा यह भिन्न-भिन्न देश की हैं, आपस में मिलके भविष्य सेवा के प्लैन बनाते हैं, चारों ओर के वायुमण्डल को जानकर, वायुमण्डल को भी एक दो की राय से

पावरफुल बनाते हो क्योंकि वायुमण्डल का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है। तो सेवा के भी प्लैन वृद्धि के बनाते हो और फिर सेन्टर्स के भी वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के प्लैन जो आपस में राय सलाह करके बनाते हो, उससे देखा गया है कि समय प्रति समय वायुमण्डल अच्छा ही बनता जाता है। वृद्धि भी अच्छी है और विधि भी अच्छी है। और विधि की सिद्धि भी है। तो संगठन की शक्ति है ना! संगठन की शक्ति बहुत कमाल करती है, करना ही है। आपस का मिलना भी हो जाता है और सेवा की वृद्धि विधि भी हो जाती और एक दो के समीप भी आ जाते हैं। तो यह जो प्रोग्राम बनाया है, बापदादा को पसन्द है। और ड्रामानुसार आपको मधुबन का भी चांस मिल जाता है। यह संगठन बहुत करके मधुबन के वायुमण्डल में होता है। और भी संगठन की शक्ति को बढ़ाते जाओ। जब शक्ति सेना अपने को प्रत्यक्ष करेगी तब बाप प्रत्यक्ष होगा क्योंकि शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होना है। तो पहले शक्तियां या पाण्डव खुद अपने को सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे तब बाप प्रत्यक्ष होगा। हर एक के चेहरे में बाप ही दिखाई देगा। इतनी संगठन में शक्ति है। तो अच्छा लगा। आप सभी को भी अच्छा लग रहा है ना। संगठन की शक्ति को बढ़ाते चलो। बाप को प्रत्यक्ष करते चलो। मुबारक हो। अच्छा है, मैजारटी भारत की बहनें हैं। देखो, पहले भारत गया है विदेश को जगाने, अभी विदेश भारत में जगायेगा। मैजारटी भारत की है। तो विदेश भारत को कब जगायेगे? यह आई.टी. ग्रुप जगायेगा? अच्छा है, कनेक्शन अच्छा हो रहा है।

सर्व अफ्रीका ग्रुप:- देखो, अफ्रीका वालों को एक बात की बहुत-बहुत मुबारक है - जो वायदा किया वह पूरा निभाया है। संगठन की शक्ति से एक दो के सहयोगी अच्छे बने हैं और ऐसे देश जहाँ अपने परिवार के लोग पहुंच गये हैं, उन भाई बहनों को ढूँढकर निकालना, मेहनत भी की है, तो विधि भी अच्छी की है और समय पर सफलता प्राप्त कर ली है, उसकी बहुत-बहुत मुबारक हो। अच्छा किया है, मेहनत अच्छी की है। जो निमित्त बने हैं ना, वह भी आपस में संगठित रूप में अच्छे चले हैं और चल रहे हैं, यह भी है ना? (जयन्ती बहन को, आप भी उठो) अच्छा किया, एक दो का सहयोग अच्छा है। बापदादा को दिखाया था शक्तियां भी निमित्त हैं और पाण्डव भी निमित्त हैं। बहुत अच्छा रिकार्ड रखा है। बहुत अच्छा, सफलता की माला तो बापदादा पहना रहा है, वह माला तो क्या पहनायेंगे फिर उतार देंगे लेकिन सफलता की माला एक एक को बापदादा पहना रहा है। अच्छा। पदमगुणा मुबारक हो।

दिल्ली ओ.आर.सी. में एस.एम.एल की ट्रेनिंग करने, कराने वाला ग्रुप:- अच्छा है जितना अभ्यास करते हैं उतना पुण्य कमाते हैं, दूसरों को सेवा करके परिवर्तन कराना, यह सेवा का पुण्य जमा हो जाता है और यह पुण्य वर्तमान समय खुशी दिलाता है और भविष्य में भी जमा होता है। जितनों को करायेगे, किसलिए किया है? कराने के लिए ना! तो इतने सारे हैण्ड कराने के लिए तैयार हो गये। तो कितने पुण्य जमा होंगे! सेवा अर्थात् पुण्य जमा करना, कोई भी ग्रुप हो। जितने भी ग्रुप ने भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवायें की हैं, उन्हीं का पुण्य जमा हो गया और जमा करते रहना। इसीलिए सीखे हो ना! होशियार हो गये ना! औरों को भी करा सकेंगे ना? एक दो को आगे बढ़ाना, यह भी अच्छा किया, निमित्त बने ना? निमित्त बनने वाले का भी पुण्य जमा होता है। तो बापदादा खुश है, लेकिन जो सीखा है वह सिखाने में नम्बरवन आना। अपने तक नहीं रखना। काम में लगाना। समय दिया है और निमित्त का समय लिया है तो और आगे बढ़ाना। मुबारक हो, मुबारक हो।

बहुत अच्छा, जो ग्रुप में नहीं भी उठे हैं, उन्हीं को भी बहुत-बहुत मुबारक है। किसी न किसी सेवा में तो आपका भी ग्रुप है, इसीलिए इनएडवांस मुबारक हो।

अच्छा - अभी सेकण्ड में जिस स्थिति में बापदादा डायरेक्शन दे उसी स्थिति में सेकण्ड में पहुंच सकते हो! कि पुरुषार्थ में समय चला जायेगा? अभी प्रैक्टिस चाहिए सेकण्ड की क्योंकि आगे जो फाइनल समय आने वाला है, जिसमें पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट मिलना है, उसका अभ्यास अभी से करना है। सेकण्ड में जहाँ चाहे, जो स्थिति चाहिए उस स्थिति में स्थित हो जाएं। तो एवररेडी। रेडी हो गये।

अभी पहले एक सेकण्ड में पुरुषोत्तम संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण हूँ, इस स्थिति में स्थित हो जाओ... अभी मैं फरिश्ता रूप हूँ, डबल लाइट हूँ..., अभी विश्व कल्याणकारी बन मन्सा द्वारा चारों ओर शक्ति की किरणें देने का अनुभव करो। ऐसे सारे दिन में सेकण्ड में स्थित हो सकते हैं! इसका अनुभव करते रहो क्योंकि अचानक कुछ भी होना है। ज्यादा समय नहीं मिलेगा। हलचल में सेकण्ड में अचल बन सकें इसका अभ्यास स्वयं ही अपना समय निकाल बीच-बीच में करते रहो। इससे मन का कन्ट्रोल सहज हो जायेगा। कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर बढ़ती जायेगी। अच्छा -

चारों ओर के बच्चों के पत्र भी बहुत आये हैं, अनुभव भी बहुत आये हैं, तो बापदादा बच्चों को रिटर्न में बहुत-बहुत

दिल की दुआयें और दिल का याद प्यार पदम-पदमगुणा दे रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं - चारों ओर के बच्चे सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं। जो नहीं भी देख रहे हैं, वह भी याद में तो हैं। सबकी बुद्धि इस समय मधुबन में ही है। तो चारों ओर के हर एक बच्चे को नाम सहित यादप्यार स्वीकार हो।

सभी सदा उमंग-उत्साह के पंखों द्वारा ऊंची स्थिति में उड़ते रहने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा स्नेह में लवलीन रहने वाले समाये हुए बच्चों को, सदा मेहनत मुक्त, समस्या मुक्त, विघ्न मुक्त, योगयुक्त, राजयुक्त बच्चों को, सदा हर परिस्थिति में सेकण्ड में पास होने वाले, हर समय सर्व शक्ति स्वरूप रहने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

आप सबकी प्यारी दादी को भी बहुत-बहुत दुआयें और यादप्यार।

दादियों से:- यह मुक्त अवस्था भी बहुत काल की चाहिए। ग्रहचारी हो या विघ्न हो, कोई भी ऐसी चीज न रहे। स्वदर्शन चलाते रहें ना, तो परदर्शन, परचितन खत्म हो जाए। पहले डबल विदेशी करके दिखायें, करेंगे ना? निमित्त बनके दिखाना। मायामुक्त, माया को विदाई दे दो, बाप की बधाईयां मिलेगी। माया को सदा के लिए विदाई देना अर्थात् बाप की बधाईयां लेना। (दादी की तरफ से मोहिनी बहन ने भाकी पहनी) आप सबको पता है कि आप सबकी एक परदादी भी है, तो वह भी बहुत मीठा पार्ट बजाने वाली है। उसने भी बहुत-बहुत बाप के साथ आप सबको भी बहुत याद भेजी है और बापदादा उसकी हिम्मत पर बहुत खुश है। कोई भी डाक्टर आता है, तो डाक्टर को भी ज्ञान देने शुरू कर देती है। डाक्टर उसको समझते हैं पेशेन्ट और वह उसको ज्ञान देकरके पेशेन्स में रहना सिखाती है। तो वह भी बहुत अच्छा पार्ट बजा रही है और याद में रह करके आगे से आगे उड़ रही है। बेड में होते भी उड़ रही है। तो सबने याद दी, परदादी को तो बहुत बड़ी याद चाहिए ना। अच्छा। बहुत अच्छा। (दादी की तरफ से मोहनी बहन ने और दादी जानकी ने बापदादा को भाकी पहनी)

आप तो भाकी में हो, ऐसे औरों को भी लेना पड़ेगा। (मुन्नी बहन, ईशू दादी ने भी खास याद दी है) अच्छा - दादी के साथ सेवा के निमित्त बने हुए मुन्नी बच्ची, डाक्टर जी, और भी जो भाई बहिनें दिल से सेवा कर रहे हैं, अच्छी सेवा कर रहे हैं, इसीलिए दिल से सेवा करने वालों को बापदादा दिलाराम की दिल से दुआयें भी हैं, यादप्यार भी है। परदादी के भी सेवाधारियों को यादप्यार विशेष बापदादा दे रहे हैं। आप भी दे रहे हो ना? मुन्नी, ईशू, पारला की योगिनी और साथी भी सेवा अच्छी कर रहे हैं और हॉस्पिटल में जो ब्राह्मण आत्मायें सेवा कर रही हैं, उन सबको यादप्यार। (मुन्नी बहन कह रही हैं - 40 साल में बाबा पहली बार ऐसा हुआ है जो आप मधुबन में हो हम बम्बई में है) बापदादा आप सबको मधुबन में देख रहे हैं, कहाँ भी हो मधुबन में बाप के सामने हो। सामने हैं सिर्फ फरिश्ते रूप में हैं। (दादी बाबा को भाकी पहन रही है)

विदेश की बड़ी बहिनों से:- एक दो के विचार से, विचार लेकर संगठित रूप में सेवा में चल रहे हो इसकी मुबारक हो। बापदादा का जन्म से वरदान है। (सब टेन्शन मुक्त हैं) अगर इन्हों को टेन्शन होगा तो दूसरों का क्या हाल होगा! इन्हों के पीछे तो लाइन है ना। इन्हों को तो टेन्शन स्वप्न में भी नहीं क्योंकि लाइन बड़ी है। यह तो हैं लेकिन विश्व की भी लाइन है, वही लहर फैलेगी। हेल्थ भी अच्छी है, वेल्थ भी बहुत है, हैपी भी है। सब हेल्दी हैं, बापदादा को खुशी है कि भारत की बहनों ने विदेश सम्भाल लिया है। (बम्बई, दिल्ली की कमाल है) गुजरात भी है, गुजरात का नाम भी तो रखो ना। कारोबार भी अच्छी चल रही है।

(इस बार जनवरी मास स्पेशल होगा) इस बार जनवरी मास ऐसा मनाओ जो विघ्नमुक्त का सर्टीफिकेट हो। सभी को सर्टीफिकेट मिले। नवीनता करो। नवीनता होगी तो उड़ जायेंगे। अभी उड़ने का ही समय है क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है, हलचल का समय है। उसमें आप अचल। यही सबको वायब्रेशन आवे कि हम हलचल में हैं, यह अचल हैं। होना ही है। अच्छा है। बहुत-बहुत मुबारक।

दादी शान्तामणि, दादी मनोहर इन्द्रा, दादी रत्नमोहिनी:- त्रिमूर्ति मधुबन के निमित्त हो, मधुबन अर्थात् उसमें सब आ गया। तो निमित्त समझकर चलते चलो, उड़ते चलो। आदि रत्न तो हो ना। तो आदि रत्न में आदि देव के संस्कार आटोमेटिकली भरे हुए हैं, उसको प्रैक्टिकल में लाओ। सभी आप लोगों को देखके कितने खुश हो जाते हैं। तो खुशी दे रहे हो, खुशी देते रहेगे। बहुत अच्छा। (दादी शान्तामणि) शान्तामणि दादी तो पांच चिड़ियाओं में भी है, जो निमित्त बनी, उसमें भी है।

अपने स्वमान की शान में रहो और समय के महत्व की जान एवररेडी बनो

आज बापदादा चारों ओर के अपने परमात्म प्यार के पात्र स्वमान की सीट पर सेट बच्चों को देख रहे हैं। सीट पर सेट तो सब बच्चे हैं लेकिन कई बच्चे एकाग्र स्थिति में सेट हैं और कोई बच्चे संकल्प में थोड़ा-थोड़ा अपसेट हैं। बापदादा वर्तमान समय के प्रमाण हर बच्चे को एकाग्रता के रूप में स्वमानधारी स्वरूप में सदा देखने चाहते हैं। सभी बच्चे भी एकाग्रता की स्थिति में स्थित होना चाहते हैं। अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वमान जानते भी हैं, सोचते भी हैं लेकिन एकाग्रता हलचल में ले आती है। सदा एकरस स्थिति कम रहती है। अनुभव होता है और यह स्थिति चाहते भी हैं लेकिन कब-कब क्यों होती है, कारण! सदा अटेंशन की कमी। अगर स्वमान की लिस्ट निकालो तो कितनी बड़ी है। सबसे पहला स्वमान है - जिस बाप को याद करते रहे, उनके डायरेक्ट बच्चे बने हो, नम्बरवन सन्तान हो। बापदादा ने आप कोटों में से कोई बच्चों को कहाँ-कहाँ से चुनकर अपना बना लिया। 5 ही खण्डों से डायरेक्ट बाप ने अपने बच्चों को अपना बना लिया। कितना बड़ा स्वमान है। सृष्टि रचता की पहली रचना आप हो। जानते हो ना इस स्वमान को! बापदादा ने अपने साथ-साथ आप बच्चों को सारे विश्व की आत्माओं के पूर्वज बनाया है। विश्व के पूर्वज हो, पूज्य हो। बापदादा ने हर बच्चे को विश्व के आधारमूर्त, उदाहरणमूर्त बनाया है। नशा है? थोड़ा-थोड़ा कभी कम हो जाता है। सोचो, सबसे अमूल्य जो सारे कल्प में ऐसा अमूल्य तख्त किसको नहीं प्राप्त होता। वह परमात्म तख्त, लाइट का ताज, स्मृति का तिलक दिया। स्मृति आ रही है ना - मैं कौन! मेरा स्वमान क्या! नशा चढ़ रहा है ना! कितना भी सारे कल्प में सतयुगी अमूल्य तख्त है लेकिन परमात्म दिलतख्त आप बच्चों को ही प्राप्त होता है।

बापदादा सदा लास्ट नम्बर बच्चे को भी फरिश्ता सो देवता स्वरूप में देखते हैं। अभी-अभी ब्राह्मण हैं, ब्राह्मण से फरिश्ता, फरिश्ता से देवता बनना ही है। जानते हो अपने स्वमान को? क्योंकि बापदादा जानते हैं कि स्वमान को भूलने के कारण ही देहभान, देह अभिमान आता है। परेशान भी होते हैं, जब बापदादा देखते हैं देह-अभिमान वा देहभान आता है तो कितने परेशान होते हैं। सभी अनुभवी हैं ना! स्वमान की शान में रहना और इस शान से परे परेशान रहना, दोनों को जानते हो। बापदादा देखते हैं कि सभी बच्चे मैजॉरिटी नॉलेजफुल तो अच्छे बने हैं, लेकिन पावर में फुल, पावरफुल नहीं हैं। परसेन्टेज में हैं।

बापदादा ने हर एक बच्चे को अपने सर्व खजानों के बालक सो मालिक बनाया, सभी को सर्व खजाने दिये हैं, कम ज्यादा नहीं दिये हैं क्योंकि अनगिनत खजाना है, बेहद खजाना है। इसलिए हर बच्चे को बेहद का बालक सो मालिक बनाया है। तो अभी अपने आपको चेक करो - बेहद का बाप, हद का बाप नहीं है, बेहद का बाप है, बेहद खजाना है। तो आपके पास भी बेहद है? सदा है कि कभी-कभी कुछ चोरी हो जाता है? गुम हो जाता है? बाबा क्यों अटेंशन दिला रहे हैं? परेशान न हो, स्वमान की सीट पर सेट रहो, अपसेट नहीं। 63 जन्म तो अपसेट का अनुभव कर लिया ना! अभी और करने चाहते हो? थक नहीं गये हो? अभी स्वमान में रहना अर्थात् अपने ऊंचे ते ऊंचे शान में रहना। क्यों? कितना समय बीत गया। 70 साल मना रहे हो ना! तो स्वयं की पहचान अर्थात् स्वमान की पहचान, स्वमान में स्थित रहना। समय अनुसार अभी सदा शब्द को प्रैक्टिकल लाइफ में लाना, शब्द को अण्डरलाइन नहीं करना लेकिन प्रैक्टिकल लाइफ में अण्डरलाइन करो। रहना है, रहेंगे, कर तो रहे हैं.. कर लेंगे। यह बेहद के बालक और मालिक का बोल नहीं है। अभी तो हर एक के दिल से यह अनहद शब्द निकले, पाना था वह पा लिया। पा रहे हैं, यह बेहद खजाने के बेहद बाप के बच्चे नहीं बोल सकते। पा लिया, जब बापदादा को पा लिया,

मेरा बाबा कह दिया, मान लिया, जान भी लिया, मान भी लिया, तो यह अनहद शब्द पा लिया... क्योंकि बापदादा जानते हैं कि बच्चे स्वमान कभी-कभी होने के कारण समय के महत्व को भी स्मृति में कम रखते हैं। एक स्वयं का स्वमान, दूसरा है समय का महत्व। आप साधारण नहीं हो, पूर्वज हो, आप एक-एक के पीछे विश्व की आत्माओं का आधार है। सोचो, अगर आप हलचल में आयेंगे तो विश्व की आत्माओं का क्या हाल होगा! ऐसे नहीं समझो कि जो महारथी कहलाये जाते हैं, उनके पीछे विश्व का आधार है, अगर नये-नये भी हैं, क्योंकि आज नये भी बहुत आये होंगे। नये हैं, जिसने दिल से माना "मेरा बाबा"। मान लिया है? जो नये नये आये हैं वह मानते हैं? जानते हैं नहीं, मानते हैं "मेरा बाबा" वह हाथ उठाओ। लम्बा उठाओ। नये नये हाथ उठा रहे हैं। पुराने तो पक्के ही हैं ना, जिसने दिल से माना मेरा बाबा और बाप ने भी माना मेरा बच्चा, वह सभी जिम्मेवार हैं। क्यों? जब से आप कहते हो मैं ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी हूँ, ब्रह्माकुमार और कुमारी हो वा शिवकुमार शिवकुमारी हो, या दोनों के हो? फिर तो बंध गये। जिम्मेवारी का ताज पड़ गया। पड़ गया है ना? पाण्डव बताओ जिम्मेवारी का ताज पड़ा है? भारी तो नहीं लग रहा है? हल्का है ना! है ही लाइट का। तो लाइट कितनी हल्की होती है। तो समय का भी महत्व अटेन्शन में रखो। समय पूछ के नहीं आना है। कई बच्चे अभी भी कहते हैं, सोचते हैं, कि थोड़ा सा अन्दाज मालूम होना चाहिए। चलो 20 साल हैं, 10 साल हैं, थोड़ा मालूम हो। लेकिन बापदादा कहते हैं समय का फाइनल विनाश का छोड़ो, आपको अपने शरीर के विनाश का पता है? कोई है जिसको पता है कि मैं फलाने तारीख में शरीर छोड़ूंगा, है पता? और आजकल तो ब्राह्मणों के जाने का भोग बहुत लगाते हो। कोई भरोसा नहीं। इसलिए समय का महत्व जानो। यह छोटा सा युग है आयु में छोटा, लेकिन बड़े ते बड़ी प्राप्ति का युग है क्योंकि बड़े ते बड़ा बाप इस छोटे से युग में ही आता है और बड़े युगों में नहीं आता। यही छोटा सा युग है जिसमें सारे कल्प की प्राप्ति का बीज डालने का समय है। चाहे विश्व का राज्य प्राप्त करो, चाहे पूज्य बनो, सारे कल्प के बीज डालने का समय यह है और डबल फल प्राप्त करने का समय है। भक्ति का फल भी अभी मिलता और प्रत्यक्षफल भी अभी मिलता है। अभी-अभी किया, प्रत्यक्ष फल मिलता है और भविष्य भी बनता है। ऐसा सारे कल्प में देखो, है कोई युग ऐसा? क्योंकि इस समय ही बाप ने हर बच्चे की हथेली पर बड़े ते बड़ी सौगात दी है, याद है सौगात अपनी? स्वर्ग का राज-भाग। नई दुनिया के स्वर्ग की गिफ्ट, हर बच्चे की हथेली में दी है। इतनी बड़ी गिफ्ट कोई नहीं देता और कभी नहीं दे सकता। अभी मिलती है। अभी आप मास्टर सर्वशक्तिवान बनते हो और कोई युग में मास्टर सर्वशक्तिवान का मर्तबा नहीं मिलता है। तो स्वयं के स्वमान में भी एकाग्र रहो और समय के महत्व को भी जानो। स्वयं और समय, स्वयं को स्वमान है, समय का महत्व है। अलबेला नहीं बनना। 70 साल बीत चुके हैं, अभी अगर अलबेले बनें तो बहुत कुछ अपनी प्राप्ति कम कर देंगे। क्योंकि जितना आगे बढ़ते हैं ना उतना एक अलबेलापन, बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे चल जायेंगे, पहुंच जायेंगे, देखना पीछे नहीं रहेंगे, हो जायेगा, यह अलबेलापन और रॉयल आलस्य। अलबेलापन और आलस्य। कब शब्द है आलस्य, अब शब्द है तुरत दान महापुण्य।

तो अभी आज पहला टर्न है ना! तो बापदादा अटेन्शन खिचवा रहा है। इस सीजन में न स्वमान से उतरना है, न समय के महत्व को भूलना है। अलर्ट, होशियार, खबरदार। प्यारे हैं ना! जिससे प्यार होता है ना उसकी जरा भी कमजोरी-कमी देखी नहीं जाती है। सुनाया ना कि बापदादा का लास्ट बच्चा भी है तो उससे भी अति प्यार है। बच्चा तो है ना। तो अभी इस चलती हुई सीजन में, सीजन भले इन्डिया वालों की है लेकिन डबल विदेशी भी कम नहीं हैं, बापदादा ने देखा है, कोई भी टर्न ऐसा नहीं होता जिसमें डबल विदेशी नहीं हो। यह उन्हों की कमाल है। अभी हाथ उठाओ डबल विदेशी। देखो कितने हैं! स्पेशल सीजन बीत गई, फिर भी देखो कितने हैं! मुबारक है। भले पधारे, बहुत-बहुत मुबारक है।

तो सुना अभी क्या करना है? इस सीजन में क्या-क्या करना है, वह होम वर्क दे दिया। स्वयं को रियलाइज करो, स्वयं को ही करो, दूसरे को नहीं और रीयल गोल्ड बनो क्योंकि बापदादा समझते हैं जिसने मेरा बाबा कहा,

वह साथ में चले। बराती होके नहीं चले। बापदादा के साथ श्रीमत का हाथ पकड़ साथ चले और फिर ब्रह्मा बाप के साथ पहले राज्य में आवे। मजा तो पहले नये घर में होता है ना। एक मास के बाद भी कहते, एक मास पुराना है। नया घर, नई दुनिया, नई चाल, नया रसम रिवाज और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आये। सभी कहते हैं ना, ब्रह्मा बाप से हमारा बहुत प्यार है। तो प्यार की निशानी क्या होती है? साथ रहे, साथ चले, साथ आये। यह है प्यार का सबूत। पसन्द है? साथ रहना, साथ चलना, साथ आना, पसन्द है? है पसन्द? तो जो चीज पसन्द होती है उसको छोड़ा थोड़ेही जाता है! तो बाप की हर बच्चे के साथ प्रीत की रीत यही है कि साथ चलें, पीछे-पीछे नहीं। अगर कुछ रह जायेगा तो धर्मराज की सजा के लिए रूकना पड़ेगा। हाथ में हाथ नहीं होगा, पीछे-पीछे आयेंगे। मजा किसमें है? साथ में है ना! तो पक्का वायदा है ना? पक्का वायदा है साथ चलना है या पीछे-पीछे आना है? देखो हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। हाथ देख करके बापदादा खुश तो होते हैं लेकिन श्रीमत का हाथ उठाना। शिवबाबा को तो हाथ होगा नहीं, ब्रह्मा बाबा, आत्मा को भी हाथ नहीं होगा, आपको भी यह स्थूल हाथ नहीं होगा, श्रीमत का हाथ पकड़कर साथ चलना। चलेंगे ना! कांध तो हिलाओ। अच्छा हाथ हिला रहे हैं। बापदादा यही चाहते हैं एक भी बच्चा पीछे नहीं रहे, सब साथ-साथ चलें। एवररेडी रहना पड़ेगा। अच्छा।

अब बापदादा चारों ओर के बच्चों का रजिस्टर देखता रहेगा। वायदा किया, निभाया अर्थात् फायदा उठाया। सिर्फ वायदा नहीं करना, फायदा उठाना। अच्छा। अभी सभी दृढ़ संकल्प करेंगे! दृढ़ संकल्प की स्थिति में स्थित होकर बैठो, करना ही है, चलना ही है। साथ चलना है। अभी यह दृढ़ संकल्प अपने से करो, इस स्थिति में बैठ जाओ। गे गे नहीं करना। करना ही है। अच्छा। अभी क्या करना है!

सेवा का टर्न का राजस्थान का है, इन्दौर, गुजरात सहयोगी है:- अच्छा जो भी सेवा के लिए आये हैं, सब उठो। अच्छा है, आधा क्लास तो सहयोगी है। सहयोग देना, देना नहीं है बहुत-बहुत दुआयें लेना है क्योंकि जिसकी भी सेवा करते हैं, वह खुश होते हैं। तो जो खुश होते हैं, उनकी दुआयें ऑटोमेटिकली निकलती हैं, तो कितनी दुआयें जमा की! राजस्थान है ना। निमित्त राजस्थान है तो यह गोल्डन चांस मिलता है, पुण्य का खाता जमा करने का। अच्छा है, राजस्थान को तो सहज नशा है कि बापदादा राजस्थान में ही आया है। बापदादा को राजस्थान अच्छा लगा ना। अच्छा है साथ देने वाले गुजरात तो है ही साथी, जब भी कुछ होता है तो पहले गुजरात ही मददगार बनता है। तो गुजरात को टाइटल है एवररेडी ग्रुप। अच्छा है। कभी ना नहीं करते हैं, पहुंच ही जाते हैं। कहाँ है सरला? अच्छा गुजरात को साथी बनाया है। राजस्थान के नजदीक गुजरात ही है, इसलिए ज्यादा पुण्य जमा होता है। अभी टर्न निमित्त राजस्थान है। तो अगली सीजन बीती, अभी दूसरी सीजन शुरू हुई है, 6 मास बीच में पड़ता है तो उसमें राजस्थान ने कितने वारिस तैयार किये हैं? नाम ही है राजस्थान, बाप भी राजस्थान में आया है, तो बोलो कितने वारिस तैयार किये हैं? क्योंकि बापदादा ने कहा था कि वारिस निकालने हैं, तो पहला टर्न आपका आया है, निकले हैं, हाथ उठाओ। दो निकला हो एक निकला हो या निकलने की उम्मीद हो तो हाथ उठाओ। कितने एक या 5, कितने? (जयपुर से 3-4 निकले हैं, पुरुषार्थ जारी है, जोधपुर से 2 निकले हैं) 5 तो हो गये ना। और कितने हैं! देखेंगे 5 कौन से निकले हैं, तैयार किया उसकी मुबारक है। अभी कभी बुलायेंगे उन वारिसों को। अच्छा है, जो ज़ोन सेवा में आये, अभी तो पहला टर्न है ना, तो जो ज़ोन सेवा में आये उनको वारिसों की लिस्ट जरूर लानी है। ठीक है ना, आपको पसन्द है ना। डबल फारेन भी लेकर आना। डबल फारेनर्स ने किस देश में कितने वारिस निकाले, देखेंगे क्योंकि अभी 108 की माला तो तैयार करनी है ना। बापदादा ने सुना है आबू वाले भी सेवा करते हैं। आबू के आस पास भी आबू वाले बहुत सेवा करते हैं, आबू वाले उठो। ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन सभी उठो। अच्छा। आबू निवासी नीचे ऊपर एक ही आबू है। तो आबू निवासी कहते हैं कि बापदादा हमको यादप्यार नहीं देते हैं। तो आज विशेष आबू निवासियों को चाहे चार भुजायें हैं विशेष, दादी को कहते हैं बहुत भुजाधारी है, तो 4 मुख्य भुजायें हैं तो सभी को बापदादा सेवा के पुण्य के आरम्भ की दुआयें और मुबारक दे रहे

हैं क्योंकि चाहे सेवाधारी कितने भी आये लेकिन फिर भी आबू निवासियों के बिना तो काम नहीं चलता। इसीलिए आपके पुण्य के खाते की भण्डारी खुल गई है। अभी देखेंगे कितनी-कितनी भरते हैं। गवर्मेन्ट वह भण्डारी बंद कराती है ना तो बापदादा पुण्य की भण्डारी खोल रहे हैं। आबू निवासियों को नशा है ना, खुशी है ना, घर बैठे पुण्य जमा होता रहता है, प्यार और निःस्वार्थ से सेवा करते तो पुण्य की भण्डारी भरती जाती, ऑटोमेटिक। हाथ से डालने की जरूरत नहीं है सिर्फ प्यार से सेवा करने की बात है। तो दिल और चुल पर तो हो ही। चुल पर भी हो दिल पर भी हो, अभी आबू वालों ने कितने वारिस निकाले, हिसाब तो पूछेंगे ना! ऊपर का निमित्त कौन है? पाण्डव भवन का। कौन है निमित्त! मृत्युंजय, हाँ आप बताओ, आबू की एरिया से कितने वारिस निकले? निकले हैं कि हिसाब करना है! अभी हिसाब देखना है कितने निकले, चलो दूसरे टर्न में सुनाना और नीचे कौन है! (भूपाल भाई) हाँ कितने वारिस निकले, 6 मास तो पक्का हो गया। और इसमें सभी ने सेवा कहाँ न कहाँ की है, अभी हिसाब नहीं निकाला है चलो कोई हर्जा नहीं, बहुत बिजी रहे होंगे, दूसरे टर्न में पूछेंगे। नहीं निकाले हो तो निकालना। क्योंकि आबू तो हेड क्वार्टर है ना, तो हेड क्वार्टर का समाचार भी हेड हो। अच्छा है।

इन्दौर होस्टल की कुमारियां:- सभी कुमारियां 100 ब्राह्मण से उत्तम गाई जाती हैं। साधारण कुमारियां नहीं, ब्रह्माकुमारियां। तो हर एक ब्रह्माकुमारी 100 ब्राह्मण से उत्तम गाई जाती है तो आप कुमारियों ने कितने स्टूडेंट तैयार किये हैं! वारिस नहीं पूछ रहे हैं, वारिस पीछे पूछेंगे, स्टूडेंट कितने तैयार किये हैं या अपने को ही तैयार कर रहे हैं? बोलो, आपकी टीचर कहाँ है! (हॉस्टल की टीचर, करूणा बहन, शकुन्तला बहन) आगे आओ। अच्छा कितने स्टूडेंट तैयार हुए हैं। (कई कुमारियां, ब्रह्माकुमारियां बनी हैं, उनके माता पिता भी ज्ञान में आ जाते हैं) कितने स्टूडेंट बने हैं, एवरेज बताओ। अच्छा है, कुमारियां तैयार होके सेन्टर सम्भालेगी ना, कि नौकरी करेंगी? जो सेन्टर सम्भालने के लिए तैयार हो रही हैं, वह हाथ उठाओ। यह बहुत हैं। तो इन्हों की ट्रेनिंग कब पूरी होगी! (अभी पढ़ाई चल रही है) कब तक पढ़ेंगी? जिसका ग्रेजुएशन पूरा हुआ है वह हाथ उठाओ। 3-4 हैं, यह 3-4 ही सेन्टर सम्भालेगी या नौकरी करेंगी या दोनों करेंगी! (ओम प्रकाश भाई ने सुनाया - अभी तक लगभग 450 कुमारियां ऐसी हैं, जो पढ़कर सेन्टर सम्भाल रही है) फिर तो अच्छा है। अच्छा है, हैण्डस तो बनते हैं, तो टीचर्स को मुबारक हो। आप जो भी आई हो, वह पुरुषार्थ में सन्तुष्ट हो? अपने पुरुषार्थ में सन्तुष्ट हो, पढ़ाई में सन्तुष्ट हो? हाँ या अभी नई नई हैं! खुश रहती हैं, सन्तुष्ट रहती हैं? अच्छा हैण्डस तैयार करो क्योंकि समय कम है, सेवा बहुत है। सेवा बहुत-बहुत रही हुई है। आपका गीत भी है, समय की पुकार का प्रोग्राम भी करते हो ना, तो समय की पुकार टीचर्स की बहुत है। इसलिए जल्दी-जल्दी तैयार करो। अच्छा - खुश रहना और खुशी से उड़ती रहना।

30 देशों से लगभग 300 डबल विदेशी भाई बहिनें आये हुए हैं:- तो डबल विदेशियों का डबल पुरुषार्थ चलता है, एक है सेवा का, दूसरा है स्वयं का। तो टाइटल तो डबल विदेशी अच्छा है, डबल सेवा चल रही है सबकी, इन्डिविज्युअल। डबल सेवा। किस समय एक चलती, किस समय दूसरी चलती या साथ-साथ चलती है! जो समझते हैं कि दोनों ही सेवा स्वयं की और साथ की जो भी आत्मायें हैं उनकी सेवा साथ-साथ चलती है वह हाथ उठाओ। मैजारिटी पास हैं। ठीक रफ्तार से चलती है और आगे बढ़ाओ क्योंकि अभी समय के अनुसार एक ही समय डबल सेवा चाहिए। विश्व की भी और स्वयं की भी। सारे वर्ल्ड में सुख शान्ति की किरणें देना है। तो आप सोचो अभी कितनी आत्मायें रही हुई हैं। चाहे विदेश में चाहे देश में, तो वह सेवा करनी है ना। हर रोज़ यह चेक करो - कि डबल सेवा हुई? कितनी परसेन्ट में हुई? पावरफुल हुई या परसेन्टेज में हुई? वैसे सभी के लिए यह कह रहे हैं, सिर्फ डबल विदेशियों के लिए नहीं है, भारतवासियों को भी करनी है। अभी थोड़ी फास्ट गति करो, फास्ट गति से आत्मायें निकलें, कम से कम इतना तो कहें कि हमारा बाबा आ गया। बाबा शब्द तो बोले दिल से। मुख से नहीं, दिल से। तो यह अभी चार्ट रखना। क्योंकि डबल विदेशी तो डबल रफ्तार में जाने वाले है ना? बापदादा खुश होते हैं क्यों? बापदादा को एक विशेषता डबल विदेशियों की बहुत प्यारी लगती है। जानते हो ना वह! सच बोलते

हैं। चाहे गिरते भी हैं तो भी सच बोलते हैं, चढ़ते हैं तो भी सच बोलते हैं। तो सच्ची दिल पर साहेब राजी होता है। अब ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो एक दो को देखकर सभी जैसे रेस करते हैं ना, रीस नहीं रेस करते हैं तो कोशिश करते हैं नम्बर आगे जायें। लेकिन आप खुद तो आगे जाओ लेकिन साथियों को भी ऐसी लिफ्ट दो जो वह भी आगे जायें। ठीक है ना? ऐसी हिम्मत है ना? हर एक सेन्टर का वायुमण्डल ऐसा हो जैसे मधुबन का वायुमण्डल। मधुबन वाले सम्पूर्ण नहीं बन गये हैं लेकिन जो भी आते हैं वह मधुबन के वायुमण्डल से खुश हो जाते हैं, ऐसा सेन्टर का वायुमण्डल हो। जो गाया हुआ है ना, घर घर स्वर्ग बनेगा। तो सब सेन्टर इन्डिया वालों के लिए भी है, तो सब सेन्टर ऐसे हों जो स्वर्ग का नक्शा हो। तब तो कहेंगे घर-घर स्वर्ग बन गया। अच्छा है, फारेनर्स की यह भी विशेषता है अगर दृढ़ संकल्प किया किसी भी बात का, तो वह करके दिखाते हैं। अभी इस संस्कार को इस कार्य में लगाओ, करके ही छोड़ना है। ठीक है। करना है ना? तो अगली सीजन में यह रिजल्ट पूछेंगे। हर एक सेन्टर स्वर्ग का नक्शा हो। अच्छा। मुबारक हो।

स्पीचुअल्टी इन रिसर्च डायलाग करने के लिए प्लैनिंग ग्रुप (रमेश भाई ने बापदादा को सुनाया कि हर वर्ग में जो कोई न कोई विशेष किसी विषय पर रिसर्च कर रहे हैं, उन मुख्य लोगों का एक डायलाग करने का विचार है, उसकी मीटिंग चल रही है) अच्छा कोई प्रोग्राम बनाया। अच्छा - हर एक विंग अपनी सेवा करके उसमें से निकालेंगे, फिर उसका डायलाग रखेंगे, तो हर एक विंग का बापदादा भी देखेंगे, किस विंग ने क्या निकाला, कौन सी, कौन सी आत्मायें रूचि वाली निकाली, अच्छा है फिर सब मिलकर डायलाग करेंगे, बहुत अच्छा। (सभी विंग्स और सभी ज़ोन के कनेक्शन से सबके सहयोग से यहाँ डायलाग का कार्यक्रम होगा) पहले हर एक विंग अपने अपने जोन में करेंगे, फिर उसमें जो निकले उन्हें यहाँ इकट्ठे करो, फिर यहाँ डायलाग करो। ठीक है ना। साथ-साथ समाचार देते रहे, सहयोग देते रहें। करो हर एक वर्ग, देखें किसमें कितने निकलते हैं। बहुत अच्छा।

दिल्ली का प्रोग्राम बहुत अच्छा रहा:- जो दिल्ली से आये हैं वह उठो। अच्छा इतने आये हैं, भले आये। दिल्ली का मेला तो अच्छा हुआ, आवाज फैला। आवाज फैला ना! क्योंकि टी.वी. द्वारा भी सन्देश मिला। यह तो अच्छा हुआ क्योंकि 10 दिन करने से लोगों को सन्देश मिल गया। एक दिन में तो जितने आते हैं उतने ही सुनते हैं सन्देश। लेकिन 10 दिन में वैरायटी आई होगी और अपना अपना सन्देश लिया होगा। तो अच्छा लगा। आप सबको अच्छा लगा? मेला करना अच्छा लगा? (बहुत अच्छा लगा, बाबा को स्पेशल थैंक्स दिल्ली वालों की तरफ से) बापदादा ने देखा कि चारों ओर और ज़ोन वालों में भी उमंग है कि ऐसा हम भी करें, तो दिल्ली निमित्त बन गई, औरों को भी प्रेरणा देने के लिए। अच्छा हुआ बहुत समय के बाद मेला शुरू किया है। पहले तो मेला ही था ना। चारों ओर मेले होते थे, अभी बड़े प्रोग्राम हो गये हैं, तो मेला भी वैरायटी अच्छा है। तो मुबारक हो सभी दिल्ली वालों को। और दिल्ली वालों ने ही किया इसकी भी मुबारक। (इन्टरनेशनल था, आबू का भी था) फारेन वालों को भी मुबारक, आबू वालों को भी मुबारक है। अच्छा रहा, बापदादा को समाचार मिला। एक दो को देख करके आगे बढ़ते चलो। बापदादा यही देखने चाहते हैं कि इतनी करोड़ आत्माओं को कम से कम यह सन्देश तो मिले। अभी काफी रहे हुए हैं, जैसे अफ्रीका ने किया, बापदादा ने सुना कि यूरोप में भी कोई देश नहीं रहा है ना। यूरोप और अफ्रीका दोनों तरफ कोई विशेष देश नहीं रहे हैं, ऐसे सब तरफ होना चाहिए। सन्देश तो पहुंचे ना। नहीं तो उल्हनें बहुत मिलेंगे आपको। सब उल्हना देंगे हमारा बाप आया और आपने हमको सुनाया भी नहीं। उल्हना नहीं रह जाए। अच्छा।

हैदराबाद, सिकन्द्राबाद से ओल्डएज होम का ग्रुप आया है:- (फरिश्ता भवन, ओमनिवास बूढ़ा घर बनाया है। उसमें अनेक वी.आई.पीज देखने के लिए आते हैं, सभी मिलकर बहुत अच्छा पुरुषार्थ करते हैं) भिन्न भिन्न सेवाओं से आगे बढ़ रहे हैं, बढ़ते रहो। अच्छा।

सब तरफ के डबल सेवाधारी बच्चों को, चारों ओर के सदा एकाग्र स्वमान की सीट पर सेट रहने वाले बापदादा के मस्तक मणियां, चारों ओर के समय के महत्व को जान तीव्र पुरुषार्थ का सबूत देने वाले सपूत बच्चों को, चारों ओर के उमंग-उत्साह के पंखों से सदा उड़ते, उड़ाने वाले डबल लाइट फरिश्ते बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- सभी साथ देते चल रहे हैं - यह बापदादा को खुशी है, हर एक अपनी विशेषता की अंगुली दे रहे हैं। (दादी जी से) सभी को आदि रत्न देख करके खुशी होती है ना। आदि से लेके सेवा में अपनी हड्डियां लगाई है। हड्डी सेवा की है। बहुत अच्छा है। देखो कुछ भी होता है लेकिन एक बात देखो, चाहे बेड पर हैं, चाहे कहाँ भी हैं लेकिन बाप को नहीं भूले हैं। बाप दिल में समाया हुआ है। ऐसे है ना। देखो कितना अच्छा मुस्करा रही है। बाकी आयु बड़ी है, और धर्मराजपुरी से टाटा करके जाना है, सजा नहीं खानी है, धर्मराज को भी सिर झुकाना पड़ेगा। स्वागत करनी पड़ेगी ना। टाटा करना पड़ेगा, इसीलिए यहाँ थोड़ा बहुत बाप की याद में हिसाब पूरा कर रहे हैं। बाकी कष्ट नहीं है, बीमारी भले है लेकिन दुःख की मात्रा नहीं है। (परदादी से) यह बहुत मुस्करा रही है। सबको दृष्टि दो। अच्छा। (दादी ने बाबा को भाकी पहनी) बहुत अच्छा। (मुन्नी बहन ने कहा बाबा हमने एक बार मिस किया) मिस नहीं किया, बापदादा ने तो देखा।

योगिनी बहन से:- सेवा अच्छी लगी ना, महारथी से महारथी उनकी सेवा में मजा है। रौनक लगी ना। चाहे हॉस्पिटल हो, चाहे क्या भी हो लेकिन रौनक लग गई ना। (मेहमान-निवाजी अच्छी की) मेहमान-निवाजी नहीं की, अपना पुण्य जमा किया। जिन्होंने भी सेवा की, उन्होंने अपना पुण्य का खाता जमा किया। (आपकी गाइडेन्स में सब अच्छा हुआ) सबकी सेवा की दृढ़ता ने काम किया। अशोक मेहता को बहुत-बहुत याद। जो भी डाक्टर्स निमित्त बने, जिन्होंने भी सेवा की है, दिल से और प्यार से की है। (बापदादा आपको बहुत-बहुत थैंक्स) बापदादा को तो मुबारक दी, लेकिन बापदादा बच्चों को मुबारक देते हैं। (मुन्नी बहन ने बहुत धैर्य रखा) धैर्य तो रखना ही पड़ेगा। बहुतकाल किया है। देखो फिर भी इन्होंने (दादियों ने) मिलके जो यहाँ थे सबने मिलकर किया ना। (निर्वैर भाई ने कहा - दादी जी और भी ठीक हो जायेगी थोड़ा टाइम लगेगा) हो जायेगी कोई बात नहीं, टाइम तो लगता ही है क्योंकि बहुतकाल का बहुत समय देना पड़ता है। सब दादियों को देखकर कितनी खुशी है। (बम्बई के सभी सेवाधारी भाई बहनों ने, विशेष टीचर्स बहनों ने भी बहुत-बहुत याद दी है) उन सभी को सेवा की दुआयें और यादप्यार। (बृजमोहन भाई को) अच्छा किया, मेले की मुबारक हो।

“ज्वालामुखी तपस्या द्वारा मैं-पन की पूँछ को जलाकर बापदादा समान बनी तब समाप्ति समीप आयेगी”

आज अखुट अविनाशी खजानों के मालिक बापदादा अपने चारों ओर के सम्पन्न बच्चों के जमा का खाता देख रहे हैं। तीन प्रकार के खाते देख रहे हैं - एक है अपने पुरुषार्थ द्वारा श्रेष्ठ प्रालब्ध जमा का खाता। दूसरा है सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, यह सन्तुष्टता द्वारा दुवाओं का खाता। तीसरा है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बेहद के निःस्वार्थ सेवा द्वारा पुण्य का खाता। आप सभी भी अपने इन तीन खातों को चेक करते ही हो। यह तीनों खाते जमा कितने हैं, हैं वा नहीं हैं उसकी निशानी हैं - सदा सर्व प्रति, स्वयं प्रति सन्तुष्टता स्वरूप, सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना और सदा अपने को खुशानुमः, खुशानसीब स्थिति में अनुभव करना। तो चेक करो दोनों खाते की निशानियां स्वयं में अनुभव होती हैं? इन सर्व खजानों को जमा करने की चाबी है - निमित्त भाव, निर्माण भाव, निःस्वार्थ भाव। चेक करते जाओ और चाबी का नम्बर पता है! चाबी का नम्बर है - तीन बिन्दी। श्री डॉट। एक आत्मा बिन्दी, दूसरा बाप बिन्दी, तीसरा - ड्रामा का फुल स्टाप बिन्दी, चाबी तो है ना आप सभी के पास? खजाने को खोलकर देखते रहते हो ना! इन सभी खजानों के वृद्धि की विधि है - दृढ़ता। दृढ़ता होगी तो किसी भी कार्य में यह संकल्प नहीं चलेगा कि होगा या नहीं होगा। दृढ़ता की स्थिति है - हुआ ही पड़ा है, बना ही पड़ा है। बनेगा, जमा होगा, नहीं होगा, नहीं। करते तो हैं, होना तो चाहिए, तो तो भी नहीं। दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि, निश्चित और निश्चित अनुभव करेगा।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है - अगर ज्यादा से ज्यादा सर्व खजाने का खाता जमा करना है तो मनमनाभव के मन्त्र को यन्त्र बना दो। जिससे सदा बाप के साथ और पास रहने का स्वतः अनुभव होगा। पास होना ही है, तीन रूप के पास हैं - एक है पास रहना, दूसरा है जो बीता सो पास हुआ और तीसरा है पास विद ऑनर होना। अगर तीनों पास हैं, तो आप सबको राज्य अधिकारी बनने की फुल पास है। तो फुल पास ले ली है वा लेनी है? जिन्होंने फुल पास ले ली है वह हाथ उठाओ। लेनी नहीं है, ले ली है? पहली लाइन वाले नहीं उठाते, लेनी है आपको? सोचते हैं अभी सम्पूर्ण नहीं बने हैं, इसीलिए। लेकिन निश्चयबुद्धि विजयी हैं ही, या होना है? अभी तो समय की पुकार, भक्तों की पुकार, अपने मन की आवाज क्या आ रही है? अभी-अभी सम्पन्न और समान बनना ही है। वा यह सोचते हैं बनेंगे, सोचेंगे, करेंगे...! अब समय के अनुसार हर समय एवररेडी का पाठ पक्का रहना ही है। जब मेरा बाबा कहा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा मानते ही हैं। तो जो प्यारा होता है उसके समान बनना मुश्किल नहीं होता।

बापदादा ने देखा है कि समय प्रति समय समान बनने में जो विघ्न पड़ता है वह सबके पास प्रसिद्ध शब्द है, सब जानते हैं अनुभवी हैं। वह है “मैं”, मैंपन। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है जब भी मैं शब्द बोलते हो तो सिर्फ मैं नहीं बोलो, मैं आत्मा। जुड़वा शब्द बोलो। तो मैं कभी अभिमान ले आता, बॉडी कान्सेस वाला मैं, आत्मा वाला नहीं। कभी अभिमान भी लाता, कभी अपमान भी लाता है। कभी दिलशिकस्त भी बनाता। इसलिए इस बॉडी कान्सेस के मैंपन को स्वप्न में भी नहीं आने दो।

बापदादा ने देखा है स्नेह की सबजेक्ट में मैजॉरिटी पास हैं। आप सभी को किसने यहाँ लाया? सभी चाहे प्लेन में आये हो, चाहे ट्रेन में, चाहे बस में आये हो, लेकिन वास्तव में बापदादा के स्नेह के विमान में यहाँ पहुंचे हो। तो जैसे स्नेह की सबजेक्ट में पास है, अब यह कमाल करो समान बनने की सबजेक्ट में भी पास विद आनर बनके दिखाओ।

पसन्द है? समान बनना पसन्द है? पसन्द है लेकिन बनने में थोड़ा मुश्किल है! समान बन जाओ तो समाप्ति सामने आयेगी। लेकिन कभी-कभी जो दिल में प्रतिज्ञा करते हो, बनना ही है। तो प्रतिज्ञा कमजोर हो जाती और परीक्षा मजबूत हो जाती है। चाहते सभी हैं लेकिन चाहना एक होती है प्रैक्टिकल दूसरा हो जाता है क्योंकि प्रतिज्ञा करते हो लेकिन दृढ़ता की कमी पड़ जाती है। समानता दूर हो जाती है, समस्या प्रबल हो जाती है। तो अब क्या करेंगे?

बापदादा को एक बात पर बहुत हंसी आ रही है। कौन सी बात? हैं महावीर लेकिन जैसे शास्त्रों में हनुमान को महावीर भी कहा है लेकिन पूंछ भी दिखाया है। यह पूंछ दिखाया है मैपन का। जब तक महावीर इस पूंछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो **अभी इस मैं, मैं की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी**। जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं। ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वाला देवी की भी यादगार है। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करना है? **अब यह मन में धुन लगी हुई हो - समान बनना ही है, समाप्ति को समीप लाना ही है**। आप कहेंगे संगमयुग तो बहुत अच्छा है ना तो समाप्ति क्यों हो? लेकिन आप बाप समान दयालु, कृपालु, रहमदिल आत्मायें हो, तो आज की दुःखी आत्मायें और भक्त आत्माओं के ऊपर हे रहमदिल आत्मायें रहम करो। मर्सीफुल बनो। दुःख बढ़ता जा रहा है, दुःखियों पर रहम कर उन्हीं को मुक्तिधाम में तो भेजो। सिर्फ वाणी की सेवा नहीं लेकिन अभी आवश्यकता है मन्सा और वाणी की सेवा साथ-साथ हो। एक ही समय पर दोनों सेवा साथ हो। सिर्फ चांस मिले सेवा का, यह नहीं सोचो, चलते फिरते अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप का परिचय देते हुए चलो। आपका चेहरा बाप का परिचय दे। आपकी चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले। तो ऐसे सदा सेवाधारी भव! अच्छा।

बापदादा के सामने स्थूल में तो आप सभी बैठे हो लेकिन सूक्ष्म स्वरूप से चारों ओर के बच्चे दिल में हैं। देख भी रहे हैं, सुन भी रहे हैं। देश विदेश के अनेक बच्चों ने ईमेल द्वारा, पत्रों द्वारा, सन्देशों द्वारा यादप्यार भेजी है। सभी की नाम सहित बापदादा को याद मिली है और बापदादा दिल ही दिल में सभी बच्चों को सामने देख गीत गा रहे हैं - वाह बच्चे वाह! हर एक को इस समय इमर्ज रूप में याद रहती है। सब सन्देशी को अलग-अलग कहते हैं फलाने ने याद भेजी है, फलाने ने याद भेजी है। बाप कहते हैं, बाप के पास तो जब संकल्प करते हो, साधन द्वारा पीछे मिलती है लेकिन स्नेह का संकल्प साधन से पहले पहुंच जाता है। ठीक है ना! कईयों को याद मिली है ना! अच्छा।

अच्छा - पहले हाथ उठाओ जो पहले बारी आये हैं। यह सेवा में भी पहले बारी आये हैं। अच्छा बापदादा कहते हैं, भले पधारे, आपके आने की मौसम है। अच्छा अभी बोलो।

इन्दौर ज़ोन(आरती बहन)के सेवाधारी आये हैं:-(सबके हाथ में “मेरा बाबा” का दिल के सेप में सिम्बल है) हाथ तो बहुत अच्छे हिला रहे हैं, लेकिन दिल को भी हिलाना। सिर्फ सदा याद रखना, भूलना नहीं मेरा। अच्छा चांस लिया है, बापदादा सदा कहते हैं, हिम्मत रखने वालों को बापदादा पदमगुणा मदद देता है। तो हिम्मत रखी है ना! अच्छा किया है। इन्दौर ज़ोन है। अच्छा है इन्दौर ज़ोन साकार बाबा का लास्ट स्मृति का स्थान है। अच्छा है। सभी बहुत खुश हो रहे हो ना! गोल्डन लाटरी मिली है। ज़ोन की सेवा मिलने से सभी सेवाधारियों को छुट्टी मिल जाती है और वैसे संख्या में मिलती है इतने लाओ और अभी देखो इतने हैं। यह भी ज़ोन ज़ोन को अच्छा चांस है ना, जितने लाने हो लाओ। तो आप सभी का थोड़े समय में पुण्य का खाता कितना बड़ा इकट्ठा हो गया। यज्ञ सेवा दिल से करना अर्थात् अपने पुण्य का खाता तीव्रगति से बढ़ाना क्योंकि संकल्प, समय और शरीर तीनों सफल किया। संकल्प भी चलेगा तो यज्ञ सेवा का, समय भी यज्ञ सेवा में व्यतीत हुआ और शरीर भी यज्ञ सेवा में अर्पण किया। तो सेवा है या मेवा है? प्रत्यक्ष फल किसी के पास यज्ञ सेवा करते कोई व्यर्थ संकल्प आया? आया किसके पास? खुश

रहे और खुशी बांटी। तो यह जो यहाँ गोल्डन अनुभव किया, इस अनुभव को वहाँ भी इमर्ज कर बढ़ाते रहना। कभी भी कोई माया का संकल्प भी आवे तो मन के विमान से शान्तिवन में पहुंच जाना। मन का विमान तो है ना! सभी के पास मन का विमान है। बापदादा ने हर ब्राह्मण को जन्म की सौगात श्रेष्ठ मन का विमान दे दिया है। इस विमान में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। स्टार्ट करना है तो मेरा बाबा, बस। चलाना आता है ना विमान! तो जब भी कुछ हो मधुवन में पहुंच जाओ। भक्ति मार्ग में चार धाम करने वाले अपने को बहुत भाग्यवान समझते हैं और मधुवन में भी चार धाम हैं, तो चार धाम किये? पाण्डव भवन में देखो, चार धाम हैं। जो भी आते हो पाण्डव भवन तो जाते हो ना, एक शान्ति स्तम्भ महाधाम। दूसरा बापदादा का कमरा, यह स्नेह का धाम। और तीसरा झोपड़ी, यह स्नेहमिलन का धाम और चौथा - हिस्ट्री हाल, तो आप सभी ने चार धाम किये? तो महान भाग्यवान तो हो ही गये। अभी किसी भी धाम को याद कर लेना, कब उदास हो जाओ तो झोपड़ी में रूहरिहान करने आ जाना। शक्तिशाली बनने की आवश्यकता हो तो शान्ति स्तम्भ में पहुंच जाना और वेस्ट थॉट्स बहुत तेज हो, बहुत फास्ट हों तो हिस्ट्री हाल में पहुंच जाना। समान बनने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न हो तो बापदादा के कमरे में आ जाना। अच्छा है, सभी ने गोल्डन चांस लिया है लेकिन सदा वहाँ रहते भी गोल्डन चांस लेते रहना। अच्छा। हिम्मतवान अच्छे हैं। **कैड ग्रुप (दिल वाले बैठे हैं, बहुत अच्छी कान्फ्रेन्स सबने मिलकर की):**- अच्छा किया है, आपस में मीटिंग भी की है और प्रेजिडेंट जो है उसकी भी इच्छा है यह कार्य होना चाहिए। तो जैसे उसकी भी इच्छा है, उसको भी साथ मिलाते हुए आगे बढ़ते रहो और साथ-साथ जो ब्राह्मणों की मीटिंग है, उसमें भी अपने प्रोग्राम का समाचार सुना करके राय ले लेना तो सर्व ब्राह्मणों की राय से और शक्ति भर जाती है। बाकी कार्य अच्छा है, करते चलो, फैलाते चलो और भारत की विशेषता प्रगट करते चलो। मेहनत अच्छी कर रहे हो। प्रोग्राम भी अच्छा किया है, और दिल वालों ने अपनी बड़ी दिल दिखाई, उसकी मुबारक हो। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- अच्छा है हर टर्म में डबल विदेशियों का आना इस संगठन को चार चांद लगा देता है। डबल विदेशियों को देखकर सभी को उमंग भी आता है, सब डबल विदेशी डबल उमंग उत्साह से आगे उड़ रहे हैं, चल नहीं रहे हैं, उड़ रहे हैं, ऐसे है। उड़ने वाले हो या चलने वाले हो? जो सदा उड़ता रहता है, चलता नहीं वह हाथ उठाओ। अच्छा। वैसे भी देखो विमान में उड़ते ही आना पड़ता है। तो उड़ने का तो आपको अभ्यास है ही। वह शरीर से उड़ने का, यह मन से उड़ने का, हिम्मत भी अच्छी रखी है। बापदादा ने देखो कहाँ कोने-कोने से अपने बच्चों को ढूँढ लिया ना! बहुत अच्छा है, डबल विदेशी है कहलाने में, वैसे तो ओरीजनल भारत के हैं। और राज्य भी कहाँ करना है? भारत में करना है ना! लेकिन सेवा अर्थ पांच ही खण्डों में पहुंच गये हो। और पांच ही खण्डों में भिन्न-भिन्न स्थान में सेवा भी अच्छी उमंग-उत्साह से कर रहे हैं। विघ्न विनाशक हो ना! कोई भी विघ्न आवे घबराने वाले तो नहीं हो ना, यह क्यों हो रहा है, यह क्या हो रहा है, नहीं। जो होता है उसमें हमारी और हिम्मत बढ़ाने का साधन है। घबराने का नहीं, उमंग उत्साह बढ़ाने का साधन है। ऐसे पक्के हो ना! पक्के हो? या थोड़ा-थोड़ा कच्चे? नहीं, कच्चा शब्द अच्छा नहीं लगता। पक्के हैं, पक्के रहेंगे, पक्के होके साथ चलेंगे। अच्छा।

दादी जानकी आस्ट्रेलिया का चक्कर लगाकर आई हैं, उन्होंने बहुत याद दी है:- बापदादा के पास ईमेल में भी सन्देश आये हैं, और बापदादा देखते हैं कि आजकल बड़े प्रोग्राम भी ऐसे हो गये हैं जैसे हुए ही पड़े हैं। सभी सीख गये हैं। सेवा के साधनों को कार्य में लगाने का अच्छा अभ्यास हो गया है। बापदादा को आस्ट्रेलिया नम्बरवन दिखाई देता है लेकिन अभी, पहले-पहले नम्बरवन लिया अभी यू.के. थोड़ा नम्बर आगे जा रहा है लेकिन आस्ट्रेलिया को नम्बरवन होना ही है। यू.के. नम्बर दो नहीं होगा, वह भी नम्बर वन ही होगा। पुराने-पुराने आस्ट्रेलिया

के बच्चे बापदादा को याद हैं। और बापदादा की लाडली निर्मल आश्रम, आप लोग तो कहते हैं निर्मला दीदी, दीदी कहते हो ना, लेकिन बापदादा ने शुरू से उसको टाइटल दिया है निर्मल आश्रम, जिस आश्रम में अनेक आत्माओं ने सहारा लिया और बाप के बने हैं और बन रहे हैं, बनते जायेंगे। तो एक-एक आस्ट्रेलिया निवासी बच्चों को विशेष याद है, यह सामने बैठे हैं, आस्ट्रेलिया के हैं ना! आस्ट्रेलिया वाले उठो। बहुत अच्छे। कितना अच्छा उमंग आ रहा है इन्हों को, विश्व की सेवा के लिए खूब तैयारियां कर रहे हैं। बापदादा की मदद है और सफलता भी है ही।

अच्छा - अभी क्या दृढ़ संकल्प कर रहे हो? अभी इसी संकल्प में बैठो कि सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। विजय हमारे गले की माला है। इस निश्चय और रूहानी नशे में अनुभवी स्वरूप होके बैठो।

अच्छा। चारों ओर के फिकर से फारिग बेफिक्र बादशाहों को, सदा बेगमपुर के बादशाह स्वरूप में स्थित रहने वाले बच्चों को, सर्व खजानों से सम्पन्न रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड सर्व बच्चों को, सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ती कला वाले बच्चों को, सदा समाप्ति को समीप लाने वाले बापदादा समान बच्चों को बापदादा का यादगार, दिल की दुवायें, वरदाता के वरदान और नमस्ते।

दादियों से:- कितना प्यार से सभी देख रहे हैं। ठीक हो जायेगी। ठीक है, ठीक ही होगी।

अच्छा - सभी खुश हो रहे हैं। खुश रहना यह सबसे बड़े ते बड़े भाग्य के प्राप्ति की निशानी है। खुश रहने वाला अपने चेहरे से अनेको को खुशी का अनुभव कराते हैं।

(दादी जानकी ने विदेश का समाचार सुनाया) अभी तो सारा भारत आपके हाथ में आना है। खुद ही आफर करेंगे आओ, अभी आपको थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है, पर्चे आदि छपाने पड़ते हैं, मेहनत करनी पड़ती है। अभी आपेही सब आफर करेंगे। बस अभी यह सीन रही हुई है कि सबके मुख से एक ही आवाज निकले हमारा बाबा आ गया। यह भी समीप आ रहा है, सिर्फ आप उड़ते रहो, फरिश्ते बन करके उड़ते रहो तो उन्हीं को फरिश्तों का साक्षात्कार होगा।

डा. अशोक मेहता:- अच्छा कार्य के निमित्त बन गये हो। अनेक आत्माओं का सहज ही परिचय होता रहता है और हॉस्पिटल का जो लाभ उठाया, पेशेन्ट को मधुबन तक पहुंचाया, यह सेवा बहुत अच्छी की। पेशेन्ट को पेशेन्स सिखला दिया। अच्छा हुआ ना, सभी का फायदा हुआ। अच्छा है। इस हॉस्पिटल से भी कई वी.आई.पी सन्देश लेने आयेंगे। (हेल्थ फेयर और डाक्टर्स की कान्फेन्स करने जा रहे हैं) अच्छा है, हेल्थ का नाम सुन करके अट्रैक्शन होती है, जैसे यहाँ भी ग्लोबल हॉस्पिटल खुलने के बाद वायुमण्डल चेंज हो गया ना। ऐसे हेल्थ का नाम सुनके, सब आजकल हेल्थ कान्सेस बहुत हैं ना तो उन्हीं को लगता है डबल फायदा हो जायेगा। यह अच्छी सेवा है।

बम्बई के प्रसिद्ध गीतकार समीर भाई: अब डबल गीत गाना। मुख से तो गाते हो बहुत अच्छा, बनाते भी हो ना, अच्छे बनाते हो, शब्द खराब नहीं बनाते हो, ठीक बनाते हो। अभी मन से बाप के गुणों के भी गीत गाते रहना। डबल गीत। तो आपका चेहरा खुशामिजाज हो जायेगा। आपके चेहरे से लगेगा कुछ पा लिया है। अच्छा है, टाइम पर पहुंच गये हो।

नारायण दादा:- (परदादी से मिलने आये थे, परदादी अहमदाबाद हास्पिटल में है) वह भी ठीक हो रही है। बड़ी आयु है ना। बड़ी आयु के कारण थोड़ा टाइम लग जाता है। आप ठीक हैं, सेट हो? सब सेट है ना। सभी को याद देना। अच्छा।

“स्मृति स्वरूप, अनुभवी मूर्त बन सेकण्ड की तीव्रगति से परिवर्तन कर पास विद ऑनर बनो”

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों में तीन विशेष भाग्य की रेखायें मस्तक में चमकती हुई देख रहे हैं। सभी के मस्तक भाग्य की रेखाओं से चमक रहे हैं। एक है परमात्म पालना के भाग्य की रेखा। दूसरी है श्रेष्ठ शिक्षक द्वारा शिक्षा के भाग्य की रेखा। तीसरी है सतगुरु द्वारा श्रीमत के भाग्य की रेखा। वैसे भाग्य आपका अथाह है फिर भी आज यह विशेष तीन रेखायें देख रहे हैं। आप भी अपने मस्तक में चमकती हुई रेखायें अनुभव कर रहे हो ना! सबसे श्रेष्ठ है परमात्म प्यार के पालना की रेखा। जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है तो परमात्म पालना भी ऊंचे ते ऊंची है। यह पालना कितने थोड़ों को प्राप्त होती है, लेकिन आप सब इस पालना के पात्र बने हो। यह पालना सारे कल्प में आप बच्चों को एक ही बार प्राप्त होती है। अब नहीं तो कब प्राप्त नहीं हो सकती। यह परमात्म पालना, परमात्म प्यार, परमात्म प्राप्ति कोटों में कोई आत्माओं को ही अनुभव होती है। आप सभी तो अनुभवी हो ना! अनुभव है? पालना का भी अनुभव है, पढ़ाई का भी और श्रीमत का भी। अनुभवी मूर्त हो। तो सदा अपने मस्तक में यह भाग्य का सितारा चमकता हुआ दिखाई देता है, सदा? कि कभी चमकता हुआ सितारा डल भी हो जाता है क्या! ढीला नहीं होना चाहिए। अगर चमकता हुआ सितारा ढीला होता है, उसका कारण क्या है? जानते हो?

बापदादा ने देखा है कि कारण यह होता है, स्मृति स्वरूप नहीं बने हो। सोचते हो मैं आत्मा हूँ, लेकिन सोचता स्वरूप बनते हो, स्मृति स्वरूप कम बनते हो। जब तक स्मृति स्वरूप सदा नहीं बनते तो स्मृति ही समर्थी दिलाती है। स्मृति स्वरूप ही समर्थ स्वरूप है। इसलिए भाग्य का सितारा कम चमकता है। अपने आपसे पूछो कि ज्यादा समय सोच स्वरूप बनते हो वा स्मृति स्वरूप बनते हो? सोच स्वरूप बनने से सोचते बहुत अच्छा हो, मैं यह हूँ, मैं यह हूँ, मैं यह हूँ... लेकिन स्मृति न होने के कारण सोचते, व्यर्थ संकल्प साधारण संकल्प भी मिक्स हो जाते हैं। वास्तव में देखा जाए तो आपका अनादि स्वरूप स्मृति सो समर्थ स्वरूप है। सोचने वाला नहीं, स्वरूप है। और आदि में भी इस समय के स्मृति स्वरूप की प्रालम्भ प्राप्त होती है। तो अनादि और आदि स्मृति स्वरूप है और इस समय अन्त में संगम समय पर भी स्मृति स्वरूप बनते हो। तो आदि अनादि और अन्त तीनों कालों में स्मृति स्वरूप हो। सोचना स्वरूप नहीं हो। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा कि **वर्तमान समय अनुभवी मूर्त बनना श्रेष्ठ स्टेज है**। सोचते हो आत्मा हूँ, परमात्म प्राप्ति है, लेकिन समझना और अनुभव करना इसमें बहुत अन्तर है। अनुभवी मूर्त कभी भी न माया से धोखा खा सकता, न दुःख की अनुभूति कर सकता। यह जो बीच-बीच में माया के खेल देखते हो, या खेल खेलते भी हो, उसका कारण है अनुभवी मूर्त की कमी है। अनुभव की अर्थॉरिटी सबसे श्रेष्ठ है। तो बापदादा ने देखा कि कई बच्चे सोचते हैं लेकिन स्वरूप की अनुभूति कम है।

आज की दुनिया में मैजॉरिटी आत्मायें देखने और सुनने से थक गये हैं लेकिन अनुभव द्वारा प्राप्ति करने चाहते हैं। तो अनुभव कराना, अनुभवी ही करा सकता है। और अनुभवी आत्मा सदा आगे बढ़ती रहेगी, उड़ती रहेगी क्योंकि अनुभवी आत्मा में उमंग-उत्साह सदा इमर्ज रूप में रहता है। तो चेक करो हर प्वाइंट के अनुभवी मूर्त बने हैं? अनुभव की अर्थॉरिटी आपके हर कर्म में दिखाई देती है? हर बोल, हर संकल्प अनुभव की अर्थॉरिटी से है या सिर्फ समझने के आधार पर है? एक है समझना, दूसरा है अनुभव करना। हर सबजेक्ट में, ज्ञान की प्वाइंट्स वर्णन करना, वह तो बाहर के स्पीकर भी बहुत स्पीच कर लेते हैं। लेकिन हर प्वाइंट का अनुभवी स्वरूप बनना, यह है ज्ञानी तू आत्मा। योग लगाने वाले बहुत हैं, योग में बैठने वाले बहुत हैं, लेकिन योग का अनुभव अर्थात् शक्ति स्वरूप

बनना और शक्ति स्वरूप की परख यह है कि जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय उस शक्ति को आह्वान कर निर्विघ्न स्वरूप बन जाए। अगर एक भी शक्ति की कमी है, वर्णन है लेकिन स्वरूप नहीं है तो भी समय पर धोखा खा सकते हैं। चाहिए सहनशक्ति और आप यूज करो सामना करने की शक्ति, तो योगयुक्त अनुभवी स्वरूप नहीं कहेंगे। चार ही सबजेक्ट में स्मृति स्वरूप वा अनुभवी स्वरूप की निशानी क्या होगी? स्थिति में निमित्त भाव, वृत्ति में सदा शुभ भाव, आत्मिक भाव, निःस्वार्थ भाव। वायुमण्डल में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा निर्माण भाव, वाणी में सदा निर्मल वाणी। यह विशेषतायें अनुभवी मूर्त की हर समय नेचुरल नेचर होगी। नेचुरल नेचर। अभी कई बच्चे कभी-कभी कहते हैं कि हम चाहते नहीं हैं यह करें लेकिन मेरी पुरानी नेचर है। नेचर नेचुरल काम वही करती है, सोचना नहीं पड़ता, लेकिन नेचर नेचुरल काम करती है। तो अपने को चेक करो - मेरी नेचुरल नेचर क्या है? अगर कोई भी पुरानी नेचर अंश मात्र भी है, तो हर समय वह कार्य में आते-आते पक्का संस्कार बन जाता है। उसको समाप्त करने के लिए पुरानी नेचर, पुराना स्वभाव, पुराना संस्कार को समाप्त करने के लिए चाहते हो लेकिन कर नहीं पाते हो, उसका कारण क्या है? नॉलेजफुल तो सबमें बन गये हो, लेकिन जो चाहते हो होना नहीं चाहिए लेकिन हो जाता है, कारण क्या है? परिवर्तन करने की शक्ति कम है। मैजॉरिटी में दिखाई देता है कि परिवर्तन की शक्ति, समझते हैं, वर्णन भी करते हैं, अगर सभी को परिवर्तन शक्ति की टॉपिक पर लिखने के लिए कहें या भाषण करने के लिए कहें तो बापदादा समझते हैं सभी बहुत होशियार हैं, बहुत अच्छा भाषण भी कर सकते हैं, लिख भी सकते हैं और दूसरा कोई आता है उसको समझाते भी बहुत अच्छा है - कोई हर्जा नहीं, परिवर्तन कर लो। लेकिन स्वयं में परिवर्तन करने की शक्ति और वर्तमान समय के महत्व को जानते हुए परिवर्तन करने में समय नहीं लगाना चाहिए। सेकण्ड में परिवर्तन की शक्ति, क्योंकि जब समझते हो - होना नहीं चाहिए, समझते हुए भी अगर परिवर्तन नहीं कर पाते हो, उसका कारण है - सोचते हो लेकिन स्वरूप नहीं बने हो। सोचना स्वरूप ज्यादा सारे दिन में बनते हो, स्मृति सो समर्थ स्वरूप वह मैजॉरिटी कम है।

अभी तीव्रगति का समय है, तीव्र पुरुषार्थ का समय है, साधारण पुरुषार्थ का समय नहीं है, सेकण्ड में परिवर्तन का अर्थ है - स्मृति स्वरूप द्वारा एक सेकण्ड में निर्विकल्प, व्यर्थ संकल्प निवृत्त हो जाए, क्यों? समय को समाप्ति को समीप लाने वाले निमित्त हो। तो अभी के समय के महत्व प्रमाण जब जानते भी हो कि हर कदम में पदम समाया हुआ है, तो बढ़ाने का तो बुद्धि में रखते हो लेकिन गवाने का भी तो बुद्धि में रखो। अगर कदम में पदम बनता भी है तो कदम में पदम गंवाते भी तो हो, या नहीं? तो अभी मिनट की बात भी गई, दूसरों के लिए कहते हो वन मिनट साइलेन्स में रहो लेकिन आप लोगों के लिए सेकण्ड की बात होनी चाहिए। जैसे हाँ और ना सोचने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड। तो परिवर्तन शक्ति इतनी फास्ट चाहिए। समझा ठीक है, नहीं ठीक है, ना ठीक को बिन्दी और ठीक को प्रैक्टिकल में लाना है। अभी बिन्दी के महत्व को कार्य में लगाओ। तीन बिन्दियों को तो जानते हो ना! लेकिन बिन्दी को समय पर कार्य में लगाओ। जैसे साइंस वाले सब बात में तीव्रगति कर रहे हैं, और परिवर्तन की शक्ति भी ज्यादा कार्य में लगा रहे हैं। तो साइलेन्स की शक्ति वाले अभी लक्ष्य रखो अगर परिवर्तन करना है, नॉलेजफुल हो तो अभी पावरफुल बनो, सेकण्ड की गति से। कर रहे हैं, हो जायेंगे... कर लेंगे...., नहीं। हो सकता है या मुश्किल है? क्योंकि लास्ट समय सेकण्ड का पेपर आना है, मिनट का नहीं, तो सेकण्ड का अभ्यास बहुतकाल का होगा तब तो सेकण्ड में पास विद आनर बनेगे ना! परमात्म स्टूडेंट हैं, परमात्म पढ़ाई पढ़ रहे हैं, तो पास विद ऑनर बनना ही है ना! पास मार्क्स लिया तो क्या हुआ। पास विद ऑनर। क्या लक्ष्य रखा है? जो समझते हैं पास विद ऑनर बनना है वह हाथ उठाओ, पास विद ऑनर, ऑनर शब्द अण्डरलाइन करना। अच्छा। तो अभी क्या करना पड़ेगा? मिनट मोटर तो कामन है, सेकण्ड का काम है अभी।

हाँ पंजाब वाले, सेकण्ड का मामला है अभी। इसमें नम्बरवन कौन होगा? पंजाब। क्या बड़ी बात है। जितना फलक से कहते हो, बहुत अच्छा कहते हो, फलक से कहते हो, बापदादा जब सुनते हैं बहुत खुश होते हैं, कहते

हो - क्या बड़ी बात है, बापदादा साथ है। तो साथ तो अर्थो रिटी है, तो क्या करना है अभी? तीव्र बनना पड़ेगा अभी। सेवा तो कर रहे हो, और सेवा के बिना और करेंगे भी क्या? खाली बैठेंगे क्या? सेवा तो ब्राह्मण आत्माओं का धर्म है, कर्म है। लेकिन अभी सेवा के साथ-साथ समर्थ स्वरूप, जितना सेवा का उमंग-उत्साह दिखाया है, बापदादा खुश है, मुबारक भी देते हैं। लेकिन जैसे सेवा का ताज मिला है ना, ताज पहना हुआ है देखो कितना अच्छा लग रहा है। अभी स्मृति स्वरूप बनने का ताज पहनके दिखाना। यूथ ग्रुप है ना! तो कमाल क्या करेंगे? सेवा में भी नम्बरवन और समर्थ स्वरूप में भी नम्बरवन। सन्देश देना भी ब्राह्मण जीवन का धर्म और कर्म है लेकिन अभी बापदादा इशारा दे रहा है कि परिवर्तन की मशीनरी तीव्र करो। नहीं तो पास विद आनर होने में मुश्किल हो जायेगा। बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सोचा और किया। सिर्फ सोचना स्वरूप नहीं बनो, समर्थ स्मृति सो समर्थ स्वरूप बनो। व्यर्थ को तीव्र गति से समाप्त करो। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ समय और सम्बन्ध-सम्पर्क में भी व्यर्थ विधि, रीति सब समाप्त करो। जब ब्राह्मण आत्मायें तीव्रगति से यह स्व के व्यर्थ की समाप्ति करेंगे तब आत्माओं की दुआयें और अपने पुण्य का खाता तीव्रगति से जमा करेंगे।

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि बापदादा तीन खाते चेक करते हैं। पुरुषार्थ की गति का खाता, दुआओं का खाता, पुण्य का खाता लेकिन मैजॉरिटी के खाते अभी भरपूर कम हैं। इसलिए बापदादा आज यही स्लोगन याद दिला रहे हैं कि अब तीव्र बनो, तीव्र पुरुषार्थी बनो। तीव्र गति से समाप्ति वाले बनो। तीव्र गति से मन्सा द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन वाले बनो।

बापदादा एक बात में सभी बच्चों पर बहुत खुश भी है। किस बात में? प्यार सबका बाप से जिगरी है, इसकी मुबारक है। लेकिन बोलूँ क्या करो! इस सीजन की समाप्ति तक, अभी तो टाइम पड़ा है, इस सीजन के समाप्त तक तीव्र गति का कुछ न कुछ जलवा दिखाओ। पसन्द है? पसन्द है? जो समझते हैं लक्ष्य और लक्षण दोनों ही स्मृति में रखेंगे वह हाथ उठाओ। लक्ष्य और लक्षण दोनों सामने रखेंगे वह हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स भी रखेंगे, टीचर्स भी रखेंगे और यूथ भी रखेंगे, और पहली लाइन वाले भी रखेंगे। तो पदम, पदम, पदमगुणा इनएडवांस मुबारक हो। अच्छा अभी क्या करना है?

सेवा का टर्न पंजाब का है:- आधा क्लास तो पंजाब है। बहुत अच्छा किया है। सेवा में एवररेडी बन पहुंच गये हो, इसकी मुबारक है। अच्छा, पंजाब वाले क्या कोई नया प्लैन बना रहे हैं? जो किसने नहीं किया हो, कोई ऐसा प्लैन टच होता है? होता है। सुबह को हो जायेगा। ऐसा करके दिखाओ, जो सब ब्राह्मण थैंक्स भी दें, मुबारक भी दें, वाह! वाह! के गीत भी गायें। अभी तक जो किया है, वह तो कर ही रहे हैं, अच्छा कर रहे हैं। बापदादा सेवा के समाचार सुनते रहते हैं और सुनकर दिल में दिल का प्यार भी देते हैं। अभी कुछ और नवीनता करके दिखाओ। पंजाब को शेर कहा जाता है ना। तो ऐसी कोई गजघोर करके दिखाओ जो सबकी नज़र बापदादा की तरफ सहज ही आ जाए। हो जायेगा। बापदादा को संकल्प है, पंजाब कोई नवीनता करेगा ही। अभी भी गोल्डन चांस मिला है, सेवा का गोल्डन चांस लिया और हर साल लेते भी रहते हैं और अच्छे हिम्मत उमंग से सभी मिल करके कर भी रहे हैं। संख्या तो बहुत अच्छी आई है। अच्छे-अच्छे महावीर हैं। देखो ब्रह्मा बाप का भी पंजाब से प्यार रहा तो पंजाब में पहुंच गये थे। तो ब्रह्मा बाप का भी विशेष प्यार देखा। सभी महारथियों का भी पंजाब में पांव पड़ा है। कोई ऐसी नवीनता करके दिखाओ। कर सकते हैं। पंजाब की पांच नदियां मशहूर हैं। बापदादा तो देख रहे हैं कि अच्छे ब्रह्मा बाप की पालना वाले भी हैं। तो पालना का रिटर्न तो देना पड़ेगा ना। अच्छा है बापदादा की बहुत बढ़िया उम्मीद है पंजाब में। करेंगे ना! कोई ऐसा कार्य करके दिखाओ जो सबकी नज़र बाप की तरफ पड़ जाए। है पाण्डवों में हिम्मत है? पाण्डव हिम्मत वाले हैं? अच्छा है, माताओं की संख्या भी काफी है, टीचर्स भी बहुत हैं। अच्छा - प्लैन बनाना

आपस में। पाण्डव प्लैन बनाना। कमाल का प्लैन बनाना। अच्छा।

सारे भारत से युवा पद यात्री आये हैं:- अच्छा - बापदादा ने स्वागत समारोह भी देखा और जो युवा वर्ग वालों ने सेवा की, वह समाचार भी सुना। तो सेवा तो बहुत अच्छी की है और हिम्मत और उमंग से अथक बन सेवा की है, यह भी सर्तीफिकेट अच्छा दिखाया है। जहाँ उमंग-उत्साह होता है वहाँ सफलता होती ही है। तो देखा गया कि विशेष सब यात्राओं में उमंग-उल्हास अच्छा रहा। उमंग-उत्साह के कारण निरोगी भी रहे, निर्विघ्न भी रहे। अभी जैसे यात्रा के समय निर्विघ्न रहे, ऐसे इस ब्राह्मण जीवन में सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प, अगर सभी कुमार एक मास भी यह बहुत अच्छा चार्ट दिखायें, तो बापदादा और सुनहरी पुष्पों की वर्षा करेंगे। बिल्कुल स्वप्न मात्र भी निर्विघ्न। बोल और कर्म तो बड़ी चीज़ है लेकिन स्वप्न मात्र भी निर्विघ्न हो। स्व को देखो, समय को देखो, दूसरे की कमी को देखो ही नहीं, अगर देखते भी हो तो अपने मन में नहीं रखो। अगर किसी की कमजोरी मन में रखेंगे, तो बाप कैसे याद आयेगा! कमजोरी के साथ बाप नहीं ठहरता। एक सेकण्ड की तीव्रगति का, सभी यूथ जैसे उमंग उत्साह से यात्रा में सफल हुए, वैसे इस विषय पर सफल होके दिखाओ, फिर सेरीमनी बापदादा मनायेगा। करेंगे! ऐसी हिम्मत है? पक्का? क्योंकि यहाँ से जाने के बाद, माया सुन रही है। माया को पता है कि यह प्रामिस कर रहे हैं। अगर कोई भी कमी देखी तो विधिपूर्वक अपने जो निमित्त बड़े हैं उन्हों को सुना दिया लेकिन पीठ नहीं करो, उसको सजा मिली, नहीं मिली, क्या कदम उठाया गया, क्यों नहीं उठाया गया! इस व्यर्थ में नहीं जाओ। हिसाब-किताब बापदादा देख रहे हैं, देखते रहते हैं। तो निर्विघ्न भव का वरदान जीवन में लायेंगे? लायेंगे? टी.वी. में इनका फोटो निकालो। देखो, सभी सेवाकेन्द्र से, मैजॉरिटी सब ज़ोन से हैं। अगर आप जो भी हैं, बहनें भी हैं, भाई भी हैं, अगर आप स्वयं हर ज़ोन में करके दिखायेंगे तो आपकी वृत्ति का वायुमण्डल फैलेगा। यह नहीं सोचना वायुमण्डल फैला या नहीं फैला, यह नहीं सोचना। अवश्य फैलेगा। तो यूथ ऐसी कमाल करके दिखायें तो गवर्नेन्ट को रिजल्ट दिखायेंगे। स्वप्न मात्र भी पास विद ऑनर हो। बाकी जो सेवा की, वह अच्छी की है, सबको पसन्द भी आई, आपकी सेवा बाप को भी पसन्द है लेकिन आगे के लिए कोई कमाल करके दिखाओ। संख्या भी अच्छी है। देखो यह अनुभव करके देखा कि सेवा के उमंग-उत्साह में रहे तो चार्ट ठीक रहा ना। कोई खिटखिट नहीं हुई ना, न शरीर की, न विघ्न की, मैजॉरिटी। तो ऐसे ही उमंग-उत्साह से कोई भी संकल्प करेंगे तो विजय है ही है। तो याद रखना - यूथ का स्लोगन है - करना ही है। बुरा नहीं करना, अच्छा करना। विजयी बनना ही है। सफलता का सितारा बनना ही है। ठीक है। अच्छा।

डबल विदेशी: बहुत अच्छा सितारा हिला रहे हैं। बापदादा कहते हैं डबल विदेशी मधुबन का विशेष श्रृंगार हैं। डबल विदेशी आते हैं तो मधुबन का श्रृंगार हो जाता है। अभी देखेंगे तीव्र गति के पुरुषार्थ में नम्बरवन कौन सा ज़ोन जाता है। मधुबन जायेगा, मधुबन वाले बैठे हैं ना। मधुबन वाले उठो। अच्छा। मधुबन वाले तो बहुत हैं। तो क्या करेगा मधुबन। तीव्र पुरुषार्थ में नम्बरवन। है! हिम्मत है? हिम्मत है? हिम्मत वाले हाथ उठाओ। अभी मधुबन की कोई भी, ऐसी कोई भी बात बापदादा के पास नहीं आयेगी, यह हुआ, यह हुआ नहीं आयेगा। अच्छा हुआ, अच्छा हुआ हुआ, अच्छा हुआ... ठीक है। पक्का? पक्का? देखो। हाथ उठाया है या मन का हाथ उठाया है? मन का हाथ उठाया है ना? थोड़ों ने अभी हाथ उठाया। मन का हाथ उठा रहे हो ना। अभी बापदादा हर मास की रिजल्ट पूछेंगे। पूछें? पूछें? बहुत अच्छा। मधुबन वालों का स्वमान, सारे विदेश में, इन्डिया में हैं। मधुबन वासियों को बहुत ऊंची नज़र से देखते हैं। अति स्नेह की नज़र से देखते हैं। तो ऐसा ही रिजल्ट सुनते रहेंगे अभी। मन में तो सभी जानते हैं क्या करना है, क्या नहीं करना है, बापदादा क्या चाहते हैं, समझते तो सभी हैं, अभी सिर्फ करना है। नॉलेजफुल हो लेकिन अभी पावरफुल बनना। अच्छा।

अच्छा - डबल विदेशी बापदादा को बहुत प्यारे लगते हैं, प्यारे तो सभी हैं लेकिन इसीलिए प्यार करते कि सच्ची दिल वाले हैं। महसूस जल्दी करते हैं लेकिन परिवर्तन की शक्ति अभी और एड करनी है। एड करेंगे ना। परिवर्तन की शक्ति एडीशन करो। बाकी महसूस करते हो, जानते हो, इसीलिए बाबा का प्यार है कि सच्चे हैं लेकिन परिवर्तन करने की थोड़ी और एडीशन करो। ठीक है सभी खुश हैं? खुशी में नाचते रहते, और बाप के गुणों के गीत गाते रहते। बहुत अच्छा। अच्छा।

जो पहली बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। खड़े हो जाओ। अच्छा - बहुत आये हैं। पहले बारी वाले बहुत हैं। बापदादा पहले बारी आने वालों को यही कहते हैं कि जैसे पहले बारी आये हो वैसे हर सबजेक्ट में पहला नम्बर आना। आने में देखो उमंग उत्साह से आये हो ना। प्यार के विमान में चढ़के पहुंच गये हो। अभी उमंग और उत्साह के पंखों से सब सबजेक्ट में नम्बरवन आना है, यह दृढ़ संकल्प रखो। अच्छा है मुबारक हो। अच्छा।

अभी-अभी अभ्यास करो - एक सेकण्ड में निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प बन एकाग्र, एक बाप दूसरा न कोई, इस एक ही संकल्प में एकाग्र होकर बैठ सकते हो! और कोई संकल्प नहीं हो। एक ही संकल्प की एकाग्रता शक्ति के अनुभव में बैठ जाओ। टाइम नहीं लगाना, एक सेकण्ड में। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों के जिन्होंने भी विशेष याद प्यार भेजा है, वह हर एक बच्चा अपने नाम से यादप्यार और दिल की दुआयें स्वीकार करना। बापदादा देख रहे हैं कि सभी के दिल में आता है हमारी भी याद, हमारी भी याद, लेकिन आप बच्चे संकल्प करते हो और बापदादा के पास उसी समय ही पहुंच जाता है। इसलिए सभी बच्चों को हर एक को नाम और विशेषता सम्पन्न यादप्यार दे रहे हैं।

तो सभी सदा स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप, अनुभव स्वरूप श्रेष्ठ बच्चों को, सदा जो सोचा शुभ, वह तुरत किया, जैसे तुरत दान का महत्व है वैसे तुरत परिवर्तन का भी महत्व है। तो तुरत परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक बच्चों को, सदा परमात्म पालना, परमात्म प्यार, परमात्म पढ़ाई और परमात्म श्रीमत को हर कर्म में लाने वाले महावीर बच्चों को, सदा हिम्मत और एकाग्रता, एकता द्वारा नम्बरवन तीव्र पुरुषार्थ करने वाले बच्चों को बापदादा का दिल का यादप्यार और दिल की दुआयें और नमस्ते।

दादी जी से:- विजय प्राप्त करके दिखा रही है।

दादियों से:- सभी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। बाप दादा हर एक के पार्ट को देख खुश होते हैं। छोटे छोटे भी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। ऐसे नहीं समझना हम तो छोटे हैं। छोटे सुभान अल्लाह हैं। शक्तियों का अपना पार्ट है, पाण्डवों का अपना पार्ट है। पाण्डव नहीं हों तो भी काम नहीं चले, शक्तियां नहीं हो तो भी काम नहीं चले, इसीलिए भारत में चतुर्भुज का यादगार है। और कोई भी धर्म में चतुर्भुज नहीं दिखाते लेकिन भारत के यादगार में चतुर्भुज का महत्व है। तो दोनों अच्छा पार्ट बजा रहे हैं लेकिन अभी जल्दी करना है, बस। कभी-कभी थोड़ा ढीला पड़ जाते हैं। अभी ढीले पड़ने का समय नहीं है। बातें तो भिन्न-भिन्न होती ही हैं लेकिन हमें बातों का राज समझ राजयुक्त, योगयुक्त, स्नेहयुक्त, सहयोग युक्त बन चलना है। अच्छा है ना। (दादी जी से) बहुत अच्छा लगता है ना? देखो कितने आये हैं। क्यों आये हैं? यह सभी क्यों आये हैं! आप से मिलने आये हैं। बापदादा से तो मिलने आये हैं लेकिन साथ में दादियां नहीं हों तो कहते हैं ना मजा नहीं आता। और आप सभी नहीं हो तो भी मजा नहीं होता।

(शान्तामणी दादी बीमार है, अहमदाबाद हॉस्पिटल में है, परदादी भी अहमदाबाद में हैं): ठीक है, हिसाब चुकतू करने का कुछ समय है।

नये वर्ष की नवीनता - ‘‘दृढ़ता और परिवर्तन शक्ति से कारण व समस्या शब्द को विदाई दे निवारण व समाधान स्वरूप बनो’’

आज नवयुग रचता बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों से नया वर्ष और नवयुग दोनों की मुबारक देने आये हैं। चारों ओर के बच्चे भी मुबारक देने पहुंच गये हैं। क्या सिर्फ नये वर्ष की मुबारक देने आये हो वा नवयुग की भी मुबारक देने आये हो ? जैसे नये वर्ष की खुशी होती है और खुशियां देते हैं। तो आप ब्राह्मण आत्माओं को नवयुग भी इतना याद है ? नवयुग नयनों के सामने आ गया है ? जैसे नये वर्ष के लिए दिल में आ रहा है कि आया कि आया, ऐसे ही अपने नवयुग के लिए इतना अनुभव करते हो कि आया कि आया ? उस नवयुग की स्मृति इतनी समीप आती है ? वह अपने शरीर रूपी ड्रेस चमकती हुई सामने नज़र आ रही है ? बापदादा डबल मुबारक देते हैं। बच्चों के मन में, नयनों में नवयुग की सीन सीनरियां इमर्ज हैं, कितना अपने नवयुग में तन-मन-धन-जन श्रेष्ठ है, सर्व प्राप्तियों के भण्डार हैं। खुशी है कि आज पुरानी दुनिया में हैं और अभी-अभी अपने राज्य में होंगे! याद है अपना राज्य ? जैसे आज डबल कार्य के लिए आये हो, पुराने को विदाई देने और नये वर्ष को बधाई देने आये हैं। तो सिर्फ पुराने वर्ष को विदाई देने आये हो वा पुरानी दुनिया के पुराने संस्कार, पुराने स्वभाव, पुरानी चाल उसको भी विदाई देने आये हो ? पुराने वर्ष को विदाई देना तो सहज है, लेकिन पुराने संस्कार को विदाई देना भी इतना सहज लगता है ? क्या समझते हो ? माया को भी विदाई देने आये हो वा वर्ष को विदाई देने आये हैं ? विदाई देना है ना! कि थोड़ा प्यार है माया से ? थोड़ा-थोड़ा रखने चाहते हो ?

बापदादा आज चारों ओर के बच्चों से पुराने संस्कार स्वभाव से विदाई दिलाने चाहते हैं। दे सकते हो ? हिम्मत है कि सोचते हो कि विदाई देने चाहते हैं लेकिन फिर माया आ जाती है! क्या आज के दिन दृढ़ संकल्प की शक्ति से पुराने संस्कार को विदाई दे नये युग के संस्कार को, जीवन को बधाई देने की हिम्मत है ? है हिम्मत ? जो समझते हैं हो सकता है, हो सकता है, वा होना ही है, है हिम्मत वाले ? जो समझते हैं हिम्मत है वह हाथ उठाओ। हिम्मत है ? अच्छा जिन्होंने नहीं उठाया है वह सोच रहे हैं ? डबल फॉरेनर्स ने उठाया हाथ, जिसमें हिम्मत है वह हाथ उठाओ, सभी नहीं। अच्छा, डबल फॉरेनर्स तो होशियार हैं। डबल नशा है इसीलिए। देखना, बापदादा हर मास रिजल्ट देखेगा। बापदादा को खुशी है कि हिम्मत वाले बच्चे हैं। चतुराई से जवाब देने वाले बच्चे हैं। क्यों ? क्योंकि जानते हैं कि एक कदम हमारी हिम्मत का और हजारों कदम बाप की मदद का तो मिलना ही है। अधिकारी हो। हजार कदम मदद के अधिकारी हो। सिर्फ हिम्मत को माया हिलाने की कोशिश करती है। बापदादा देखते हैं कि हिम्मत अच्छी रखते हैं, बापदादा दिल से मुबारक भी देते हैं लेकिन हिम्मत रखते फिर साथ में अपने अन्दर ही व्यर्थ संकल्प उत्पन्न कर लेते, कर तो रहे हैं, होना तो चाहिए, करेंगे तो जरूर, पता नहीं.... पता नहीं का संकल्प आना यह हिम्मत को कमजोर कर देता है। तो तो आ जाता है ना, करते तो हैं, करना तो है.. आगे उड़ना तो है..। यह हिम्मत को हिला देते हैं। तो नहीं सोचो, करना ही है। क्यों नहीं होगा! जब बाप साथ है, तो बाप के साथ में तो-तो नहीं आ सकता।

तो इस नये वर्ष में नवीनता क्या करेंगे ? हिम्मत के पांव को मजबूत बनाओ। ऐसी हिम्मत का पांव मजबूत बनाओ जो माया खुद हिल जाये लेकिन पांव नहीं हिले। तो नये वर्ष में नवीनता करेंगे, या जैसे कभी हिलते कभी मजबूत रहते, ऐसे तो नहीं करेंगे ना! आप सभी का कर्तव्य वा आक्यूपेशन क्या है ? अपने को क्या कहलाते हो ? याद करो। विश्व कल्याणी, विश्व परिवर्तक, यह आपका आक्यूपेशन है ना! तो बापदादा को कभी-कभी मीठी-मीठी हंसी आती है। विश्व परिवर्तक टाइल तो है ना! विश्व परिवर्तक हो ? या लण्डन परिवर्तक, इण्डिया परिवर्तक ? विश्व परिवर्तक हो ना, सभी ? चाहे गांव में रहते हैं चाहे लण्डन या अमेरिका में रहते हैं लेकिन विश्व कल्याणकारी हो ना ? हो तो कांध हिलाओ। पक्का ना! कि 75 परसेन्ट हो। 75 परसेन्ट विश्व कल्याणी और 25 परसेन्ट माफ है, ऐसे ? चैलेन्ज क्या है आपकी ? प्रकृति को भी चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी परिवर्तन करना ही है। तो अपना आक्यूपेशन याद करो। कभी-कभी अपने लिए भी सोचते हो - करना तो नहीं चाहिए लेकिन हो जाता है। तो विश्व परिवर्तक, प्रकृति परिवर्तक, स्व परिवर्तक नहीं बन सकते ? तो शक्ति सेना क्या सोचते हो ? इस वर्ष में अपना

आक्यूपेशन विश्व परिवर्तक का स्व प्रति वा अपने ब्राह्मण परिवार प्रति, क्योंकि पहले तो चैरिटी बिगन्स एट होम है ना! तो अपने आक्यूपेशन का प्रैक्टिकल स्वरूप प्रत्यक्ष करेंगे ना। स्व परिवर्तन जो स्वयं भी चाहते हो और बापदादा भी चाहते हैं, जानते तो हो ना! बापदादा पूछते हैं कि आप सभी बच्चों का लक्ष्य क्या है? तो एक ही जवाब देते हैं मैजारिटी कि बाप समान बनना है। ठीक है ना! बाप समान बनना ही है ना, कि देखेंगे, सोचेंगे...! तो बाप भी यही चाहते हैं कि इस नये वर्ष में 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं अब 71 वर्ष में कोई कमाल करके दिखाओ। सब इतनी सेवा के उमंग में भिन्न-भिन्न प्रोग्राम बनाते रहते हैं, सफल भी होते रहते हैं, बापदादा को खुशी भी होती है कि मेहनत जो करते हैं उसकी सफलता मिलती है। व्यर्थ नहीं जाती है लेकिन किसलिए सेवा करते? तो क्या जवाब देते हैं? बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए। तो बाप आज बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, कि बाप को प्रत्यक्ष तो करना ही है, करेंगे ही। लेकिन बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो। बोलो, शिव शक्तियां यह वर्ष स्व को प्रत्यक्ष शिव शक्ति के रूप में करेंगे? करेंगे? जनक बोलो? करेंगे? (करना ही है) साथी, पहली लाइन दूसरी लाइन टीचर्स। टीचर्स हाथ उठाओ जो इस वर्ष में करके दिखायेंगे। करेंगे नहीं, करके दिखाना ही है। अच्छा - सभी टीचर्स ने उठाया या कोई ने नहीं उठाया। अच्छा - मधुबन वाले। करना ही है, करना पड़ेगा। मधुबन वाले क्योंकि मधुबन तो नजदीक है ना। तारीख नोट कर देना, 31 तारीख है। टाइम भी नोट करना (9 बजकर 20 मिनट)। और पाण्डव सेना, पाण्डवों को क्या दिखाना है! विजयी पाण्डव। कभी कभी के विजयी नहीं, है ही विजयी पाण्डव। हैं? दिखाना है इस वर्ष में, कि कहेंगे क्या करें? माया आ गई ना, चाहते नहीं थे आ गई! बापदादा ने पहले भी कहा है माया अपना लास्ट टाइम तक आना बन्द नहीं करेगी। लेकिन माया का काम है आना और आपका काम क्या है? विजयी बनना। तो यह नहीं सोचो, चाहते थोड़ेही हैं लेकिन माया आ जाती है। हो जाता है। अब यह शब्द बापदादा इस वर्ष के साथ, इन शब्दों को विदाई दिलाने चाहते हैं। 12 बजे इस वर्ष को विदाई देंगे ना। तो जो घण्टे बजाओ ना, आज जब घण्टे बजाओ तो किसका घण्टा बजायेंगे? दिन का, वर्ष का या माया की विदाई का घण्टा बजाना। दो बातें हैं - एक तो परिवर्तन शक्ति, उसकी कमजोरी है। प्लैन बहुत अच्छे बनाते हो, ऐसे करेंगे, ऐसे करेंगे, ऐसे करेंगे...। बापदादा भी खुश हो जाते हैं, बहुत अच्छे प्लैन बनाये हैं लेकिन परिवर्तन शक्ति की कमी होने के कारण कुछ परिवर्तन होता है, कुछ रह जाता है। और दूसरी कमी है - दृढ़ता की। संकल्प अच्छे अच्छे करते हो, आज भी देखो कितने कार्ड, कितने अंजाम, कितने वायदे देखे, बापदादा ने देखा है। बहुत पत्र अच्छे-अच्छे आये हैं। (कार्ड पत्र आदि सब स्टेज पर सजे हुए रखे हैं) तो करेंगे, दिखायेंगे, होना ही है, बनना ही है, पदम-पदमगुणा यादप्यार, सब बापदादा के पास पहुंचा है, आप जो सम्मुख बैठे हो, उन्हीं के दिल का आवाज भी बाप के पास पहुंचा। लेकिन अभी बापदादा इन दो शक्तियों के ऊपर अण्डरलाइन करा रहा है। एक दृढ़ता की कमी आ जाती है। कमी का कारण, अलबेलापन, दूसरे को देखने का। हो जायेगा, कर तो रहे हैं, करेंगे, जरूर करेंगे...।

बापदादा यही चाहते हैं कि इस वर्ष एक शब्द को विदाई दो - सदा के लिए। बतायें, बोलें? देनी पड़ेगी। इस वर्ष बापदादा कारण शब्द को विदाई दिलाने चाहते हैं, निवारण हो, कारण खत्म। समस्या खत्म, समाधान स्वरूप। चाहे स्वयं का कारण हो, चाहे साथी का कारण हो, चाहे संगठन का कारण हो, चाहे कोई सरकमस्टांश का कारण हो, ब्राह्मणों की डिक्शनरी में कारण शब्द, समस्या शब्द परिवर्तन हो, समाधान और निवारण हो जाए क्योंकि बहुतों ने आज अमृतवेले भी बापदादा से रूहरिहान में यही बातें की, कि नये वर्ष में कुछ नवीनता करें। तो बापदादा चाहते हैं कि यह नया वर्ष ऐसा मनाओ जो यह दो शब्द समाप्त हो जाएं। पर-उपकारी। स्वयं कारण बनते हैं या दूसरा कोई कारण बनता है, लेकिन **पर-उपकारी आत्मा बन, रहमदिल आत्मा बन, शुभ भावना, शुभ कामना के दिल वाले बन सहयोग दो, स्नेह लो।**

तो इस नये वर्ष को क्या नाम देंगे? पहले हर वर्ष को नाम देते थे, याद है ना? तो बापदादा इस वर्ष को श्रेष्ठ शुभ संकल्प, दृढ़ संकल्प, स्नेह सहयोग संकल्प वर्ष - यह नाम नहीं, लेकिन ऐसा देखने चाहते हैं। दृढ़ता की शक्ति, परिवर्तन की शक्ति को सदा साथी बनाओ। कोई कुछ भी निगेटिव दे लेकिन जैसे आप दूसरों को कोर्स कराते हो निगेटिव को पॉजिटिव में बदली करो, तो क्या आप स्वयं निगेटिव को पॉजिटिव में चेन्ज नहीं कर सकते? दूसरा परवश होता है, परवश पर रहम किया जाता है। आपके जड़ चित्र, आपके ही चित्र है ना। भारत में डबल फॉरेनर्स के भी चित्र हैं ना, जो पूजे जाते हैं? दिलवाला मन्दिर में तो अपना चित्र देखा है ना! बहुत अच्छा। जब आपके जड़

चित्र रहमदिल हैं, कोई भी चित्र के आगे जाते हैं तो क्या मांगते हैं ? दया करो, कृपा करो, रहम करो, मर्सी, मर्सी... तो सदा पहले अपने ऊपर रहम करो, फिर ब्राह्मण परिवार के ऊपर रहम करो, अगर कोई परवश है, संस्कार के वश है, कमजोर है, उस समय बेसमझ हो जाता है, तो क्रोध नहीं करो। क्रोध की रिपोर्ट ज्यादा आती है। क्रोध नहीं तो उसके बाल बच्चों से बहुत प्यार है। रोब, रोब क्रोध का बच्चा है। तो जैसे परिवार में होता है ना, बड़े बच्चों से प्यार कम हो जाता है और पोत्रे धोत्रों से प्यार ज्यादा होता है। तो क्रोध बाप है और रोब और उल्टा नशा, नशे भी भिन्न-भिन्न होते हैं, बुद्धि का नशा, ड्युटी का नशा, सेवा के कोई विशेष कर्तव्य का नशा, यह रोब होता है। तो दयालु बनो, कृपालु बनो। देखो, नये वर्ष में एक दो का मुख मीठा भी करते हैं, बधाई देंगे, तो मुख मीठा भी कराते हैं ना! तो सारा वर्ष कडुवापन नहीं दिखाना। वह मुख मीठा करते आप सिर्फ मुख मीठा नहीं कराते लेकिन आपका मुखड़ा भी मीठा हो। सदा अपना मुखड़ा रूहानियत के स्नेह का हो, मुस्कराने का हो। कडुवापन नहीं। मैजारिटी जब बापदादा से रूहरिहान करते हैं ना तो अपनी सच्ची बात सुना देते हैं और तो कोई सुनता ही नहीं है। तो मैजारिटी की रिजल्ट में और विकारों से क्रोध या क्रोध के बाल बच्चे की रिपोर्ट ज्यादा है।

तो बापदादा इस नये वर्ष में इस कडुवाइस को निकालने चाहते हैं। कईयों ने अपना वायदा भी लिखा है कि चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाता है। तो बापदादा ने कारण सुनाया कि दृढ़ता की कमी है। बाप के आगे संकल्प द्वारा वचन भी लेते हैं, लेकिन दृढ़ता ऐसी शक्ति है जो दुनिया वाले भी कहते हैं शरीर चला जाए लेकिन वचन नहीं जाए। मरना पड़े, झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना पड़े, लेकिन वचन में दृढ़ रहने वाला हर कदम में सफलतामूर्त है क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। चाबी है सभी के पास, लेकिन समय पर गुम हो जाती है। तो क्या विचार है ?

नया वर्ष नवीनता करनी ही है - स्व के, सहयोगियों के और विश्व के परिवर्तन की। पीछे वाले सुन रहे हैं ? तो करना है ना, यह नहीं सोचना पहले तो बड़े करेंगे ना, हम तो छोटे हैं ना। छोटे समान बाप। हर एक बच्चा बाप के अधिकारी है, चाहे पहले बारी भी आये हो लेकिन मेरा बाबा कहा तो अधिकारी है। श्रीमत पर चलने के भी अधिकारी और सर्व प्राप्तिओं के भी अधिकारी। टीचर्स आपस में प्रोग्राम बनाना, फारेन वाले भी बनाना, भारत वाले भी मिलकर बनाना। बापदादा प्राइज़ देंगे, कौन सा ज़ोन, चाहे फॉरेन हो चाहे इण्डिया हो, कौन सा ज़ोन नम्बरवन लेता है, उसको गोल्डन कप देंगे। सिर्फ अपने को नहीं बनाना, साथियों को भी बनाना क्योंकि बापदादा ने देखा कि बच्चों के परिवर्तन बिना विश्व का परिवर्तन भी ढीला हो रहा है। और आत्मायें नये-नये प्रकार के दुःख के पात्र बन रही हैं। दुःख अशान्ति के नये नये कारण बन रहे हैं। तो बाप अभी बच्चों के दुःख की पुकार सुनते हुए परिवर्तन चाहते हैं। **तो हे मास्टर सुखदाता बच्चे, दुःखियों पर रहम करो।** भक्त भी भक्ति कर करके थक गये हैं। भक्तों को भी मुक्ति का वर्सा दिलाओ। रहम आता है कि नहीं ? अपनी ही सेवा में, अपनी ही दिनचर्या में बिजी हैं ? निमित्त हो, ऐसे नहीं बड़े निमित्त हैं, एक एक बच्चा जिसने मेरा बाबा कहा है, माना है वह सब निमित्त हैं। तो नये वर्ष में एक दो को गिफ्ट भी देते हैं ना। तो आप भक्तों की आश पूरी करो उसको गिफ्ट दिलाओ। दुःखियों को दुःख से छुड़ाओ, मुक्तिधाम में शान्ति दिलाओ - यह गिफ्ट दो। ब्राह्मण परिवार में हर आत्मा को दिल के स्नेह और सहयोग की गिफ्ट दो। आपके पास गिफ्ट का स्टॉक है ? स्नेह है ? सहयोग है ? मुक्ति दिलाने की शक्ति है ? जिसके पास स्टॉक बहुत है, वह हाथ उठाओ। है स्टॉक। स्टॉक कम है ? पहली लाइन वालों के पास स्टॉक कम है क्या ? यह बृजमोहन हाथ नहीं उठा रहा है। स्टॉक तो है ना, स्टॉक है ? सभी ने उठाया ? स्टॉक है ? तो स्टॉक रखके क्या कर रहे हो ? जमा करके रखा है! टीचर्स स्टॉक है ना ? तो दो ना, फ्राकदिल बनो। मधुबन वाले क्या करेंगे ? है स्टॉक, मधुबन में है ? मधुबन में तो चारों ओर स्टॉक भरा हुआ है। तो अभी दाता बनो, जमा नहीं करो सिर्फ। दाता बनो, देते जाओ। ठीक है।

अच्छा - बापदादा देखेंगे, हर सप्ताह, हर ज़ोन, अपनी रिजल्ट ओ.के. या ओ.के. में लाइन लगाकर भेजे। अगर नहीं हैं ओ.के. तो, और कुछ नहीं लिखना, पत्र कोई नहीं पढ़ेगा। बहुत लम्बे पत्र भेजते हैं तो पढ़ने की फुर्सत नहीं होती है इसलिए सिर्फ ओ.के. लिखें और ओ.के. नहीं हैं, तो बीच में लाइन लगा दें, बस। उसी से पता पड़ जायेगा कि अभी मार्जिन है। ज़ोन नहीं तो हर एक सेन्टर लिखे, सभी सेवा में, भक्तों की, दुःखियों की, ब्राह्मणों की आपसी, तीनों सेवा में ओ.के. या लाइन। परिवर्तन शक्ति, दृढ़ता की शक्ति अच्छी तरह से यूज़ करना। अच्छा।

सेवा का टर्न, दिल्ली, आगरा का है:- अच्छा है, देखो स्थापना के कार्य में निमित्त पहले दिल्ली बनी, बाम्बे

भी साथ में थोड़ा-थोड़ा बनी, लेकिन दिल्ली स्थापना के कार्य में निमित्त बनी तो स्थापना वाले गोल्डन कप लेने में भी निमित्त बनेंगे ? बनेंगे ? इस बारी बापदादा गोल्डन कप बनवा रहे हैं, कितने लेते हैं वह देखेंगे। लेकिन दिल्ली को नम्बरवन जाना ही है, ऐसे है ना! जायेंगे नहीं, जाना ही है राइट बोल रहे हैं तो हाथ उठाओ। जाना ही है कि देखेंगे, सोचेंगे, गे गे वाले तो नहीं हैं ? बहादुर हैं। देखो, बापदादा और आपकी मम्मा ने डायरेक्ट दिल्ली और बाम्बे की पालना की है। और जगह गये हैं तो थोड़ा-थोड़ा लेकिन दिल्ली और बाम्बे में डायरेक्ट बापदादा, माँ ने पालना दी है। तो दिल्ली वालों को नशा है ना ? तो इसमें भी नम्बरवन, क्या नहीं हो सकता है! दृढ़ निश्चय, निश्चित विजयी बना देता है। दृढ़ता को यूज कम करते हो, देखेंगे, करेंगे, हो जायेगा, यह गे गे आ जाती है। अच्छा है, दिल्ली वालों को एकजैम्पुल बनना चाहिए, जो एकजैम्पुल बनता है उसको फाइनल एकजाम में एक्स्ट्रा मार्क्स मिल जाती हैं। तो मार्क्स लेने वाले हो ना। हो ? टीचर्स लेंगी ? अच्छा। अभी क्या पत्र आयेगा ? ओ.के. का या लाइन वाला ? लाइन वाला नहीं भेजना। ओ.के. भेजेंगे क्योंकि दिल्ली के ऊपर सबकी नज़र तो है ही। सभी ब्राह्मणों को यही है कि दिल्ली में ही राज्य करना है। तो आपको दिल्ली को तो पहले पूरा करना पड़ेगा ना। अच्छा है।

अच्छा और क्या दिल्ली वाले करेंगे ? कोई नया प्लैन बनाया है ? क्योंकि दिल्ली और बाम्बे दोनों आदि से अभी तक कोई न कोई नवीनता के निमित्त बनते आये हैं। तो अभी भी दिल्ली वाले शार्टकट और सफलता ज्यादा, ऐसा कोई प्लैन निकालो, जो सभी करके दिखावें, कर सकें। शार्ट भी हो और सफलता मूर्त भी हो। अच्छा आधी सभा तो दिल्ली लग रही है। संख्या भी बहुत है। तो गोल्डन कप लेने वाले हो ना। बापदादा नाम रख दे पहला नम्बर। रखें ? पीछे वाले, सहयोग सबको देना पड़ेगा। पहले है स्व परिवर्तन, फिर है साथियों का परिवर्तन, साथी माना आपस में 4-5 नहीं, दिल्ली निवासी साथी, फिर है विश्व परिवर्तन, सहयोग देना। तो अच्छा है। एक दो को सहयोग देते हुए, दिल का स्नेह देते हुए बढ़ाते चलो, उड़ाते चलो। अच्छा है, हिम्मत है दिल्ली में। हिम्मत है लेकिन संगठित रूप में हिम्मत प्रत्यक्ष करके दिखाओ। सबकी नज़र दिल्ली के ऊपर जाती है। अच्छा है। सेवा का शौक रखा है, इसकी मुबारक है। अपने पुण्य का खाता जमा कर लिया है। अच्छा।

सिन्धी गुप:- सिन्धी गुप उठो। आप लोगों को एक स्पेशल नशा है, है नशा ? अच्छा नशा, बुरा नहीं अच्छा नशा है कि बापदादा को भी सिन्ध में आना पड़ा, तो सिन्धियों का कुछ भाग्य है ना। आदि रत्न, आदि स्थापना सिंध में हुई और यह गुप बड़ा अच्छा बनाया है। जैसे सोचा है, तो बापदादा ने देखा कि हर वर्ष संगठन रूप में अच्छा गुप बनकर आता है। विशेष एक दो को उमंग दिलाने वाले अच्छे हैं। अब आपका गुप क्या करेगा ? विशेष सिन्धी गुप क्या करेगा ? क्या करेंगे ? कोई कमाल करके दिखाओ ना। सिन्धी सम्मेलन तो करते रहते हो। आपका गुप अच्छा है। और इस गुप का एक-एक विशेष कार्य अर्थ निमित्त बन सकता है क्योंकि मैजारिटी युगल, युगल हैं, अकेले कम हैं। तो जहाँ युगल युगल आते हैं, एकमत हैं, वह सेवा बहुत अच्छी कर सकते हैं। एकजैम्पुल हैं ना। आप लोगों ने छोड़ा नहीं है, परिवार में रहते हैं, एकमत होके चलते हैं तो आपके थोड़े से बोल भी सेवा कर सकते हैं। अभी अपना गुप थोड़ा बढ़ाओ। अभी छोटा भी नहीं है, बीच का है, अभी थोड़ा और बढ़ाओ। उमंग उल्हास में लाओ। जैसे एक वर्ष में एक बारी आते हो ऐसे और नामीग्रामी जो सेवा के निमित्त बन सकें, ऐसे और भी अपने गुप में एड करो। (दादी जानकी ने सुनाया कि यह दादाराम, दादा रत्नचन्द का मोस्टली परिवार है जो सारे विश्व में फैला हुआ है) हाँ यह प्रसिद्ध परिवार है और देखो दोनों परिवार के जो निमित्त बनें, एक रत्नचन्द की विशेषता - कुछ नहीं सोचा, स्वाहा। उमंग-उत्साह दिखाया। ब्रह्मा बाप को फॉलो किया। तो आज उसका परिवार उसकी दुआओं से बहुत अच्छा चल रहा है और राम सावित्री दिल से सेवा के निमित्त बनें। समय पर गुप्त सहयोगी बनें, उसकी दुआयें परिवार को हैं। काम उसने किया और नाम परिवार को दिया है। यह उन्हों का त्याग है। उसके त्याग का भाग्य आपको प्राप्त हो रहा है। संगठन अच्छा है, आपका गुप बापदादा को पसन्द है। अच्छा। मुबारक हो। सभी परिवार की तरफ से भी बापदादा की तरफ से भी मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

डबल विदेशी बच्चों की रिट्रीट चल रही है: (बच्चे गीत गा रहे हैं - बाबा का बच्चों से, बच्चों का बाबा से प्यार है ना) अच्छा है। जैसे बच्चे उमंग-उत्साह में अपना प्रोग्राम यहाँ कर रहे हो, वैसे अपने-अपने शहरों में भी बच्चों का गुप बढ़ाओ। जो बच्चा ज्यादा में ज्यादा बच्चों का गुप तैयार करेंगे, उसको प्राइज़ देंगे। बापदादा को भी बच्चे अच्छे लगते हैं क्योंकि बच्चे दिल के सच्चे हैं। अच्छा - कभी क्रोध तो नहीं करते बच्चे, कभी-कभी करते हो ? थोड़ा-

थोड़ा करते हो ? तो इस वर्ष अपने अपने सेन्टर में अपनी रिजल्ट लिखाना फिर वह टीचर लिख करके भेजेगी कि इन बच्चों ने सारा साल क्रोध नहीं किया। और बहुत अच्छा पुरुषार्थ किया फिर प्राइज़ देंगे। अच्छा।

डबल विदेशी:- फारेनर्स वृद्धि भी कर रहे हैं और भिन्न-भिन्न देश जो रहे हुए हैं, उसमें उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं, यह बापदादा को खुशी है कि प्रैक्टिकल रहमदिल बन आत्माओं के ऊपर रहम कर रहे हैं। सेवा का उमंग भी है और सेवा का प्रत्यक्ष रूप भी दिखा रहे हैं। अभी डबल तीव्र पुरुषार्थ कर गोल्डन कप फॉरेन वाले लेवें। ले सकते हैं। सभी की तरफ से ईमेल आयेगा आपके पास, ओ.के. ओ.के, ज्यादा नहीं आयेगा। पढ़ना पड़ता है ना आपको। (दादी जानकी को), बस सिर्फ ओ.के. बाप भी ओ.के. वालों को गुप्त में बहुत स्नेह की दुआओं की वर्षा करते हैं। वाह! बच्चे वाह! का गीत गाते हैं। चाहे भारत वाले, चाहे विदेश वाले लेकिन कोई-कोई बच्चे गुप्त रीति से तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और बापदादा के पास लिस्ट भी है, भारत में भी है विदेश में भी है लेकिन बापदादा अभी बहुतकाल देखने चाहता है, कर रहे हैं लेकिन बहुतकाल चाहिए। तो बहुतकाल बापदादा नोट कर रहे हैं, कि बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी कौन कौन हैं। बीच-बीच में अगर ढीले हो जाते हैं तो बहुतकाल तो कट हो जाता है ना इसीलिए बापदादा लिस्ट निकाल रहा है, अभी थोड़े हैं। बनना तो सबको है। भारत वालों को भी बनना है, विदेश वालों को भी बनना है लेकिन कोई कोई गुप्त अच्छे है। बापदादा गिनती करते रहते हैं, कितने बच्चे हैं ऐसे। अभी बहुतकाल पर अटेन्शन रखो। क्योंकि बहुतकाल के विजयी बहुतकाल का फुल आधा कल्प के राज्यभाग्य के अधिकारी बनेंगे। अगर बीच बीच में किया, आधा समय किया, पौना समय किया तो प्राप्ति राज्य भाग्य की भी इतनी होगी। इसीलिए बापदादा डबल विदेशियों को विशेष थैंक्स भी देते हैं अटेन्शन है, लेकिन बीच बीच में टेन्शन भी आ जाता है। अभी टेन्शन खत्म, अटेन्शन। ऐसी लिस्ट में आ जाओ, बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी। कभी-कभी वाले नहीं, लगातार। ठीक है ना। हैं, बापदादा देखते हैं कि उम्मीदवार सितारे हैं। प्रैक्टिकल स्टेज पर आ जायेंगे। ठीक है ना। है ना ऐसे! उम्मीदवार सितारे हैं ना। बाप की आशाओं के सितारे बच्चे हैं। अच्छा। मुबारक हो, मुबारक हो।

इन्टरनेशनल यूथ ग्रुप:- यूथ ग्रुप की विशेषता यह प्रसिद्ध है कि यूथ जो चाहे वह कर सकते हैं। तो इस वर्ष आप यूथ ग्रुप क्या संकल्प पूरा करेंगे ? जो बापदादा ने कहा है - वह यूथ ग्रुप करके दिखायेंगे! करेंगे ? निवारण स्वरूप। कारण नहीं, निवारण स्वरूप। समाधान स्वरूप। आपस में लेन-देन करते रहते हैं ना। तो यह लक्ष्य रखके जाओ कि बहुतकाल समाधान स्वरूप बनके ही उड़ना है। कारण आयेंगे लेकिन आप यूथ में ताकत है कारण को निवारण में चेंज करना। क्या करें, कारण है ना, यह यूथ नहीं बोल सकता। शक्तिवान हो। तो ठीक है यह होम वर्क करेंगे! करेंगे होमवर्क ? अच्छा रिजल्ट लिखते रहना। ओ.के. ओ.के. की रिजल्ट लिखना। अच्छा है। बापदादा को यूथ ग्रुप में बहुत अच्छी आशाएँ हैं। कर रहे हैं, प्लैन बना रहे हैं अब प्रैक्टिकल में करके दिखाओ, जो भी आपको देखे कहे यह तो फरिश्ता है। फरिश्ता फरिश्ता दिखाई दो। फरिश्ते की चाल उड़ती कला। नीचे ऊपर नहीं। उड़ने वाले और उड़ाने वाले। कमजोर को भी उड़ाने वाले। नीचे आने वाले नहीं। तो ऐसा प्लैन बनाया है! ऐसा सोचा है ? कोई कमाल करके दिखाना। बाकी अच्छा है हर वर्ष मिलते हो, यह बहुत अच्छा। उमंग उल्हास बढ़ता है। अभी की रिजल्ट भी सुनी है, कुछ बनाया है ना, चिटकियां लिखी हैं, वह भी सुना है। यह अच्छा बनाया है। अच्छा पुरुषार्थ किया है। अभी सभी की यह चिटकी नीचे गिरे कि अच्छे ते अच्छे हैं। परसेन्टेज नहीं, अच्छे ते अच्छे। हो सकता है बड़ी बात नहीं है। अच्छा। (सबने वायदा किया है कि बाबा की आश पूरा करेंगे, विदेश और भारत में साथ-साथ सेवा करेंगे, ऐसा संकल्प है, इसका प्लान बनायेंगे) अच्छा है।

अच्छा - मधुबन के आप सभी श्रृंगार हो। देखो आप जब आते हो मधुबन में तो कितना मधुबन सज जाता है। मधुबन में आना अच्छा लगता है ना कि मुश्किल लगता है ? मेहनत लगती है ? लगती है मेहनत या खुशी होती है ?

अच्छा। अभी हर एक अपने को मन के मालिक अनुभव कर एक सेकण्ड में मन को एकाग्र कर सकते हो ? आर्डर कर सकते हो ? एक सेकण्ड में अपने स्वीट होम में पहुंच जाओ। एक सेकण्ड में अपने राज्य स्वर्ग में पहुंच जाओ। मन आपका आर्डर मानता है वा हलचल करता है ? मालिक अगर योग्य है, शक्तिवान है, तो मन नहीं माने, हो नहीं सकता। तो अभी अभ्यास करो एक सेकण्ड में सभी अपने स्वीट होम में पहुंच जाओ।

यह अभ्यास सारे दिन में बीच-बीच में करने का अटेन्शन रखो। मन की एकाग्रता स्वयं को भी और वायुमण्डल को भी पावरफुल बनाती है। अच्छा।

चारों ओर के अति सर्व के स्नेही, सर्व के सहयोगी श्रेष्ठ आत्माओं को, चारों ओर के विजयी बच्चों को, चारों ओर के परिवर्तन शक्तिवान बच्चों को, चारों ओर के सदा स्वयं को प्रत्यक्ष कर बाप को प्रत्यक्ष करने वाले बच्चों को, सदा समाधान स्वरूप विश्व परिवर्तक बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिल की दुआयें स्वीकार हों। साथ में सभी बच्चों को जो बाप के भी सिरताज हैं, ऐसे सिरताज बच्चों को बापदादा की नमस्ते।

दादियों से:- (दादी जी से):- सभी आपका मुस्कराता हुआ चेहरा देखना चाहते हैं। देखो सभी मुस्करा रहे हैं, आपको देखकरके सब मुस्करा रहे हैं। अच्छा है, सभी को दिल से स्नेह दिया है, इसलिए सभी के दिल का स्नेह है और स्नेह आपको लिफ्ट माफिक आगे बढ़ा रहा है। सीढ़ी नहीं चढ़ने वाली हो, लिफ्ट में पहुंच जाओगी। सब दादियों को देखकर खुश होते हैं ना। क्योंकि दादियों ने निःस्वार्थ सेवा की है। हर एक को दिल की दुआओं से पालना की है। चाहे साथ रहते हैं, चाहे दूर रहते हैं, लेकिन दुआओं की, स्नेह की, एक सेकण्ड की दुआओं की दृष्टि या दुआओं भरा संकल्प पालना कर देता है। तो आप सभी को दिल होती है ना दादियों की दृष्टि मिले, दादियों की दृष्टि मिले। तो यह विशेषता जो दादियों ने आपको दी, उससे आप भी सेकण्ड में किसी को स्नेह देकर खुश कर दो। कैसा भी कोई हो लेकिन स्नेह दिल का, सिर्फ बोल का नहीं, बाहर का नहीं लेकिन दिल का स्नेह किसी को भी स्नेही बना सकता है। जैसे दादियां जल्दी से दिलशिकस्त नहीं होती - यह तो बदलना ही नहीं है, यह तो होना ही नहीं है। सदा शुभ उम्मीदें रखती हैं, बापदादा को फॉलो किया। बापदादा के पास पहले बारी जब आप आये तो कैसे आये थे, 63 जन्म के पाप इकट्ठे किये हुए आये, लेकिन बापदादा ने आशाओं के दीपक समझ चमकता हुआ सितारा बना दिया। न घृणा रखी, न दिलशिकस्त हुए, ऐसे आप भी इस वर्ष किसी से भी न दिलशिकस्त होना, न थकना, स्नेह और सहयोग देते रहना। पॉजिटिव में परिवर्तन करते रहना, निगेटिव नहीं देखना। तो देखना इस वर्ष में ही समय को समीप ले आयेंगे। ऐसा वायुमण्डल बनाओ। कहाँ भी किसी के प्रति कोई भाव और नहीं, शुभ भावना शुभ कामना। गिरे हुए परवश आत्माओं को अपना सहयोग देके उठाओ। सब उठके उड़ेंगे। सबको नज़र आयेंगे फरिश्ते ही फरिश्ते घूम रहे हैं। यह साक्षात्कार होना है। अनुभव करेंगे पता नहीं कहाँ फरिश्तों का झुण्ड सृष्टि पर आ गया है हमको उठाने के लिए। एक दो को देखो ही फरिश्ते स्वरूप में। यह फलाना है, फलाना है नहीं, फरिश्ता है। ठीक है। दादियों से यह सीखो। शुभ भावना, शुभ कामना दो, स्टाक है आपके पास, लेकिन देने में दाता कम बनते हो। निगेटिव न देखो, न सुनो, न बोलो, न सोचो। उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते रहो और उड़ते रहो। अच्छा है ना, दादियां स्टेज पर आती हैं, सबके चेहरे मुस्कराने लगते हैं। अच्छा।

(दादी बाबा को कह रही हैं - बाबा सबका आपसे बहुत प्यार है) आपसे भी सबका हजारगुणा ज्यादा प्यार है।

तीनों बड़े भाईयों से:- मधुबन के बिना तो गति ही नहीं है। आपसे भी पाण्डवों से, ऐसे उन्हीं को फीलिंग आये, यह दादियों को फॉलो करने वाले हैं। फॉलो बाप को करते हैं लेकिन निमित्त आप सबसे फीलिंग आवे कि यह हमको देने वाले हैं, सहयोग देने वाले हैं, दिल का स्नेह देने वाले हैं। कभी भी कोई दिलशिकस्त हो, तो समझें यह हमको सहयोग देने वाले हैं। अभी इस रूप को प्रत्यक्ष करो। अन्दर होगा लेकिन अभी प्रत्यक्ष करो। ठीक है ना। कमाल करेंगे, पाण्डव कम थोड़ेही हैं। पाण्डवों का गायन भी विशेष है। साथी पाण्डव दिखाये गये हैं। शक्तियों को मैदान में दिखाया गया है लेकिन पाण्डव साथी दिखाये गये हैं। साथ देने वाले और साथ रहने वाले, बाप के साथ रहने वाले और सर्व को साथ देने वाले। ठीक है।

(रमेश भाई से) तबियत ठीक है, सम्भाल करो। (गोलक भाई से) अथक है ना या थक जाते हो। खिटखिट होती है लेकिन खिटखिट को खुशी के रूप में परिवर्तन करो। माला है ना। नम्बरवन और लास्ट कुछ तो अन्तर होगा ना, सब एक जैसे तो नहीं होंगे। ठीक है। ठीक चल रहा है।

2006 वर्ष की विदाई और 2007 की बधाई

(रात्रि 12 बजे के बाद बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष की बधाई वा मुबारक दी)

सभी को नये वर्ष की पदम-पदमगुणा बधाईयां भी हों, दिल की दुआयें भी हैं और दिलाराम के दिल की यादप्यार भी है। सदा इस वर्ष में उड़ते रहना और उड़ते रहना। सभी आत्माओं को अपने मन की कामनायें पूर्ण करने वाले दाता के बच्चे मास्टर दाता बन सुख, शान्ति, प्यार, दुआयें देते रहना और हर एक को बाप का परिचय देते हुए मुक्ति का वर्सा देते रहना। अच्छा - विदाई और बधाई के संगम का विशेष यादप्यार।

“अब स्वयं को मुक्त कर मास्टर मुक्तिदाता बन सबको मुक्ति दिलाने के निमित्त बनो”

आज स्नेह के सागर बापदादा चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। दो प्रकार के बच्चे देख-देख हर्षित हो रहे हैं। एक हैं लवलीन बच्चे और दूसरे हैं लवली बच्चे, दोनों के स्नेह की लहरें बाप के पास अमृतवेले से भी पहले से पहुँच रही हैं। हर एक बच्चे के दिल से ऑटोमेटिक गीत बज रहा है - “मेरे बाबा”। बापदादा के दिल से भी यही गीत बजता - “मेरे बच्चे, लाडले बच्चे, बापदादा के भी सिरताज बच्चे”।

आज स्मृति दिवस के कारण सबके मन में स्नेह की लहर ज्यादा है। अनेक बच्चों की स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पिरो रही हैं। बाप भी अपने स्नेही बांहों की माला बच्चों को पहना रहे हैं। बेहद के बापदादा की बेहद की बांहों में समा गये हैं। आज सब विशेष स्नेह के विमान में पहुँच गये हैं और दूर-दूर से भी मन के विमान में अव्यक्त रूप से, फरिश्तों के रूप से पहुँच गये हैं। सभी बच्चों को बापदादा आज स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस की पदमापदम याद दे रहे हैं। यह दिवस कितनी स्मृतियाँ दिलाता है और हर स्मृति सेकण्ड में समर्थ बना देती है। स्मृतियों की लिस्ट सेकण्ड में स्मृति में आ जाती है ना। स्मृति सामने आते समर्थी का नशा चढ़ जाता है। पहली-पहली स्मृति याद है ना! जब बाप के बने तो बाप ने क्या स्मृति दिलाई? आप कल्प पहले वाली भाग्यवान आत्मा हो। याद करो इस पहली स्मृति से क्या परिवर्तन आ गया? आत्म अभिमानी बनने से परमात्म बाप के स्नेह का नशा चढ़ गया। क्यों नशा चढ़ा? दिल से पहला स्नेह का शब्द कौन सा निकला? “मेरा मीठा बाबा” और इस एक गोल्डन शब्द निकलने से नशा क्या चढ़ा? सारी परमात्म प्राप्तियाँ मेरा बाबा कहने से, जानने से, मानने से आपकी अपनी प्राप्तियाँ हो गईं। अनुभव है ना! मेरा बाबा कहने से कितनी प्राप्तियाँ आपकी हो गईं! जहाँ प्राप्तियाँ होती हैं वहाँ याद करनी नहीं पड़ती लेकिन स्वतः ही आती है, सहज ही आती है क्योंकि मेरी हो गई ना! बाप का खजाना मेरा खजाना हो गया, तो मेरापन याद किया नहीं जाता है, याद रहता ही है। मेरा भुलाना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। जैसे अनुभव है मेरा शरीर, तो भूलता है? भुलाना पड़ता है, क्यों? मेरा है ना! तो जहाँ मेरापन आता है वहाँ सहज याद हो जाती है। तो स्मृति ने समर्थ आत्मा बना दिया। एक शब्द मेरा बाबा ने। भाग्य विधाता अखुट खजाने के दाता को मेरा बना लिया। ऐसी कमाल करने वाले बच्चे हो ना! परमात्म पालना के अधिकारी बन गये, जो परमात्म पालना सारे कल्प में एक बार मिलती है, आत्मायें और देव आत्माओं की पालना तो मिलती है लेकिन परमात्म पालना सिर्फ एक जन्म के लिए मिलती है।

तो आज के स्मृति सो समर्थी दिवस पर परमात्म पालना का नशा और खुशी सहज याद रही ना! क्योंकि आज का वायुमण्डल सहज याद का था। तो आज के दिन सहजयोगी रहे कि आज के दिन भी युद्ध करनी पड़ी याद के लिए? क्योंकि आज का दिन स्नेह का दिन कहेंगे ना, तो स्नेह मेहनत को मिटा देता है। स्नेह सब बातें सहज कर देता है। तो सभी आज के दिन विशेष सहजयोगी रहे या मुश्किल आई? जिसको आज के दिन मुश्किल आई हो वह हाथ उठाओ। किसको भी नहीं आई? सब सहजयोगी रहे। अच्छा जो सहजयोगी रहे वह हाथ उठाओ। अच्छा - सहजयोगी रहे? आज माया को छुट्टी दे दी थी। आज माया नहीं आई? आज माया को विदाई दे दी? अच्छा आज तो विदाई दे दी, उसकी मुबारक हो, अगर ऐसे ही स्नेह में समाये रहो तो माया को तो विदाई सदा के लिए हो जायेगी क्योंकि अभी 70 साल पूरे हो रहे हैं, तो बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, सर्व का प्यारा वर्ष, मेहनत से मुक्त वर्ष, समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। आप सभी को पसन्द है? पसन्द है? मुक्त वर्ष मनायेंगे? क्योंकि मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दुःखी अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप से साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना! क्योंकि आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो। एक भाषा जो मुक्ति दिलाने के बजाए बंधन में बांधती है, समस्या के अधीन बनाती है, वह है ऐसा नहीं, वैसा। वैसा नहीं ऐसा। जब समस्या आती है तो यही कहते हैं बाबा ऐसा नहीं था, वैसा था ना।

ऐसा नहीं होता, ऐसा होता ना। यह है बहाने बाजी करने का खेल।

बापदादा ने सबका फाइल देखा, तो फाइल में क्या देखा ? मैजॉरिटी का फाइल प्रतिज्ञा करने के पेपर से फाइल भरा हुआ है। प्रतिज्ञा करने के टाइम बहुत दिल से करते हैं, सोचते भी हैं लेकिन अभी तक देखा कि फाइल बड़ा होता जाता है लेकिन फाइल नहीं हुआ है। दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए कहा हुआ है - जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। तो बापदादा ने आज सबके फाइल देखे। बहुत प्रतिज्ञायें अच्छी-अच्छी की है। मन से भी की है और लिख करके भी की है। तो इस वर्ष क्या करेंगे ? फाइल को बढ़ायेंगे या प्रतिज्ञा को फाइल करेंगे ? क्या करेंगे ? पहली लाइन वाले बताओ, पाण्डव सुनाओ, टीचर्स सुनाओ। इस वर्ष जो बापदादा के पास फाइल बड़ा होता जाता है, उसको फाइल करेंगे या इस वर्ष भी फाइल में कागज एड करेंगे ? क्या करेंगे ? बोलो पाण्डव ? फाइल करेंगे ? जो समझते हैं - झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना भी पड़े, सुनना भी पड़े, लेकिन बदलना ही है, वह हाथ उठाओ। देखो टी.वी. में सबका फोटो निकालो। सभी का फोटो निकालना, दो तीन चार टी.वी. हैं, सब तरफ के फोटो निकालो। यह रिकार्ड रखना, बाप को यह फोटो निकाल के देना। कहाँ है टी.वी. वाले ? बापदादा भी फाइल का फायदा तो उठावे। मुबारक हो, मुबारक हो, अपने आपके लिए ही ताली बजाओ।

देखो जैसे एक तरफ साइन्स दूसरे तरफ भ्रष्टाचारी, तीसरे तरफ पापाचारी, सब अपने-अपने कार्य में और वृद्धि करते जा रहे हैं। बहुत नये-नये प्लैन बनाते जाते हैं। तो आप तो क्रियेटर के बच्चे हो, वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चे हो तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ जो प्रतिज्ञा दृढ़ हो जाए क्योंकि सभी प्रत्यक्षता चाहते हैं। कितना खर्चा कर रहे हैं, जगह-जगह पर बड़े-बड़े प्रोग्राम कर रहे हैं। हर एक वर्ग मेहनत अच्छी कर रहे हैं लेकिन अभी इस वर्ष यह एडीशन करो कि जो भी सेवा करो, मानो मुख की सेवा करते हो, तो सिर्फ मुख की सेवा नहीं, मन्सा वाचा और स्नेह सहयोग रूपी कर्म एक ही समय में तीन सेवायें इकट्ठी हों। अलग-अलग नहीं हों। एक सेवा में देखा जाता है कि जो बापदादा रिजल्ट देखने चाहते हैं वह नहीं होती। जो आप भी चाहते हो, प्रत्यक्षता हो जाए, अभी तक यह रिजल्ट अच्छी है। पहले से बहुत अच्छी रिजल्ट है, सब अच्छा अच्छा, बहुत अच्छा कहके जाते हैं। लेकिन अच्छा बनना अर्थात् प्रत्यक्षता होना। तो अब एडीशन करो कि एक ही समय पर मन्सा-वाचा-कर्मणा में स्नेही सहयोगी बनना, हर एक साथी चाहे ब्राह्मण साथी हैं, चाहे बाहर वाले सेवा के निमित्त जो बनते हैं, वह साथी हों लेकिन सहयोग और स्नेह देना यह है कर्मणा सेवा में नम्बर लेना। यह भाषा नहीं कहना, यह ऐसा किया ना, तभी ऐसा करना पड़ा। स्नेह के बजाए थोड़ा-थोड़ा कहना पड़ा, बाबा शब्द नहीं बोलता। यह करना ही पड़ता है, कहना ही पड़ता है, देखना ही पड़ता है... यह नहीं। इतने वर्षों में देख लिया, बापदादा ने छुट्टी दे दी। ऐसा नहीं वैसा करते रहे, लेकिन अभी कब तक ? बापदादा से सभी रुहरिहान में मैजॉरिटी कहते हैं बाबा आखिर भी पर्दा कब खोलेंगे ? कब तक चलेगा ? तो बापदादा आपको कहते हैं कि यह पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कडुवेपन की कब तक ? बापदादा का भी क्वेश्चन है कब तक ? आप उत्तर दो तो बापदादा भी उत्तर देगा कब तक विनाश होगा। क्योंकि बापदादा विनाश का पर्दा तो अभी भी खोल सकता है, इस सेकण्ड लेकिन पहले राज्य करने वाले तो तैयार हों। तो अब से तैयारी करेंगे तब समाप्ति समीप लायेंगे। किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो, यह कारण था ना। बापदादा सारे दिन में बच्चों का खेल तो देखते हैं ना, बच्चों से प्यार है ना, तो बार-बार खेल देखते रहते हैं। बापदादा की टी.वी. बहुत बड़ी है। एक समय पर वर्ल्ड दिखाई दे सकती है, चारों ओर के बच्चे दिखाई दे सकते हैं। जैसे अमेरिका हो, चाहे गुडगांव हो, सब दिखाई देते हैं। तो बापदादा खेल बहुत देखते हैं। टालने की भाषा बहुत अच्छी है, यह कारण था ना, बाबा मेरी गलती नहीं है, ऐसा किया ना। उसने तो किया लेकिन आपने समाधान किया ? कारण को कारण ही बनने दिया या कारण को निवारण में बदली किया ? तो सभी पूछते हैं ना कि बाबा आपकी क्या आशा है। तो बापदादा आशा सुना रहे हैं। बापदादा की एक ही आशा है निवारण दिखाई देवे, कारण खत्म हो जाए। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे। हो सकता है ? हो सकता है ? पहली लाइन - हो सकता है ? कांध तो हिलाओ। पीछे वाले हो सकता है ? हो सकता है ? अच्छा। तो कल अगर टी.वी. खोलेंगे, टी.वी में देखेंगे जरूर ना। तो कल टी.वी. देखेंगे तो चाहे फारेन चाहे इन्डिया, चाहे छोटे गांव चाहे बहुत बड़ी स्टेट, कहाँ भी कारण दिखाई नहीं देगा ? पक्का ? इसमें हाँ नहीं कर रहे हैं ? होगा ? हाथ उठाओ। हाथ बहुत अच्छा

उठाते हो, बापदादा खुश हो जाता। कमाल है हाथ उठाने की। खुश करना तो आता है बच्चों को। क्योंकि बापदादा देखते हैं सोचो - जो आप कोटों में कोई, कोई में कोई निमित्त बने हो, अभी इन बच्चों के सिवाए और कौन करेगा? आपको ही तो करना है ना! तो बापदादा की आप बच्चों में उम्मीदें हैं। और आयेंगे ना, वह तो आपकी अवस्था देख करके ही ठीक हो जायेंगे, उन्हीं को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप बन जाओ बस क्योंकि आप सभी ने जन्म लेते ही बाप से वायदा किया है - साथ रहेंगे, साथी बनेंगे और साथ चलेंगे और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आयेंगे। यह वायदा किया है ना? जब साथ रहेंगे, साथ चलेंगे तो साथ में सेवा के साथी भी तो हो ना!

तो अभी क्या करेंगे? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया, बापदादा खुश हो गये लेकिन जब भी कोई बात आवे ना तो यह दिन, यह तारीख, यह टाइम याद करना तो हमने क्या हाथ उठाया था। मदद मिल जायेगी। बनना तो पड़ेगा आपको। अभी सिर्फ जल्दी बन जाओ। आप सोचते हो ना, हम ही कल्प पहले भी थे, अभी भी हैं और हर कल्प हमें ही बनना है, यह तो पक्का है ना कि दो साल बनेंगे तीसरे साल जायेंगे, ऐसे तो नहीं होगा। तो सदा याद रखो हम ही निमित्त हैं, हम ही कोटों में कोई, कोई में कोई हैं। कोटो में कोई तो आयेंगे लेकिन आप कोई में कोई हो।

तो आज स्नेह का दिन है, तो स्नेह में कुछ भी करना मुश्किल नहीं होता। इसलिए बापदादा आज ही सभी को याद दिला रहे हैं। शिवबाबा को, ब्रह्मा बाबा से कितना बच्चों का प्यार है, यह देख करके बहुत खुशी होती है। चारों ओर देखा चाहे सप्ताह का स्टूडेंट है, चाहे 70 साल वाला है। 70 साल वाला और 7 दिन वाला भी आज के दिन प्यार में समाया हुआ है। तो शिव बाप भी ब्रह्मा बाप से बच्चों का प्यार देख करके हर्षित होते हैं।

आज के दिन का और समाचार सुनायें। आज के दिन एडवान्स पार्टी भी बापदादा के पास इमर्ज होती है। तो एडवांस पार्टी भी आपको याद कर रही है कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे! आज सारी एडवांस पार्टी बापदादा को यही कह रही थी कि हमको तारीख बताओ। तो क्या जवाब दें? बताओ क्या जवाब दें? जवाब देने में कौन होशियार है? बापदादा तो यही उत्तर देते हैं कि जल्द से जल्द हो ही जायेगा। लेकिन इसमें आप बच्चों का बाप को सहयोग चाहिए। सभी साथ चलेंगे ना! साथ चलने वाले हैं या रुक-रुक कर चलने वाले हैं? साथ में चलने वाले हैं ना! पसन्द है ना साथ में चलना? तो समान तो बनना पड़ेगा ना। अगर साथ में चलना है तो समान तो बनना ही पड़ेगा ना! कहावत क्या है? हाथ में हाथ हो, साथ में साथ हो। तो हाथ में हाथ अर्थात् समान। तो बोलो दादियां बोलो, तैयारी हो जायेगी? दादियां बोलो। दादियां हाथ उठाओ। दादायें हाथ उठाओ। आपको कहा जाता है ना बड़े दादा। तो बताओ दादियां, दादायें क्या तारीख है कोई? (अभी नहीं तो कभी नहीं) अभी नहीं तो कभी नहीं का अर्थ क्या हुआ? अभी तैयार है ना! जवाब तो अच्छा दिया। दादियां? पूरा होना ही है। हर एक अपने को जिम्मेवार समझे। छोटे बड़े, इसमें छोटे नहीं होना है। 7 दिन का बच्चा भी जिम्मेवार है। क्यों साथ चलना है ना। अकेला बाप जाने चाहे तो चला जाए लेकिन बाप जा नहीं सकता। साथ चलना है। वायदा है बाप का भी और आप बच्चों का भी। वायदा तो निभाना है ना! निभाना है ना? यह मधुबन वाले बैठते हैं ना!

मधुबन में जो भी चार्ज के हेडस हैं, चार्ज तो बहुत हैं ना, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन सब जगह हैं। तो जो चार्ज वाले हैं उनके नामों की लिस्ट बापदादा को देना, उनसे हिसाब लेंगे। और जो सभी टीचर्स इन्चार्ज हैं, सेन्टर इन्चार्ज हैं या जोन इन्चार्ज है, उन्हीं का एक दिन संगठन करेंगे, हिसाब-किताब तो पूछेंगे ना! क्योंकि बापदादा के पास बहुत दुःख और अशान्ति के आवाज आते हैं। परेशानी के आवाज आते हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते, आपके भी तो भक्त होंगे ना! तो भक्तों की पुकार आप इष्ट देवों को नहीं आती? टीचर्स को भक्तों की आवाज सुनाई देती है? अच्छा।

महाराष्ट्र जोन, बम्बई और आंध्रप्रदेश के सेवाधारी:- अच्छा सभी चांस अच्छा ले लेते हैं। नाम ही महाराष्ट्र है। अच्छी संख्या आई है। तो महाराष्ट्र अर्थात् महान आत्माओं का राष्ट्र है। तो बापदादा देखते हैं कि महाराष्ट्र में बापदादा के महान बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे हैं क्योंकि बापदादा की नज़र, महाराष्ट्र के बाम्बे और दिल्ली में ज्यादा है। बाम्बे नरदेसावर है और दिल्ली आवाज बुलन्द करने के निमित्त है और ड्रामानुसार महाराष्ट्र बाम्बे या आसपास और दिल्ली दोनों को साकार ब्रह्मा बाप और जगदम्बा की पालना मिली है। विशेष पालना मिली है। तो कोई भी कार्य होता है तो बापदादा महाराष्ट्र और दिल्ली को याद करते हैं। बाकी जो भी हैं वह तो साथी बन ही जाते हैं। दूसरे छोटे

ज़ोन नहीं हैं, दूसरे भी बड़े बड़े ज़ोन हैं लेकिन साकार पालना के लिए विशेष बापदादा दिल्ली और बाम्बे को याद करते हैं। छोटे ज़ोन भी कमाल कर सकते हैं, छोटे को हमेशा बापदादा कहता है बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान बाप हैं। अभी महाराष्ट्र को कुछ महान कार्य करना पड़ेगा। अभी बहुत टाइम हो गया है कोई नये कार्य की इन्वेन्शन नहीं निकाली है। वर्गीकरण का कार्य भी अभी काफी टाइम चल चुका, कान्फ्रेंसेज भी चल चुकी, यूथ यात्रायें भी चल गईं। अभी कोई नई सेवा की विधि निकालो। सोचो। जिससे आवाज सहज फैल जाये। अभी तक जो भी किया है, सेवा के प्लैन बापदादा को पसन्द हैं और वृद्धि भी हुई है। लेकिन बहुत समय यह प्रोग्रामस चल चुके। अभी कोई नई इन्वेन्शन तैयार करो। कोई भी करे, छोटे करे तो इनएडवांस मुबारक हैं। अच्छा है महाराष्ट्र में भी वृद्धि अच्छी हो रही है। अभी महाराष्ट्र का टर्न है तो महाराष्ट्र क्यों नहीं नम्बरवन में बाप के स्नेह का रिटर्न देवे। बापदादा ने सुना दिया है - बापदादा को स्नेह का रिटर्न है - स्वयं को और विश्व को टर्न करना। बस रिटर्न में रि निकाल दो तो टर्न हो जायेगा क्योंकि बापदादा को बच्चों में बहुत-बहुत, अच्छी-अच्छी उम्मीदें हैं, उम्मीदवार हो। तो क्या करेगा महाराष्ट्र ? रिटर्न देगा ? अच्छा है, अच्छे अच्छे महारथी हैं महाराष्ट्र में। संगठित रूप में मीटिंग करो, चारों ओर महाराष्ट्र में बापदादा ने देखा है उम्मीदवार सितारे हैं। जो चाहे वह कर सकते हैं। तो ऐसे संगठित रूप में प्रोग्राम करना और नया कोई प्लैन बनाना, कर सकते हैं। महाराष्ट्र कर सकता है। करेंगे ना! अरे नाम ही महाराष्ट्र है तो महान कार्य करना ही है ना! क्या समझते हैं पाण्डव ? करेंगे ? पाण्डव सेना करेंगे, शक्ति सेना करेंगे ? टीचर्स भी बहुत हैं। बहुत अच्छा है।

डबल विदेशी:- बहुत अच्छा - बापदादा ने पहले भी कहा तो जब डबल विदेशी आते हैं तो मधुबन का श्रृंगार हो जाता है। डबल विदेशियों से सभी का प्यार बहुत है। जब भी आपके गुप को देखते हैं ना तो सभी खुश हो जाते हैं क्योंकि आप भी कोटों में कोई, कोई में कोई निकले हो और आजकल विदेश सेवा की अच्छी न्यूज है। अच्छे-अच्छे मुस्लिम धर्म में भी सन्देश दे रहे हैं। डबल विदेशियों की विशेषता एक बहुत अच्छी गाई हुई है कि डबल विदेशी अगर किसी भी कार्य में लगेंगे तो हाँ तो हाँ, ना तो ना। जिस कार्य में लगेंगे उस कार्य में फिर विजयी बनेंगे। तो आप जो भी गुप में है वह विजयी गुप है ना। विजय का तिलक लगा हुआ है ना। बापदादा देख रहे हैं कि सेवा में वृद्धि भी हो रही है, सन्देश दे रहे हैं, रहमदिल आत्मा बनके आत्माओं को सन्देश देना यह बाप समान सेवाधारी बनना है। अभी सुनाया ना आज अभी एक समय पर एक सेवा नहीं करो, तीनों ही सेवायें इकट्टी इकट्टी हों तो उसका प्रभाव जल्दी होगा। अपने चेहरे से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हैं। चलते-फिरते म्युजियम हो। जैसे म्युजियम में वा प्रदर्शनी में भिन्न-भिन्न चित्र होते हैं ना वैसे आपके नयन, आपका मस्तक, आपके मुस्कराते हुए होंठ, यह भिन्न-भिन्न जो साधन हैं, उससे सेवा कर सकते हैं। अच्छे हैं, बापदादा को हिम्मत वाले भी लगते हैं सिर्फ अभी थोड़ा सा रियलाइजेशन सूक्ष्म चाहिए। रियलाइज करते हो लेकिन थोड़ा सा सूक्ष्म रूप से रियलाइजेशन करके नम्बरवन बन जाओ। विन करो और वन, सेकण्ड नम्बर नहीं, वन। ठीक है ना! वन है ना, टू तो नहीं ना! वन नम्बर हैं ? कांध हिलाओ। अच्छा। अच्छा है, बापदादा को विदेशियों का गुप मधुबन में आता रहे, यह अच्छा लगता है। सज़ जाता है मधुबन। अच्छा।

इण्डियन यूथ गुप:- यूथ गुप आया है ना - इण्डियन यूथ गुप उठो। अच्छा इण्डिया का यूथ गुप क्या कमाल करेगा ? सन्देश देने में चारों ओर आवाज फैलाने में यूथ में डबल ताकत है। बापदादा ने सुना, टॉपिक बहुत अच्छी रखी है, विकट्री। ऐसा है ना। तो सदा विजयी बन, विजयी बनाने वाले। तो विजयी तब बनेंगे जो बापदादा ने इस वर्ष का काम दिया है, वह एकजैमुल बनकर दिखाना। सब कहें यूथ गुप विजयी अर्थात् निर्विघ्न। ऐसा संकल्प किया है ? किया है ? कोई कारण तो नहीं बतायेंगे ना! ऐसा वैसा तो नहीं कहेंगे ना! मुझे बदलना है। मुझे एडजेस्ट होना है। मुझे सहयोग देना है। मुझे स्नेह देना है। पहले मैं, इसमें पहले मैं भले करो। अच्छा है आपस में संगठन फॉरेन वालों ने भी किया, इण्डिया वाले भी कर रहे हैं, अच्छा है। मुबारक हो। आगे उड़ते रहना। अच्छा।

बापदादा के पास फूलों के श्रृंगार वाले गुप की यादप्यार भी आई है, (कलकत्ता के भाई बहिन) वह संगठन उठो कहाँ है। देखो सभी को फूलों का श्रृंगार अच्छा लगा ना। फूलों का श्रृंगार तो कामन बात है, लोग भी करते हैं लेकिन आपके श्रृंगार और लोगों के श्रृंगार में फर्क है कि आपने स्नेही स्वरूप बन श्रृंगार किया है, वह ड्युटी समझके करते

हैं और आपने स्नेह से किया है तो जहाँ स्नेह होता है वह फूलों की सुगन्ध और श्रृंगार और सुन्दर हो जाती है। तो बापदादा को अच्छा लगा कि स्नेह देखो कलकत्ता से यहाँ ले आते हैं तो स्नेह के विमान में लाये ना, ट्रेन में नहीं लाये, स्नेह के विमान में लाये हैं, अच्छा है। जो आने वाले आपके भाई-बहिन हैं वह भी देख करके खुश हो जाते हैं, वाह! कमाल है, कमाल है। तो आप सभी ने जिस स्नेह से सजाया है, तो बापदादा उससे ज्यादा पदमगुणा आपको स्नेह दे रहा है, मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के पत्र, याद-पत्र ईमेल, फोन, चारों ओर के बहुत-बहुत आये हैं, यहाँ मधुबन में भी आये हैं तो वतन में भी पहुंचे हैं। आज के दिन जो बंधन वाली मातायें हैं, उन्हीं की भी बहुत स्नेह भरी मन की यादें बापदादा के पास पहुंच गई हैं। बापदादा ऐसे स्नेही बच्चों को बहुत याद भी करते और दुआयें भी देते हैं। आजकल बापदादा देख रहे हैं सब बहुत खुशी खुशी से दूर बैठे भी नजदीक में अनुभव कर रहे हैं। लेकिन मधुबन में सम्मुख आना, अपनी झोली भरना, इतने बड़े परिवार से मिलना, यह परिवार कम नहीं है, किसी भी रीति से देख लिया लेकिन सम्मुख परिवार को देख कितनी खुशी होती है क्योंकि 5 हजार वर्ष के बाद मिले हैं। तो वह अनुभव अपना है लेकिन मधुबन निवासी बनना यह गोल्डन चांस बहुत सहयोग देता है। अनुभव भी करते हैं सभी। लेकिन बापदादा खुश है कि सभी को मुरली से प्यार है और मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार। कोई कहे मुरलीधर से तो प्यार है लेकिन मुरली कभी कभी सुन लेते हैं, बापदादा कहते हैं बापदादा उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं। प्यार निभाना अलग है, प्यार करना अलग है। जिसको मुरली से प्यार है वह है प्यार निभाने वाले और मुरली से प्यार नहीं तो प्यार करने वालों की लिस्ट में है निभाने वाले नहीं। मधुबन में मुरली बाजे, मधुबन का गायन है। मधुबन की धरनी का ही महत्व है। अच्छा।

तो चारों ओर के स्नेही बच्चों को लवली और लवलीन दोनों बच्चों को, सदा बाप के श्रीमत प्रमाण हर कदम में पदम जमा करने वाले नॉलेजफुल पावरफुल बच्चों को, सदा स्नेही भी और स्वमानधारी भी, सम्मानधारी भी, ऐसे सदा बाप की श्रीमत को पालन करने वाले विजयी बच्चों को, सदा बाप के हर कदम पर कदम उठाने वाले सहजयोगी बच्चों को बापदादा का लेकिन आज वतन में जो आपकी एडवांस पार्टी वाले बच्चे हैं, उन्होंने भी, एक एक ने यही कहा है कि हमारी तरफ से भी सभी को, चारों ओर के बच्चों को यादप्यार हमारी देना और हमारा सन्देश देना कि हम आपका इन्तजार कर रहे हैं। आप जल्दी से जल्दी इन्तजाम करो। विशेष आप सबकी प्यारी माँ, दीदी, भाऊ विश्वकिशोर और जो भी साथी गये हैं उन्होंने, सभी ने आप सबको याद प्यार दिया है और साथ-साथ मीठी माँ आपकी, उसने यही कहा है कि अभी विजयी बन दुःख दर्द दूर कर जल्दी-जल्दी मुक्तिधाम का गेट खोलने के लिए बाप के साथी बन जाओ। ब्रह्मा बाप ने, जिन्होंने साकार में बाप को नहीं देखा है तो ब्रह्मा बाप भी विशेष आप सभी को बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं। तो यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- (दादी रतनमोहिनी, दादी मनोहर इन्द्रा से) आप भी देखो आलराउन्ड पार्ट बजा रही हो ना। जितना भी कर सकी सेवा में नम्बरवन। आप तो शुरू से नम्बरवन रही हैं। ब्रह्मा बाप के दिल में आपका नाम है। कुछ भी हो करते चलो, देख करके औरों को भी हिम्मत आती है। करावनहार साथ में है ही।

दादी जी से:- बहुत अच्छी, आप मुस्कराती हो ना तो सभी खुश होते हैं। अभी एक बात करो, करेंगी? करेंगी पक्का? अभी खाना अच्छी तरह से खाओ। आँख खोलके खाना खाओ। बन्द नहीं करो क्योंकि आपकी आँखें बन्द होती है ना, तो सभी का संकल्प चलता है क्यों किया, क्यों किया। इसलिए अभी खाना बहुत प्यार से खाओ। अभी आँखें बन्द नहीं करना। करेंगी ना। यह बहुत खुश हो जायेंगे। हाँ करेंगी। करना ही है, करना ही है।

दादी शान्तामणी:- अरे वाह! आपको याद है ना, आपको बापदादा ने एक स्पेशल टाइटल दिया था, (सचली कौड़ी) बापदादा ने खास टाइटल दिया था - सचली कौड़ी। उस दिनों में कौड़ी का महत्व था।

सभी को दादियों को देखकर खुशी होती है ना। क्या गीत गाते हो? वाह! दादियां वाह! और यह वाह! वाह! नहीं होते तो आप भी नहीं होते। अच्छा।

परमात्म प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा की निशानी - होलीएस्ट , हाइएस्ट और रिचेस्ट

आज विश्व परिवर्तक बापदादा अपने साथी बच्चों से मिलने आये हैं। हर एक बच्चे के मस्तक में तीन परमात्म विशेष प्राप्तियां देख रहे हैं। एक है होलीएस्ट , 2- हाइएस्ट और 3- रिचेस्ट। इस ज्ञान का फाउण्डेशन ही है होली अर्थात् पवित्र बनना। तो हर एक बच्चा होलीएस्ट है , पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन मन-वाणी-कर्म , सम्बन्ध-सम्पर्क में पवित्रता। आप देखो , आप परमात्म ब्राह्मण आत्मायें आदि-मध्य-अन्त तीनों ही काल में होलीएस्ट रहती हो। पहले-पहले आत्मा जब परमधाम में रहते हो तो वहाँ भी होलीएस्ट हो फिर जब आदि में आते हो तो आदिकाल में भी देवता रूप में होलीएस्ट आत्मा रहे। होलीएस्ट अर्थात् पवित्र आत्मा की विशेषता है - प्रवृत्ति में रहते सम्पूर्ण पवित्र रहना। और भी पवित्र बनते हैं लेकिन आपकी पवित्रता की विशेषता है - स्वप्नमात्र भी अपवित्रता मन-बुद्धि में टच नहीं करे। सतयुग में आत्मा भी पवित्र बनती और शरीर भी आपका पवित्र बनता। आत्मा और शरीर दोनों की पवित्रता जो देव आत्मा रूप में रहती है , वह श्रेष्ठ पवित्रता है। जैसे होलीएस्ट बनते हो , इतना ही हाइएस्ट भी बनते हो। सबसे ऊंचे ते ऊंचे ब्राह्मण आत्मायें और ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे बने हो। आदि में परमधाम में भी हाइएस्ट अर्थात् बाप के साथ-साथ रहते हो। मध्य में भी पूज्य आत्मायें बनते हो। कितने सुन्दर मन्दिर बनते हैं और कितनी विधिपूर्वक पूजा होती है। जितनी विधिपूर्वक आप देवताओं के मन्दिर में पूजा होती है उतने औरों के मन्दिर बनते हैं लेकिन विधिपूर्वक पूजा आपके देवता रूप की होती है। तो होलीएस्ट भी हो और हाइएस्ट भी हो , साथ में रिचेस्ट भी हो। दुनिया में कहते हैं रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें रिचेस्ट इन कल्प हैं। सारा कल्प रिचेस्ट हो। अपने खजाने स्मृति में आते हैं , कितने खजानों के मालिक हो ! अविनाशी खजाने जो इस एक जन्म में प्राप्त करते हो वह अनेक जन्म चलते हैं। और कोई का भी खजाना अनेक जन्म नहीं चलते। लेकिन आपके खजाने आध्यात्मिक हैं। शक्तियों का खजाना , ज्ञान का खजाना , गुणों का खजाना , श्रेष्ठ संकल्प का खजाना और वर्तमान समय का खजाना , यह सर्व खजाने जन्म-जन्म चलते हैं। एक जन्म के प्राप्त हुए खजाने साथ चलते हैं क्योंकि सर्व खजानों के दाता परमात्मा बाप द्वारा प्राप्त होता है। तो यह नशा है कि हमारे खजाने अविनाशी हैं ?

इस आध्यात्मिक खजानों को प्राप्त करने के लिए सहजयोगी बने हो। याद की शक्ति से खजाने जमा करते हो। इस समय भी इन सर्व खजानों से सम्पन्न बेफिक्र बादशाह हो , कोई फिक्र है ? है फिक्र ? क्योंकि यह खजाने जो हैं इसको न चोर लूट सकता , न राजा खा सकता , न पानी डुबो सकता , इसलिए बेफिक्र बादशाह हो। तो यह खजाने सदा स्मृति में रहते हैं ना ! और याद भी सहज क्यों है ? क्योंकि सबसे ज्यादा याद का आधार होता है एक सम्बन्ध और दूसरा प्राप्ति। जितना प्यारा सम्बन्ध होता है उतनी याद स्वतः आती है क्योंकि सम्बन्ध में स्नेह होता है और जहाँ स्नेह होता है तो स्नेही की याद करना मुश्किल नहीं होता , लेकिन भूलना मुश्किल होता है। तो बाप ने सर्व सम्बन्ध का आधार बना दिया है। सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो ? वा मुश्किल योगी हैं ? सहज है ? कि कभी सहज है , कभी मुश्किल है ? जब बाप को सम्बन्ध और स्नेह से याद करते हो तो याद मुश्किल नहीं होती और प्राप्तिओं को याद करो। सर्व प्राप्तिओं के दाता ने सर्व प्राप्तियां करा दी। तो अपने को सर्व खजानों से सम्पन्न अनुभव करते हो ? खजानों को जमा करने की सहज विधि भी बापदादा ने सुनाई - जो भी अविनाशी खजाने हैं उन सभी खजानों की प्राप्ति करने की विधि है - बिन्दी। जैसे विनाशी खजानों में भी बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना। तो अविनाशी खजानों की जमा करने की विधि है बिन्दी लगाना। तीन बिन्दियां हैं - एक मैं आत्मा बिन्दी , बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो भी

बीत जाता वह फुलस्टाप अर्थात् बिन्दी। तो बिन्दी लगाने आती है? सबसे ज्यादा सहज मात्रा कौन सी है? बिन्दी लगाना ना! तो आत्मा बिन्दी हूँ, बाप भी बिन्दी है, इस स्मृति से स्वतः ही खजाने जमा हो जाते हैं। तो बिन्दी को सेकण्ड में याद करने से कितनी खुशी होती है! यह सर्व खजाने आपके ब्राह्मण जीवन का अधिकार हैं क्योंकि बच्चे बनना अर्थात् अधिकारी बनना। और विशेष तीन सम्बन्ध का अधिकार प्राप्त होता है - परमात्मा को बाप भी बनाया है, शिक्षक भी बनाया है और सतगुरु भी बनाया है। इन तीनों सम्बन्ध से पालना, पढ़ाई से सोर्स आफ इनकम और सतगुरु द्वारा वरदान मिलता है। कितना सहज वरदान मिलता है? क्योंकि बच्चे का जन्म सिद्ध अधिकार है बाप के वरदान प्राप्त करने का।

बापदादा हर बच्चे का जमा का खाता चेक करते हैं। आप सभी भी अपने हर समय का जमा का खाता चेक करो। जमा हुआ वा नहीं हुआ, उसकी विधि है जो भी कर्म किया, उस कर्म में स्वयं भी सन्तुष्ट और जिसके साथ कर्म किया वह भी सन्तुष्ट। अगर दोनों में सन्तुष्टता है तो समझो कर्म का खाता जमा हुआ। अगर स्वयं में वा जिससे सम्बन्ध है, उसमें सन्तुष्टता नहीं आई तो जमा नहीं होता।

बापदादा सभी बच्चों को समय की सूचना भी देते रहते हैं। यह वर्तमान संगम का समय सारे कल्प में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ समय है क्योंकि यह संगम ही श्रेष्ठ कर्मों के बीज बोने का समय है। प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने का समय है। इस संगम समय में एक एक सेकण्ड श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है। सभी एक सेकण्ड में अशरीरी स्थिति में स्थित हो सकते हो? बापदादा ने सहज विधि सुनाई है कि निरन्तर याद के लिए एक विधि बनाओ - सारे दिन में दो शब्द सभी बोलते हो और अनेक बार बोलते हो वह दो शब्द हैं 'मैं' और 'मेरा'। तो जब मैं शब्द बोलते हो तो बाप ने परिचय दे दिया है कि मैं आत्मा हूँ। तो जब भी मैं शब्द बोलते हो तो यह याद करो कि मैं आत्मा हूँ। अकेला मैं नहीं सोचो, मैं आत्मा हूँ, यह साथ में सोचो क्योंकि आप तो जानते हो ना कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, परमात्म पालना के अन्दर रहने वाली आत्मा हूँ और जब मेरा शब्द बोलते हो तो मेरा कौन? मेरा बाबा अर्थात् बाप परमात्मा। तो जब भी मैं और मेरा शब्द कहते हो उस समय यह एडीशन करो, मैं आत्मा और मेरा बाबा। जितना मेरापन लायेंगे बाप में, उतना याद सहज होती जायेगी क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। सारे दिन में देखो मेरा ही याद आता है। तो इस विधि से सहज निरन्तर योगी बन सकते हो। बापदादा ने हर बच्चे को स्वमान की सीट पर बिठाया है। स्वमान की लिस्ट अगर स्मृति में लाओ तो कितनी लम्बी है! क्योंकि स्वमान में स्थित हैं तो देह अभिमान नहीं आ सकता। या देह अभिमान होगा या स्वमान होगा। स्व मान का अर्थ ही है - स्व अर्थात् आत्मा का श्रेष्ठ स्मृति का स्थान। तो सभी अपने स्वमान में स्थित हैं? जितना स्वमान में स्थित होंगे उतना दूसरे को सम्मान देना स्वतः ही हो जाता है। तो स्वमान में स्थित रहना कितना सहज है!

तो सभी खुशनुमा रहते हैं? क्योंकि खुशनुमा रहने वाला दूसरे को भी खुशनुमा बना देता है। बापदादा सदा कहते हैं कि सारे दिन में खुशी कभी नहीं गंवाओ। क्यों? खुशी ऐसी चीज़ है जो एक ही खुशी में हेल्थ भी है, वेल्थ भी है और हैपी भी है। खुशी नहीं तो जीवन नीरस रहती है। खुशी को ही कहा जाता है - 'खुशी जैसा कोई खजाना नहीं।' कितने भी खजाने हो लेकिन खुशी नहीं तो खजाने से भी प्राप्ति नहीं कर सकते हैं। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। तो वेल्थ भी है खुशी और खुशी हेल्थ भी है और नाम ही खुशी है तो हैपी तो है ही है। तो खुशी में तीनों ही चीज़ें हैं। और बाप ने अविनाशी खुशी का खजाना दिया है, बाप का खजाना गंवाना नहीं। तो सदा खुश रहते?

बापदादा ने होमवर्क दिया तो खुश रहना है और खुशी बांटनी है क्योंकि खुशी ऐसी चीज़ है जो जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी। अनुभव करके देखा है! किया है ना अनुभव? अगर खुशी बांटते हैं तो बांटने से पहले अपने पास बढ़ती है। खुश करने वाले से पहले स्वयं खुश होते हैं। तो सभी ने होमवर्क किया है? किया है? जिसने किया है वह हाथ उठाओ। जिसने किया है - खुश रहना है, कारण नहीं निवारण करना है, समाधान स्वरूप बनना है। हाथ उठाओ। अभी यह तो नहीं कहेंगे ना - यह हो गया! बापदादा के पास कई बच्चों ने अपनी

रिजल्ट भी लिखी है कि हम कितने परसेन्ट ओ.के. रहे हैं। और लक्ष्य रखेंगे तो लक्ष्य से लक्षण स्वतः ही आते हैं। अच्छा। अभी क्या करना है ?

सेवा का टर्न कर्नाटक का है:- कर्नाटक वाले उठो। अच्छा है कर्नाटक वालों ने सेवा का गोल्डन चांस ले लिया है क्योंकि अब संगमयुग में प्रत्यक्ष फल मिलता है। जमा भी होता है लेकिन प्रत्यक्षफल मिलता है जो उसी समय खुशी प्राप्त होती है। तो जितना दिन भी सेवा की है, तो प्रत्यक्षफल अपने में खुशी अनुभव किया ? खुशी मिली ? हाथ उठाओ। माया आई ? नहीं आई ? जिसको माया नहीं आई वह हाथ उठाओ। पाण्डवों को माया आई ? थोड़ी-थोड़ी आई है ? अच्छा है, यहाँ का वायुमण्डल बहुत सहयोग देता है। जैसे साइन्स वाले साइन्स की शक्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन कर देते हैं ना। गर्मी में सर्दी, हवा का वायुमण्डल बना देते हैं ना! सर्दी में गर्मी का वायुमण्डल बना देते हैं, तो साइलेन्स की शक्ति आध्यात्मिक स्मृति का वायुमण्डल बना देता है क्योंकि यहाँ सेवा करते वृत्ति में क्या रहता है ? यज्ञ सेवा है, यज्ञ का पुण्य बहुत बड़ा होता है। तो इस अविनाशी यज्ञ में सेवा करने से वृत्ति श्रेष्ठ बन जाती है। तो वायुमण्डल भी श्रेष्ठ बन जाता है। अभी कर्नाटक वाले क्या विशेषता दिखायेंगे ? कोई नया कार्य करके दिखाओ। देखो कर्नाटक में संख्या बहुत है और एरिया भी बहुत है। सेवा की एरिया बहुत बड़ी है। कर्नाटक वाले बड़े ते बड़ी सेवा यही कर सकते हैं जो कर्नाटक के कोई भी छोटे बड़े कोई स्थान नहीं रहें जो आपको उल्हना देवें कि हमारा बाप आया और हमें आपने सूचना नहीं दी, सन्देश नहीं दिया। यह उल्हना नहीं रह जाये। जैसे अफ्रीका वालों ने अपनी एरिया को सन्देश देने का कार्य सफल किया है। बापदादा को यह कार्य अच्छा लगता है, कोई का भी उल्हना नहीं रह जाना चाहिए। आपका काम है सन्देश देना, वह अभी आवे या पीछे आवे लेकिन आपने अपना कार्य सम्पन्न किया तो कर्नाटक वाले दूसरे वर्ष में जब आयेंगे, क्या करके आयेंगे ? कोई भी एरिया खाली नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि आप तो जानते हो ना - कि बाप का परिचय मिलने से, बाप के सम्बन्ध में आने से आत्मार्थ कितनी सुखी बन जायेंगी। अभी तो दिन-प्रतिदिन दुःख और अशान्ति बढ़ती जा रही है क्योंकि दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ रहा है। अति में जा रहा है। लेकिन आप जानते हो कि अति के बाद क्या होता है ? अन्त आती है। और अन्त किसको लाती है ? आदि को। तो अपने भाई फिर भी बाप तो एक ही है ना, चाहे जाने चाहे मानें, नहीं भी मानें लेकिन बाप तो बाप ही है। तो अपने भाईयों को, अपनी बहनों को सन्देश जरूर दे दो। तो क्या करेंगे ? रिकार्ड बनायेंगे, टीचर्स ? कोई गांव भी नहीं रहना चाहिए। हाथ उठाओ, जो करेगा, ऐसे ही नहीं हाथ उठाना। करेंगे ? रिजल्ट जाके भेजना, प्लैन बनाना। कमाल तो करना है ना! जितनी कमाल करने में लग जायेंगे, उतनी छोटी छोटी धमाल खत्म हो जायेगी। तो बहुत अच्छा चांस मिला है, चांस लिया है और चांस का जो काम मिला है वह भी करके आयेंगे। पक्का है ना ? पाण्डव, पक्का ? थक नहीं जाना। कितना पुण्य जमा होगा ! तो अच्छा है, बापदादा को भी खुशी होती है कि बच्चे अपने पुण्य का खाता भिन्न-भिन्न विधि से आगे बढ़ा रहे हैं। बापदादा ने सुनाया ना - तीन खाते जमा करने हैं - एक अपने पुरुषार्थ से जमा हुआ खाता और दूसरा है - दूसरी आत्माओं को सन्तुष्ट करने में पुण्य का खाता। सन्तुष्टता पुण्य का खाता जमा करती है और तीसरा है मन्सा-वाचा-स्नेह सम्बन्ध द्वारा सेवा का खाता। तो तीनों खाते चेक करना। तीनों में कमी नहीं होनी चाहिए। तो नम्बरवन लेंगे ? जमा के खाते में नम्बरवन लेना। कर्नाटक है, कम थोड़ेही है। बापदादा की नज़र में है कर्नाटक। बहुत कुछ कर सकते हैं, इस नज़र में है। हाँ आगे लाइन में खड़े हुए क्या करेंगे ? कमाल करेंगे ना ! करो कमाल, लो नम्बर। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति, दोनों का बैलेन्स रखना। ठीक है बैठ जाओ। (बैंगलोर की सेवा मम्मा ने शुरू की और दादी हृदयपुष्पा और सुन्दरी बहन ने बहुत प्यार से सेवा की है) हृदयपुष्पा बच्ची ने बहुत प्यार से सेवा की है। तो प्यार का सबूत देना है। जगदम्बा माँ की सेवा का रिटर्न करना है। तो कितने दिनों में समाचार देंगे। हर मास अपने समाचार देते रहना, कि यह कर रहे हैं और यह हुआ है, यह होना है। बापदादा तो हर ज़ोन को कहते हैं लेकिन जिसका विशेष टर्न होता है उसको विशेष अटेन्शन रखना है।

तो सभी सदा मन को बिजी रखो क्योंकि मन ही धोखा देता, मन में ही टेन्शन आता, मन ही यहाँ वहाँ भागता है। तो मन को बिजी रखना अर्थात् सम्पन्न स्थिति में जल्दी से जल्दी स्थित रहना। बापदादा कहते हैं जब स्थूल कर्मेन्द्रियों को मेरा कहते हो, मेरा हाथ कहते हो, तो हाथ को कन्ट्रोल कर सकते हो ना! जहाँ चाहे जैसे चाहे वैसे करते हो ना! तो मन मेरा है, या आप मन के हो? मन के मालिक भी तो आप हो ना! मैं मन तो नहीं है ना? मन राजा तो नहीं है, आत्मा राजा है। तो कन्ट्रोलिंग पावर रूनिंग पावर धारण करेंगे तो मन आपके अच्छे ते अच्छा नम्बरवन सहयोगी साथी बन जायेगा। करके देखो। सिर्फ मालिक बनो, राजा बनो। इस दुनिया में तीन शक्तियां तो चल रही हैं - देखो यह राजनीति की आई है ना? (राजस्थान की राज्यपाल महामहिम प्रतिभा पाटिल जी बापदादा से मिलने आई हैं) तो तीन सत्तारें तो चल रही हैं, राज्य सत्ता भी चल रही है। धर्मसत्ता भी चल रही है और साइन्स की सत्ता भी चल रही है, लेकिन रिजल्ट? आपमें कितनी सत्तारें हैं? आपमें चार सत्तारें हैं क्योंकि विश्व में आध्यात्मिक शक्ति की कमी है। आपमें राज्य सत्ता है? अपनी कर्मेन्द्रियों के राजा बने हो ना! स्वराज्य अधिकारी हो ना! और धर्मसत्ता भी है, धर्म का अर्थ है दिव्य गुणों की धारणा, श्रेष्ठ चरित्र की धारणा, श्रेष्ठ कर्म की धारणा। जहाँ चरित्र है वहाँ सब कुछ है। चरित्र नहीं तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। और साइन्स की सत्ता, उसके साधन हैं आपके साइलेन्स की साधना है। तो चारों ही सत्ता जब इकट्ठी होती है तब विश्व परिवर्तन होता है। इसलिए बापदादा कहते हैं, बच्ची को भी कहते हैं, बहुत अच्छा किया पहुंच गई है। राज्य सत्ता में है ना तो अभी कम से कम राजस्थान को तो आध्यात्मिक सत्ता से भरपूर करो। राजस्थान पान का बीड़ा उठावे, विश्व परिवर्तन तो आपेही हो जायेगा। पहले राजस्थान को परिवर्तन करो। (बाबा राजस्थान तो आध्यात्मिकता का गढ़ है, यहाँ से विश्व में परिवर्तन का कार्य चल रहा है)

विश्व को मिल तो रही है लेकिन राजस्थान के राज्य अधिकारी भी सहयोगी बन जायें। देखो आप शक्ति रूप हो, बापदादा ने शक्तियों को आगे रखा है। तो आप भी शिव शक्ति हो। शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। अच्छा है, बापदादा ने देखा है उमंग इनको बहुत है, राजस्थान को बहुत अच्छे ते अच्छा बनायें, लेकिन आपके सभी सहयोगी भी हैं, सब मिल करके करेंगे तो क्या नहीं हो सकता। राजस्थान दीपक जगायेगा, चरित्र का और वह दीपक चारों ओर दौड़ेगा। अच्छा किया। बापदादा को बच्चों का इस कार्य में सहयोगी बनने का उमंग-उत्साह देख खुशी होती है। आपके साथ और भी तो आये हैं ना। जो साथ में आये हैं वह हाथ उठाओ। बापदादा को बहुत अच्छा लगता है, अभी आप सभी आपस में मीटिंग करना, प्लैन बनाना कि क्या-क्या कर सकते हैं। और सब यहाँ के आपके सहयोगी बनेंगे। उमंग है ना! अच्छा है। राजस्थान को निमित्त बनना चाहिए। अच्छा है।

डबल विदेशी:- विदेशियों को अपना ओरीजनल विदेश तो नहीं भूलता होगा। ओरीजनल आप किस देश के हो, वह तो याद रहता है ना। इसलिए सभी आपको कहते हैं डबल विदेशी। सिर्फ विदेशी नहीं हो, डबल विदेशी। तो आपको अपना स्वीट होम कभी भूलता नहीं होगा। तो कहाँ रहते हो? बापदादा के दिलतख्त नशीन हो ना। बापदादा कहते हैं जब कोई भी छोटी मोटी समस्या आये, समस्या नहीं है लेकिन पेपर है आगे बढ़ाने के लिए। तो बापदादा का दिलतख्त तो आपका अधिकार है। दिलतख्तनशीन बन जाओ तो समस्या खिलौना बन जायेगी। समस्या से घबरायेंगे नहीं, खेलेंगे। खिलौना है। सब उड़ती कला वाले हो ना? उड़ती कला है? या चलने वाले हो? उड़ने वाले हो या चलने वाले हैं? जो उड़ने वाले हैं वह हाथ उठाओ। उड़ने वाले। आधा आधा हाथ उठा रहे हैं। उड़ने वाले हैं? अच्छा। कभी कभी उड़ना छोड़ते हैं क्या? चल रहे हैं नहीं, कई बापदादा को कहते हैं बाबा हम बहुत अच्छे चल रहे हैं। तो बापदादा कहते हैं चल रहे हो या उड़ रहे हो? अभी चलने का समय नहीं है, उड़ने का समय है। उमंग-उत्साह के, हिम्मत के पंख हर एक को लगे हुए हैं। तो पंखों से उड़ना होता है। तो रोज़ चेक करो, उड़ती कला में उड़ रहे हैं? अच्छा है, रिजल्ट में बापदादा ने देखा है कि सेन्टर्स विदेश में भी बढ़ रहे हैं। और बढ़ते जाने ही हैं। जैसे डबल विदेशी हैं वैसे डबल सेवा

मंसा भी, वाचा भी साथ-साथ करते चलो। मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की आत्मिक वृत्ति बनाओ। वायुमण्डल बनाओ। अभी दुःख बढ़ता हुआ देख रहम नहीं आता है? आपके जड़ चित्र के आगे चिल्लाते रहते हैं, मर्सी दो, मर्सी दो, अब दयालु कृपालु रहमदिल बनो। अपने ऊपर भी रहम और आत्माओं के ऊपर भी रहम। अच्छा है - हर सीजन में, हर टर्न में आ जाते हैं। यह सभी को खुशी होती है। तो उड़ते चलो और उड़ते चलो। अच्छा है, रिजल्ट में देखा है कि अभी अपने को परिवर्तन करने में भी फास्ट जा रहे हैं। तो स्व के परिवर्तन की गति विश्व परिवर्तन की गति बढ़ाता है। अच्छा।

जो पहली बार आये हैं वह उठो:- तो आप सभी को ब्राह्मण जन्म की मुबारक हो। अच्छा मिठाई तो मिलेगी लेकिन बापदादा दिलखुश मिठाई खिला रहे हैं। पहले बारी मधुबन आने की यह दिलखुश मिठाई सदा याद रखना। वह मिठाई तो मुख में डाला और खत्म हो जायेगी लेकिन यह दिलखुश मिठाई सदा साथ रहेगी। भले आये, बापदादा और सारा परिवार देश विदेश में आप अपने भाई बहनों को देख खुश हो रहे हैं। सभी देख रहे हैं, अमेरिका भी देख रही है तो अफ्रीका भी देख रहे हैं, रशिया वाले भी देख रहे हैं, लण्डन वाले भी देख रहे हैं, 5 खण्ड ही देख रहे हैं। तो जन्म दिन की आप सबको वहाँ बैठे बैठे मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

बापदादा की रूहानी ड्रिल याद है ना! अभी बापदादा हर बच्चे से चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, चाहे छोटे हैं चाहे बड़े हैं, छोटे और ही समान बाप जल्दी बन सकते हैं। तो अभी सेकण्ड में जहाँ मन को लगाने चाहो वहाँ मन एकाग्र हो जाए। यह एकाग्रता की ड्रिल सदा ही करते चलो। अभी एक सेकण्ड में मन के मालिक बन मैं और मेरा बाबा संसार है, दूसरा न कोई, इस एकाग्र स्मृति में स्थित हो जाओ। अच्छा।

चारों ओर के सर्व तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ती कला के अनुभवी मूर्त बच्चों को, सदा अपने स्वमान की सीट पर सेट रहने वाले बच्चों को, सदा रहमदिल बन विश्व की आत्माओं को मन्सा शक्ति द्वारा कुछ न कुछ अंचली सुख-शान्ति की देने वाले दयालु, कृपालु बच्चों को, सदा बाप के स्नेह में समाये हुए दिलतख्तनशीन बच्चों को, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- अच्छा है - सभी आदि रत्न हैं। आदि रत्नों में विशेषता है, सभी रत्नों को देख खुश हो जाते हैं। दादी को भी सभी याद कर रहे हैं। (दादी जी को विशेष ट्रीटमेंट और चेकिंग निमित्त बम्बई हॉस्पिटल में 31 जनवरी को लेकर गये हैं। मोहिनी बहन, मुन्नी बहन, निर्वैर भाई, योगिनी बहन आदि सबने याद भेजी है) बड़ों के आगे कुछ तो अनुभव आयेंगे ना। न्यारे और बाप के प्यारे, न्यारे रहते छोटी-छोटी बातों में पार होने का एक एकजैम्पुल बनते हैं। बिल्कुल 100 परसेन्ट सम्पन्न बनना है क्योंकि पहले नम्बर वाले जरा भी अंश का अंश भी रह नहीं जाए, सब यहाँ खत्म होना है क्योंकि इन्हीं के आधार से नई दुनिया का राज्य स्थापन होना है और राज्य घराना बनना है। तो अंश मात्र को भी भस्म कर रहे हैं। इसीलिए कुछ भी होता है लेकिन फिर भी न्यारापन रहता है। सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम यह प्रैक्टिकल सम्पन्न बनने के लिए थोड़ा बहुत यह खेल तो करना ही पड़ता है। (दादी जानकी जी ने कहा बाबा के लिए खेल है) आपके लिए भी खेल है, यह भी पार्ट है। जैसे और पार्ट बजाते हैं, यह भी पार्ट नूधा हुआ है। यह जरा सा भी भस्म हो रहा है। बिल्कुल प्युअर, अंश मात्र भी नहीं रहे। तो सभी को प्यार तो है, और प्यार की दुआयें दादी को भी मिल रही हैं। अच्छा है, आप सब मिल करके, निमित्त बनके चला रहे हैं, यह भी बहुत अच्छा है। (परदादी ने भी याद दी है) यह भी एक खेल में खेल है कि सभी इकट्ठे इकट्ठे प्युअर बन रहे हैं। इसने (शान्तामणि दादी) तो हिम्मत दिखाई और करके दिखाया। डाक्टरों को भी अपनी हिम्मत तो दिखा दी ना। हर एक की अपनी अपनी विशेषता है। तो अच्छा है मिलके, साथी बनके, यज्ञ का कार्य तो रुकना है ही नहीं, अमर है, चलना है और बढ़ना है। सभी साक्षी होके खेल देख रहे हो या क्वेश्चन मार्क उठता है? क्यों, क्या तो नहीं उठता ना! जो होता है, उसमें कई राज समाये हुए होते हैं। वह बाप जाने और ड्रामा जाने। अच्छा। सब ठीक है ना! अच्छा है।

अव्यक्त बापदादा से राजस्थान की राज्यपाल महामहिम बहन

प्रतिभा पाटिल जी की मुलाकात

आपने हिम्मत अच्छी की है और बापदादा को एक बात की खुशी है कि राजस्थान में दोनों ही विशेष मातायें हैं। त्रिमूर्ति है। (चीफ मिनिस्टर, राज्यपाल और स्पीकर तीनों ही बहनें हैं) तो बापदादा ने यहाँ भी माताओं द्वारा स्थापना की। तो अभी सहयोगी बन सेवा को बढ़ाओ। राजस्थान को नम्बरवन होना चाहिए। (हो जायेगा, आपका आशीर्वाद है) क्यों नहीं होगा, जहाँ दृढ़ संकल्प है वहाँ सफलता है ही है। सफलता की चाबी दृढ़ संकल्प है। यह चाबी सदा साथ रखना। अभी आप साथी बन गईं। आशीर्वाद तो शुभ कार्य और हिम्मत वाले को स्वतः मिलती है। कहे न कहे जिसमें हिम्मत है, उमंग है उसको मिलती है। बाप का वायदा है एक कदम आपकी हिम्मत का, हजार कदम बाप की मदद का। यह सब साथी भी सहयोग देना। बहुत अच्छा। आप सभी सहयोग देना। क्या नहीं कर सकते हैं, जब मनुष्यात्मा विश्व को अकल्याण कर सकते हैं तो कल्याण क्यों नहीं कर सकते। अकल्याण का पार्ट बजा रहे हैं ना! (यह क्यों हो रहा है?) यह सब अति में जाना है। देखो 10 साल पहले भ्रष्टाचार, पापाचार गुप्त था, आजकल खुले बजार में हो गया है, अति में जाना है। कलियुग है ना। कलियुग अति में जा रहा है। (इसे खत्म करने का उपाय क्या है?) इसका उपाय है आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाना। यह सन्देश देके उन्हीं में श्रेष्ठ कर्म की भावना पैदा करना। अच्छा।

(जयकुमार रावल, एम.एल.ए. दोढांइचा महाराष्ट्र) कुछ भी हैं लेकिन बाप के कार्य में सहयोगी बनना है। (राज्यपाल से) यह तो घर की बन गई है। देखो दादियों के साथ आ गई है। अच्छा।

पटना से कमिश्नर आये हैं: कुछ भी हो, अभी ईश्वरीय कार्य में साथी बनना है। बस यह दृढ़ संकल्प करके जाओ, करना ही है। साथ देना ही है। हिलो नहीं, दृढ़ता रखो।

भ्राता प्रभाकर रेडी जी (जिलाध्यक्ष) आंध्र प्रदेश:- कुछ भी हो, अभी क्या करना है? अभी ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनके चलना। अच्छा।

दादियों की सेवा में रहने वाली बहनों से:- आप सेन्टर पर नहीं रहती हो, मधुबन में नहीं रहती हो, सब ब्राह्मण परिवार के बीच में रहती हो। सबकी नज़र आपके ऊपर है, बड़ी जिम्मेवारी है, थकना नहीं, साधारण नहीं हो। फरिश्तों जैसे चलो, दादियों को सम्भाल रही हो, कोई कम्पलेन नहीं है, बापदादा खुश है।

बापदादा ने बाम्बे हॉस्पिटल में दादी जी की सेवा में गये हुए सभी भाई बहनों को विशेष याद दी:- बापदादा बॉम्बे में सबकी प्यारी, सबके दिल की दुलारी दादी की जो सेवा के निमित्त हैं उन सबको याद-प्यार दे रहे हैं। दादी का जो भी ड्रामा में देखते हो, देखते हुए साक्षी होके, दुआओं की, दिल के स्नेह की और स्नेह की सकाश देने की सेवा करते रहते हैं, करते रहो। खेल में खेल देखते रहो। साक्षी होके देखो और उड़ते रहो। बापदादा दिल से सबको दुआयें दे रहे हैं और सब प्यार से सेवा कर रहे हैं। सेवा की भी मुबारक है। (दादी जानकी जी ने कहा डाक्टर्स भी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं) जो भी होता है उसमें सेवा और कल्याण तो भरा हुआ ही है। अच्छा।

सभी बहुत-बहुत-बहुत खुश हैं, खुश है! बहुत खुश है? कितना बहुत? तो सदा ऐसे रहना। कुछ भी हो जाये होने दो, अभी खुश रहना है। हमें उड़ना है, कोई नीचे नहीं ला सकता। पक्का! पक्का वायदा है? कितना पक्का? बस, खुश रहो सबको खुशी दो। कोई भी बात अच्छी नहीं लगे तो भी खुशी नहीं गँवाओ। बात को चला लो, खुशी नहीं चली जाये। बात तो खत्म हो ही जानी है लेकिन खुशी तो साथ में चलनी है ना! तो जो साथ में चलने वाली है उसको छोड़ देते हो और जो छूटने वाली है उस छोड़ने वाली को पास में रख देते हो। यह नहीं करना। अमृतवेले रोज़ पहले अपने आपको खुशी की खुराक खिलाओ। अच्छा।

“अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद से जागना ही शिवरात्रि का सच्चा जागरण है”

आज बापदादा विशेष अपने चारों ओर के अति लाडले, अति सिकीलधे, परमात्म प्यार के पात्र बच्चों से मिलने और विचित्र बाप बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं। आप सभी भी आज विशेष विचित्र बर्थ डे मनाने आये हो ना! यह बर्थ डे सारे कल्प में किसी का नहीं होता। कभी भी नहीं सुना होगा कि बाप और बच्चे का एक ही दिन में बर्थ डे हो। तो आप सभी बाप का बर्थ डे मनाने आये हो वा बच्चों का भी मनाने आये हो? क्योंकि सारे कल्प में परमात्म बाप और परमात्म बच्चों का इतना अथाह प्यार है जो जन्म भी साथ-साथ है। बाप को अकेला विश्व परिवर्तन का कार्य नहीं करना है, बच्चों के साथ-साथ करना है। यह अलौकिक साथ रहने का प्यार, साथी बनने का प्यार इस संगम पर ही अनुभव करते हो। बाप और बच्चों का इतना गहरा प्यार है, जन्म भी साथ है और रहते भी कहाँ हो? अकेले या साथ में? हर एक बच्चा उमंग-उत्साह से कहते हैं कि हम बाप के कम्बाइन्ड हैं। कम्बाइन्ड रहते हो ना! अकेले तो नहीं रहते हो ना! साथ जन्म है, साथ रहते हैं और आगे भी क्या वायदा है? साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे अपने स्वीट होम में। इतना प्यार कोई और बाप बच्चों का देखा है? कोई भी बच्चा हो, कहाँ भी है, कैसा भी है, लेकिन साथ है और साथ ही चलने वाले हैं। तो ऐसा यह विचित्र और प्यारे ते प्यारा जन्म दिन मनाने आये हैं। चाहे सम्मुख मना रहे हो, चाहे देश विदेश में चारों ओर एक ही समय साथ-साथ मना रहे हैं।

बापदादा चारों ओर देख रहे हैं कि कैसे सभी बच्चे उमंग-उत्साह से दिल ही दिल में वाह बाबा! वाह बाबा! वाह बर्थ डे! का गीत गा रहे हैं। अगर स्विच खोलते हैं तो चारों ओर के आवाज, दिल के आवाज, उमंग-उत्साह के आवाज बापदादा के कानों में सुनाई दे रहे हैं। बापदादा सभी बच्चों का उत्साह देख बच्चों को भी अपने दिव्य जन्म की पदम-पदम-पदमगुणा बधाईयां दे रहे हैं। वास्तव में उत्सव का अर्थ ही है उमंग-उत्साह में रहना। तो आप सभी उत्साह से यह उत्सव मना रहे हैं। नाम भी भक्तों ने शिवरात्रि रखा है।

आज बापदादा उस भगत आत्मा, जिसने आपके इस विचित्र जन्म दिन मनाने को, आप ज्ञान और प्रेम रूप में मनाते और उस भगत आत्मा ने भावना, श्रद्धा के रूप में आपके मनाने की कापी अच्छी की है, तो आज उस बच्चे को मुबारक दे रहे थे कि कापी करने में अच्छा पार्ट बजाया है। देखो हर बात को कापी की है। कापी करने का भी तो अक्ल चाहिए ना! मुख्य बात तो इस दिन भक्त लोग भी व्रत रखते हैं, वह व्रत खाने पीने का रखते हैं, भावना में वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रत रखते हैं, उन्हीं को हर वर्ष रखना पड़ता और आपने क्या व्रत लिया? एक ही बार व्रत लेते हो, वर्ष-वर्ष व्रत नहीं लेते। एक ही बार व्रत लिया पवित्रता का। सभी ने पवित्रता का व्रत लिया है, पक्का लिया है? जिन्होंने पक्का लिया है वह हाथ उठाओ, पक्का, थोड़ा भी कच्चा नहीं। पक्का? अच्छा। दूसरा भी प्रश्न है, अच्छा व्रत तो लिया मुबारक हो। लेकिन अपवित्रता के मुख्य पांच साथी हैं, ठीक है ना! कांध हिलाओ। अच्छा पांचों का व्रत लिया है? या दो तीन का लिया है? क्योंकि जहाँ पवित्रता है वहाँ अगर अंश मात्र भी अपवित्रता है तो क्या सम्पूर्ण पवित्र आत्मा कहा जायेगा? और आप ब्राह्मण आत्माओं की तो पवित्रता ब्राह्मण जन्म की प्रापटी है, पर्सनैलिटी है, रॉयल्टी है। तो चेक करो - कि सम्पूर्ण पवित्रता में ऐसे तो नहीं, मुख्य पवित्रता के ऊपर अटेन्शन है लेकिन और

जो साथी हैं, उसको हल्का तो नहीं छोड़ा है ? छोटों से प्यार रखा है और बड़े को ठीक किया है। तो क्या बाप की छुट्टी है कि जो और चार हैं। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य को नहीं कहा जाता, ब्रह्माचारी। ब्रह्माचारी बनना अर्थात् पवित्रता का व्रत पालन किया। कई बच्चे रूहरिहान में कहते हैं, रूहरिहान तो सभी करते हैं ना। तो बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं। कहते हैं बाबा मुख्य तो अच्छा है ना, बाकी छोटे-छोटे ऐसे कभी मन्सा संकल्प में आ जाते हैं। मन्सा में आते हैं, वाचा में नहीं आते और मन्सा को तो कोई देखता नहीं है। और कोई फिर कहते हैं कि छोटे छोटे बाल बच्चों से प्यार होता है ना। तो इन चारों से भी प्यार हो जाता है। क्रोध आ जाता है, मोह आ जाता है, चाहते नहीं हैं आ जाता है। बापदादा कहते हैं कोई भी आता है तो आपने दरवाजा खोला है तब आता है ना! तो दरवाजा खोला क्यों है ? दरवाजा खोला है कमजोरी का, कमजोरी का दरवाजा खोलना अर्थात् आह्वान करना।

तो आज के दिन बर्थ डे तो बाप का और अपना मना रहे हो लेकिन जो जन्मते व्रत का वायदा किया है। पहला-पहला वरदान बाप ने क्या दिया, याद है ? बर्थ डे का वरदान याद है ? क्या दिया ? **पवित्र भव, योगी भव।** सभी को याद है ना वरदान ? याद है भूल तो नहीं गये ? पवित्र भव का वरदान एक का नहीं दिया, पांचों का दिया। तो आज बापदादा क्या चाहते हैं ? बर्थ डे मनाने आये हो, बाप का भी मनाने आये हो ना। शिवरात्रि मनाने आये हो, तो बर्थ डे की सौगात लाये हो या खाली हाथ आये हैं ? 70 वर्ष स्थापना के समाप्त हो रहे हैं। याद है ना! 70 वर्ष सोचो, चाहे आप पीछे आये हो लेकिन स्थापना के तो 70 वर्ष हो गये ना! चाहे अभी आये हो, लेकिन स्थापना के कर्तव्य में आप सभी साथी हो ना! साथी तो हो ना! चाहे आज पहले बारी आये हैं। पहले बारी जो आये हैं वह हाथ उठाओ। जो मधुवन में पहली बार मिलने आये हैं वह हाथ उठाओ। लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा आप सभी भी चाहे अभी एक साल हुआ है, दो साल हुआ है लेकिन अपने को क्या कहलाते हो ? ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार या पुरुषार्थी कुमार ? क्या कहलाते हो ? कोई अपने को पुरुषार्थी कुमार कहते हैं क्या ! ब्रह्माकुमार का साइन लगाते हो ना! सभी बी.के. लिखते हो या पी.के. लिखते हो ? पुरुषार्थी कुमार। तो वायदा क्या है ? साथी रहेंगे, साथ चलेंगे, कम्बाइण्ड रहेंगे, तो कम्बाइण्ड में समानता तो चाहिए ना!

आज के 70 वर्ष का उत्सव तो मनाते आते हो, बापदादा ने देखा है, जो भी ज़ोन टर्न देता है वह 70 वर्ष का मनाते हैं। सम्मान समारोह मनाते हैं। मनाते हैं ना सभी। बस सिर्फ छोटी छोटी गिफ्ट दे देते हैं बस। लेकिन आज एक तो बर्थ डे है, मनाने आये हो ना, पक्का है ना ? और दूसरा 70 वर्ष समाप्त हुए, तो सम्मान भी मना रहे हो, बर्थ डे भी मना रहे हो, उसमें सौगात क्या देंगे ? ट्रे दे देंगे, चादर दे देंगे ? क्या सौगात लाये हो ? चलो चांदी का गिलास दे देंगे ! लेकिन आज के दिन बापदादा की शुभ आशा है अपने आशाओं के दीपक बच्चों प्रति। तो बतायें, पहली लाइन बताओ बतायें ? बताना वा सुनना माना क्या ? एक कान से सुनना और दिल में समा देना, ऐसे ? निकालेंगे तो नहीं, इतना तो नहीं है लेकिन दिल में ही समा देते हैं। तो आज के दिन, बतायें पहली लाइन बताओ, कांध हिलाओ, टीचर्स कांध हिलाओ। अच्छा झण्डा हिला रहे हैं। डबल फारेनर्स बतायें ? अपने को बांधना पड़ेगा, तभी कहो हाँ, ऐसे ही नहीं। क्योंकि 70 वर्ष देखो, 70 वर्ष तो बापदादा ने भी अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी, 70 वर्ष खेल देख लिया। चलो 70 नहीं तो 50, 40, 30, 20 लेकिन इतना समय तो यह तीन खेल तो खूब देखे बच्चों के। तो आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं हैं, तो आप बच्चों का जागरण कौन सा है ? कौन सी नींद में घड़ी-घड़ी सो

जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं।

तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखने चाहता है। कभी भी देखो क्रोध आता है, अभिमान आता है, लोभ आता है, कारण क्या बताते हैं? एक बापदादा को ट्रेडमार्क दिखाई देती है, कोई भी बात होती है ना! तो क्या कहते हैं, यह तो चलता है, पता नहीं किसने चलाया है? लेकिन शब्द यही कहते हैं यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। यह कोई नई बात थोड़ेही है, यह होता ही है। यह क्या है? अलबेलापन नहीं है? यह भी तो करता है, मैजॉरिटी क्रोध से बचने के लिए यह किया तब हुआ। मैंने किया रांग वह नहीं कहेंगे। यह किया ना, यह हुआ ना, इसलिए हुआ। दूसरे पर दोष रखना बहुत सहज है। यह ना करे तो नहीं होगा। और बाप ने कहा वह नहीं होगा। वह करे तो होगा, बाप की श्रीमत पर क्या क्रोध को नहीं खत्म कर सकते? आजकल क्रोध का बच्चा रोब, रोब भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। तो क्या आज चार का भी व्रत लेंगे? जैसे पहली बात का विशेष दृढ़ संकल्प मैजॉरिटी ने किया है। क्या ऐसे ही चार का संकल्प, यह बहाना नहीं देना, इसने यह किया तब मेरा हुआ, और बाप जो बार-बार कहता है, वह याद नहीं, उसने जो किया वह याद आ गया, तो यह बहानेबाजी हुई ना! तो आज बापदादा बर्थ डे की गिफ्ट चाहते हैं यह तीन बातें, जो चार को हल्का कर देती हैं। संस्कार का सामना तो करना ही है, संस्कार का सामना नहीं, यह पेपर है। एक जन्म की पढ़ाई और सारे कल्प की प्राप्ति, आधाकल्प राज्य भाग्य, आधाकल्प पूज्य, सारे कल्प की एक जन्म में प्राप्ति, वह भी छोटा जन्म, फुल जन्म नहीं है, छोटा जन्म है। तो क्या हिम्मत है? जो समझते हैं, हिम्मत रखेंगे जरूर, यह नहीं पुरुषार्थ करेंगे, अटेन्शन रखेंगे.. गे गे नहीं चाहिए। छोटे बच्चे नहीं हो, 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं। वह तो तीन चार मास के बच्चे गे गे करते हैं। तो आप बाप के साथी हो ना! विश्व कल्याणकारी हो, उसको तो 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं। बापदादा हाथ नहीं उठवाते क्योंकि बापदादा ने देखा है हाथ उठाके भी कभी कभी अलबेले हो जाते हैं। लेकिन जो समझते हैं कुछ भी हो जाए, पहाड़ जैसा पेपर भी आ जाए लेकिन पहाड़ को रूई बना देंगे, ऐसा दृढ़ संकल्प करने की, क्योंकि संकल्प बहुत अच्छे करते हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं, जिस समय संकल्प करते हो। लेकिन है क्या, 70 वर्ष तो हल्का छोड़ा लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि समय का कोई भरोसा नहीं और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल का हिसाब है। अच्छा अभी अभी कर लेंगे, बहुतकाल का हिसाब है। क्योंकि प्राप्ति हर एक क्या चाहता है? अभी हाथ उठवाते हैं, राम सीता बनेगा कोई? जो रामसीता बनने चाहते हैं वह हाथ उठाओ, राजाई मिलेगी। कोई हाथ उठा रहे हैं। राम सीता बनेंगे, लक्ष्मी नारायण नहीं बनेंगे? उठा रहे हैं? देखो, आप देखो उठा रहे हैं। फारेनर्स उठा रहे हैं? डबल फारेनर्स में कोई उठाता है? जब बहुतकाल का भाग्य प्राप्त करने चाहते हो, लक्ष्मी नारायण बनना अर्थात् बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करना। तो बहुतकाल की प्राप्ति है। तो हर बात में बहुतकाल तो चाहिए ना! अभी 63 जन्म के बहुतकाल का संस्कार है तो कहते हो ना, हमारा भाव नहीं है, भावना नहीं है, संस्कार है 63 जन्म का। तो बहुतकाल का हिसाब है ना। इसीलिए बापदादा यही चाहते हैं कि संकल्प में दृढ़ता की कमी हो जाती है, हो जायेगा.. चलता है, चलने दो, कौन बना है, और एक तो बहुत अच्छी बात सबको आती है, बापदादा ने नोट किया है बातें, अपनी हिम्मत नहीं चलती ना, तो कहते हैं महारथी भी ऐसे करते हैं, हमने किया तो क्या हुआ? लेकिन बापदादा पूछते हैं कि क्या जिस समय महारथी गलती करता है, उस समय महारथी है? तो महारथी का नाम क्यों खराब करते हो? उस समय वह महारथी है ही नहीं, तो महारथी कहके अपने को कमजोर करना यह अपने को धोखा देना है। दूसरे को देखना सहज

होता है, अपने को देखने में थोड़ी हिम्मत चाहिए। तो आज बापदादा हिसाब लेने आये हैं। लेकिन हिसाब का किताब खत्म कराने की गिफ्ट लेने आये हैं। कमजोरी और बहानेबाजी का हिसाब किताब, बहुत बड़ा किताब है उसको खत्म करना है। तो हर एक जो समझते हैं हम करके दिखायेंगे, करना ही है, झुकना ही है, बदलना ही है, परिवर्तन सेरीमनी मनानी ही है। जो समझते हैं संकल्प करेंगे वह हाथ उठाओ। दृढ़ या चालू? चालू संकल्प भी होता है और दृढ़ संकल्प भी होता है। तो आप सबने दृढ़ उठाया है? दृढ़ उठाया है? मधुबन वाले बड़ा हाथ उठाओ, इतना नहीं। यहाँ मधुबन वाले बैठते हैं। बहुत नजदीक बैठने का चांस है। मधुबन वाले तो एकदम सामने बैठे हैं। पहली सीट मधुबन वालों को मिलती है, बापदादा खुश है। पहले बैठे हो, पहले ही रहना।

तो आज की गिफ्ट तो बढ़िया हुई ना। बापदादा को भी खुशी है क्योंकि आप एक नहीं हो। आपके पीछे अपनी राजधानी में आपकी रॉयल फैमिली, आपकी रॉयल प्रजा, फिर द्वापर से आपके भक्त, सतो रजो तमोगुणी, तीन प्रकार के भक्त, लम्बी लाइन है आपके पीछे। जो आप करेंगे वह आपके पीछे वाले करते हैं। आप बहानेबाजी देते हो तो आपके भक्त भी बहुत बहानेबाजी करते हैं। अभी ब्राह्मण परिवार भी आपको देख उल्टी कापी करने में तो होशियार होते हैं ना। तो अभी दृढ़ संकल्प करो, संस्कार का टक्कर हो, स्वभाव का मतभेद हो, तीसरी बात कमजोरों की होती है, कोई ने किसी के ऊपर झूठी बात कह दी, तो कई बच्चे कहते हैं हमको ज्यादा क्रोध आता है, झूठ पर। लेकिन सच्चे बाप से वेरीफाय कराया, सच्चा बाप आपके साथ है, तो सारी झूठी दुनिया एक तरफ हो और एक बाप आपके साथ है, विजय आपकी निश्चित हुई पड़ी है। कोई आपको हिला नहीं सकता, क्योंकि बाप आपके साथ है। कह रहे हैं, झूठ है। तो झूठ को झूठा ही कर दो ना, बढ़ाते क्यों हो! तो आज बाप को बहानेबाजी अच्छी नहीं लगती, यह हुआ, यह हुआ, यह हुआ... यह यह का गीत समाप्त होना चाहिए। अच्छा हुआ, अच्छा होगा, अच्छा रहेंगे, अच्छा सबको बनायेंगे। अच्छा अच्छा अच्छा का गीत गाओ। तो पसन्द है? पसन्द है? बहानेबाजी को खत्म करेंगे? करेंगे? दो-दो हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ। अच्छा। हाँ अच्छी तरह से हिलाओ। अच्छा, देखने वाले भी हाथ हिला रहे हैं। कहाँ भी देख रहे हैं, हाथ हिलाओ। आप तो हिला रहे हो। अच्छा अभी नीचे करो, अभी अपने परिवर्तन की ताली बजाओ। अच्छा

यह दिन, यह समय, संगठन का चित्र सदा अपने सामने रखना। कभी भी कमजोरी आ जाए, आने नहीं देना, गेट बन्द। गेट तो पता है ना! बन्द करो। डबल बन्द करो, डबल ताला लगाना, आजकल सिंगल ताला नहीं चलता। एक याद का, एक मन को सेवा में बिजी रखने का। यह दो आलमाइटी ताले लगा देना। गाडरेज का नहीं गॉड का। पक्का जागरण करना, पक्का व्रत रखना।

बापदादा को हर बच्चे से अति प्यार है। चाहे लास्ट नम्बर भी हो फिर भी बापदादा का उस बच्चे पर भी अति प्यार है। क्यों? ऐसे बच्चे कोई बाप को मिलने हैं? एक ही बापदादा है, जिसको ब्राह्मण बच्चे मिलते हैं। कोई भी महात्मा हो, महामण्डेश्वर हो, धर्मपिता हो, कोई को भी ऐसे बच्चे मिले हैं? जो हर बच्चा कहे मेरा बाबा। है कोई, हिस्ट्री में है? इसीलिए बापदादा हर बच्चे के महत्व को जानते हैं। बच्चे कहते हैं हम गीत गाते हैं वाह बाबा वाह! बाप कहते हैं आपसे भी 100 गुणा ज्यादा बाप गीत गाता है, वाह बच्चे वाह! ठीक है ना! वाह वाह हो ना! मधुबन वाले वाह वाह बच्चे हो ना! पीछे वाले वाह वाह बच्चे हो ना! अच्छा।

भोपाल ज़ोन की सेवा का टर्न है:- हाँ झण्डा हिलाओ तो पता पड़े। अच्छा है, भोपाल भी मध्यप्रदेश में है और मध्यप्रदेश बहुत बड़ा है। सेवा तो की है, शुरू-शुरू में अच्छे-अच्छे गवर्नर और वी.आई.पी.

लाये हैं लेकिन अभी इतना कोई नहीं लाया है। लाये हैं, लेकिन ऐसे गवर्नर या कोई विशेष नहीं लाये हैं। तो भोपाल को विशेष बापदादा, टीचर्स सुनना ध्यान से, दो सेवायें देना चाहते हैं। बतायें कौन सी? एक तो कोई ऐसा वी.आई.पी लायें जैसे अभी अभी एकजैम्पुल देखा राजस्थान की गवर्नर आई और दैवी फैमिली है, यह अनुभव अच्छा करके गई। और साथ-साथ जिम्मेवारी भी सेवा की उठाके गई। सिर्फ अच्छा है, अच्छा है, बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, नहीं। अपने ऊपर जिम्मेवारी उठाके गई। ऐसे कोई विशेष वी.आई.पी मध्य प्रदेश में हैं, बापदादा जानते हैं, छिपे हुए हैं, सिर्फ उसको मैदान पर लाना है। और दूसरा जो भी बड़े-बड़े सेवाकेन्द्र हैं, जिसको आप बड़े कहते हो वह लिस्ट देना। तो हर एक बड़े सेन्टर जिसके अन्दर छोटे उपसेवाकेन्द्र गीता पाठशालायें बहुत-बहुत हैं। क्योंकि गीता पाठशालाओं की लिस्ट बापदादा पूछते हैं तो बहुत-बहुत गीता पाठशालायें भी हैं। उन बड़े सेन्टरों को कम से कम एक साल के अन्दर, बहुत टाइम दे रहे हैं, इतना देना नहीं चाहिए। लेकिन एक साल के अन्दर कम से कम बड़े सेन्टर को अपना एक वारिस क्वालिटी सामने लाना है। चाहे अभी हो भी, लेकिन यज्ञ के अन्दर वह वारिस क्वालिटी प्रसिद्ध हो। ऐसे नहीं हैं तो बहुत। कई सेन्टर कहते हैं हमारे पास वारिस हैं, लेकिन वारिस छिप नहीं सकते। वारिस की क्वालिटी होगी तो वह छिप नहीं सकता। बापदादा गुप्त वारिस को नहीं मानता है। उसका कनेक्शन उसका रिलेशन कायदे प्रमाण होना ही चाहिए। ऐसा वारिस हरेक बड़ा सेन्टर सामने लाये। ला सकते हैं ना बड़े सेन्टर्स? इसमें नहीं कहना हम तो छोटे हैं। छोटे नहीं बनना। छोटे भी बड़े बनना। ठीक है टीचर्स? ठीक बोला। हाथ उठाओ जो समझते हैं छोटे भी बड़े बनकर दिखायेंगे, वह झण्डा हिलाओ। दिल से हिला रहे हो ना! तो यह दो कार्य भोपाल को करना है, ठीक है। भोपाल वाले, आपमें से ही तो कोई वारिस बनेंगे ना। तो देखेंगे, वैसे तो 6 मास में तैयार होना चाहिए लेकिन फिर भी बापदादा एक वर्ष की छुट्टी देते हैं। ठीक है। बाकी सेवा का यह गोल्डन चांस लेते हो, यह अच्छा है। बापदादा सदा ही सुनाते हैं, कि बहुत स्व उन्नति के लिए अच्छा चांस है क्योंकि सेवा की जिम्मेवारी भी अलग नहीं है, यज्ञ सेवा की जिम्मेवारी है। वहाँ तो फिर भी समय और अटेन्शन देना पड़ता है यहाँ तो एक ही अटेन्शन है स्व उन्नति या यज्ञ सेवा। यज्ञ सेवा का पुण्य अगर हर समय जमा करो तो आपके पुण्य का खाता बहुत बहुत जल्दी बढ़ सकता है। तो अच्छा किया है, संख्या भी अच्छी लाये हैं। चांस अच्छा लिया है। अभी आगे की रिजल्ट देखेंगे। अच्छा।

60 देशों के 700 डबल विदेशी आये हैं:- बापदादा को डबल विदेशियों को देख एक बात की विशेष खुशी होती है, एकस्ट्रा खुशी होती है। वह इस बात की कि शुरू शुरू में जब डबल फारेनर्स आये थे, टीचर्स को याद होगा तो भिन्न-भिन्न कल्चर से ट्रांसफर होने में बड़ी मेहनत लगती थी लेकिन अभी बापदादा ने देखा है कि इसकी चर्चा इतनी नहीं होती है, क्यों कारण क्या है? क्योंकि एक दो के संगठन को देख वृद्धि अच्छी हुई है ना! और बापदादा ने सुना भी है कि मैजॉरिटी अपने अपने आसपास सन्देश देने का कोई न कोई साधन अपनाते हैं, सन्देश देने का उमंग अच्छा है। तो उसकी रिजल्ट में देखा गया है कि हर टर्न में विदेशियों का ग्रुप कम नहीं होता है। क्वालिटी भी अच्छी है और क्वान्टिटी भी बढ़ती जाती है इसलिए एक चंदन का वृक्ष बन गये हैं। तो चंदन का वृक्ष देख बापदादा खुश होते हैं। समाचार तो बापदादा के पास पहुंच ही जाता है। चाहे आप ईमेल में भेजते हो, तो बापदादा के पास तो कापी पहले आती है। सेवा का उमंग अच्छा है। अभी सिर्फ आज का व्रत पक्का करना है। नम्बर लेंगे ना विदेशी? नम्बर लेना है? कौन सा नम्बर? पहला कि दूसरा भी चलेगा? (पहला) जिसका एक बाप से प्यार है वह एक समान एक ही नम्बर बनेंगे। जो

स्तोगन है एक बाप ही संसार है, जब है ही एक संसार तो नम्बर एक हुआ ना। जैसे आपका टाइटल है डबल फारेनर्स। तो पुरुषार्थ में संकल्प के दृढ़ता में भी डबल फोर्स का पुरुषार्थ करके दिखाओ। अटेन्शन रखते हैं, सिर्फ अन्तर क्या हो जाता है? तीव्रता की दृढ़ता कम हो जाती है, प्रोग्राम बहुत अच्छा बनाते हो, बापदादा भी टापिक सुनते हैं, ग्रुप ग्रुप के पुरुषार्थ के विषय देखकर बहुत खुश होते हैं लेकिन क्या है, जब टापिक शुरू करते या लक्ष्य रखते हो वह बहुत फोर्स का रखते हो फिर कुछ न कुछ पेपर तो आता ही है, और आना ही है बिना पेपर कोई पास नहीं होता। उसमें दृढ़ता की कमी हो जाती है और साधारण पुरुषार्थ हो जाता है। सदा दृढ़ता रहे इसकी कमी हो जाती है। तो सबमें डबल पुरुषार्थी। करके ही दिखायेंगे, बनके ही दिखायेंगे। ठीक है ना। इतना उमंग-उत्साह है ना! है? है, सिर्फ दृढ़ता को चेक करो, बातों में नहीं जाओ। दृढ़ता को देखो। अच्छा।

डबल विदेशी कुमारियों का गुपः- अच्छा यह बैनर बनाया है। हाथ हिलाओ। यह अच्छा करते हो क्योंकि मधुबन के वायुमण्डल का भी प्रभाव पड़ता है। दादियों का भी प्यार और वृत्तियों के वायुमण्डल का साथ होता है तो यह जो स्पेशल टापिक रखते हो और आपस में रूहरिहान करते हो तो इसमें समझते हो कि स्पेशल मदद मिलती है। मिलती है मदद? अच्छा, यह नशा कितना समय रहता है? 6-8 मास रहता है कि सदा रहता है? इसको रिवाइज करो, अन्दर में रिवाइज करो और रियलाइज़ करो, जो भी ज्ञान की बातें हैं ना, उसको रिवाइज भी करो और रियलाइज़ भी करो, एक एक प्वाइंट जो शिक्षा की मिलती है, या नशे की खुशी की मिलती है उसको रियलाइज़ करो। अपने आपसे रियलाइज़ करो, कि हर बात अनुभव में है? अनुभव किया है या सिर्फ नॉलेज के आधार से सोचते हैं, सुनते हैं, वर्णन करते हैं? बापदादा ने टोटल देखा है चाहे देश में, चाहे विदेश में हर प्वाइंट के अनुभव में डीप में जाना यह थोड़ा अटेन्शन कम है। सुनने और सुनाने में अटेन्शन अच्छा है, उसमें नम्बरवन हैं, लेकिन अनुभवी मूर्त बनना, चलते फिरते आत्मा का अनुभव होना, बाप के कम्बाइण्ड रूप का अनुभव होना, अनुभव में कमी है? इसलिए रियलाइज़ करो, तो रीयल गोल्ड बन जायेंगे। बाकी बापदादा खुश है, अटेन्शन भी टीचर्स देती हैं, आपकी दादी (जानकी दादी) बहुत अटेन्शन देती है। इतना ही अटेन्शन, जितना यह आपके ऊपर देती है और उम्मीदें रखती है, उतना हर एक अपने ऊपर जो बाप की उम्मीदें हैं, वह अटेन्शन रखें तो नम्बरवन तो हुए ही पड़े हो। अपनी कमी को रियलाइज़ करते भी हो लेकिन परिवर्तन करने में कमी पड़ जाती है। उसमें बापदादा ने देखा है एक दृढ़ता की कमी है और दूसरी मन को एकाग्र करने की विशेषता जिस घड़ी चाहे उस घड़ी मन एकाग्र हो जाए, जहाँ चाहो वहाँ हो जाए, इसकी कमी है। इसके ऊपर अटेन्शन देंगे, चाहे भारत वाले चाहे फारेनर्स। दृढ़ता और एकाग्रता, अभी तक वेस्ट है, एकाँनामी नहीं है। संकल्प, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, हर संस्कार स्वभाव में भी एकाँनामी से खर्च करो। एकाँनामी भी जरूरी है। यज्ञ की एकाँनामी, जितनी संकल्पों की एकाँनामी होगी उतनी यज्ञ की एकाँनामी के बिना रह नहीं सकेंगे। यज्ञ की एकाँनामी का नहीं आता, संस्कार इमर्ज नहीं होता, इससे समझो, समय, संकल्प खजाने के एकाँनामी की आदत नहीं है इसलिए यज्ञ एकाँनामी का संस्कार इमर्ज नहीं होता। तो दृढ़ता, एकाग्रता और एकाँनामी। ठीक है। बाकी बापदादा खुश है, सेवा के प्लैन में भी खुश है। अच्छी सेवा कर रही है ना। यह सामने गायत्री बैठी है ना। सेवा का उमंग बहुत है ना।

इन्टरनेशनल मदर गुपः- चित्र बहुत अच्छा बना लेते हैं, यह इन्हीं की विशेषता है। अच्छा बनाते हैं। देखो इतनी मदर्स अगर एक एक मदर जगतमाता बन जाए, वृत्ति से हर समय, हर संकल्प में हर माता जगत माता के स्वरूप में स्थित हो जाए तो कितने वायब्रेशन वर्ल्ड में मिलेंगे। क्योंकि माँ

की भावना जल्दी पहुंचती है। तो जितनी भी मदर्स खड़ी हुई हैं, हर समय अपने जगत के बच्चों को, भाईयों को वायब्रेशन देती रहो। जैसे माँ प्यार से बच्चे की पालना करती, ऐसे आप सभी को बच्चे समझके पालना करो। वायब्रेशन फैलाओ। ठीक है। अभी देखेंगे, सारे दिन में हर माता ने जगतमाता बन वायब्रेशन फैलाये! इसमें स्व-उन्नति ऑटोमेटिक है, यह करके दिखाना। अच्छी हैं मातायें, बापदादा की नज़र में हैं, और हिम्मत वाली हैं, कर सकती हैं। तो आगे बढ़ते रहना। अच्छा।

रसिया वालों ने प्रोजेक्ट बनाया है, जिसमें 50 हजार किलोमीटर का सफर तय करके 150 शहरों की सेवा करेंगे:-

अच्छा है, बापदादा ने बच्ची द्वारा भी समाचार सुना था और बापदादा को एक बात यह भी अच्छी लगी, जो बापदादा ने कहा था तो ओ.के. में रिजल्ट भेजना, वह भी अच्छी तरह से भेजी थी, तो मुबारक हो। और यह भी प्लैन सुना था, अच्छा उमंग-उत्साह से बनाया है और विधि भी जो बनाई है वह सहज हो जायेगी। तो उमंग-उत्साह में सफलता समाई हुई है। हैण्डस भी अच्छे हैं। संख्या भी अच्छी है। तो बापदादा को पसन्द है। और सबकी शुभ भावना, अभी सभी सुन रहे हैं तो सभी की शुभ भावना भी आपके इस प्रोग्राम के साथ है, मुबारक हो।

मोहनी बहन ने सुनाया - बाम्बे से दादी जी ने और साथ में सभी सेवा साथियों ने बहुत-बहुत याद भेजी है:- दादी तो सबके दिल की प्यारी दादी है। सभी दिल से अपने प्यार की बहुत शुभ लहरें भेज रहे हैं। और बापदादा ने सुनाया था, कि चाहे दादी के लिए कहेंगे ऐसे कि पेशेन्ट है, लेकिन वह प्रैक्टिकल में डाक्टर्स भी आश्चर्य खाते हैं, कि यह पेशेन्ट नहीं है लेकिन पेशेन्स में रहने वाली, पेशेन्ट होते भी पेशेन्स का स्वरूप क्या होता है, वह दिखा रही है। आपको लगेगा दादी को कुछ हो रहा है, लेकिन दादी से पूछेंगे, तो कहेगी कुछ नहीं है। तो यह पेशेन्ट नहीं है, पेशेन्स स्वरूप दिखा रही है। बीमारी भी है लेकिन न्यारी और प्यारी है। बीमारी चल रही है लेकिन वह अपनी मस्ती में है। यह शरीर प्युअरीफाय हो रहा है। अपनी लास्ट स्टेज, भविष्य और भक्ति की स्टेज बन रही है। अभी है जीवन में होते मुक्त और लास्ट समय में है अष्ट देवता प्रसिद्ध होना और भक्ति में है इष्ट देव बनना। तीनों ही संस्कार का पार्ट बजा रही है। बाकी जो भी सेवाधारी सेवा करते हैं, वह भी दिल से कर रहे हैं, लेकिन सिर्फ उन्हीं के लिए नहीं है, वह तो दिन रात अपने दिल से कर रहे हैं लेकिन सारे ब्राह्मण परिवार में भी कोई वेस्ट थाट्स नहीं चलाओ। दादी आपकी है, आपकी ही रहेगी। बापदादा ने देखा है जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए और दादी को दृष्टि दी उस दृष्टि की विल पावर से बहुत सर्व स्नेही, सर्व समर्थ, सर्व कार्यकर्ता निमित्त और निर्माण इसमें ब्रह्मा बाप को पूरा-पूरा फॉलो करते हुए सारे ब्राह्मण परिवार में शक्ति भरी और बापदादा के अपनी दादियों के साथ-साथ रहके बहुत अच्छा पार्ट बजाया, अभी भी सूक्ष्म में आपके साथ पार्ट बजा रही है। बापदादा भी दादी की कमाल गाते हैं। सबको संगठन के बंधन में, स्नेह और सहयोग के आधार से बांधा और यह अमर वरदान है। सबका प्यार अच्छा है, यह देख करके भी बापदादा को खुशी है।

बाकी बापदादा देख रहे हैं - जो भी सभी ने कार्ड भेजे हैं, पत्र भेजे हैं, ग्रीटिंग्स भेजे हैं, वह बापदादा ने स्वीकार की और रिटर्न में एक एक को नाम और विशेषता सहित यादप्यार और दुआयें दे रहे हैं। जिन्होंने कार्ड और पत्र द्वारा नहीं लेकिन दिल से, संकल्प से भी अपना उमंग-उत्साह भेजा है, उन सभी बच्चों को बहुत-बहुत पदमगुणा यादप्यार और बाप के दिल की दुआयें।

बाकी आप सभी सम्मुख बैठे हो, सम्मुख का मजा अपना ही है। साइंस के साधनों द्वारा चाहे कितना भी स्पष्ट हो, कितना भी अच्छा लगता हो, लेकिन सम्मुख मधुबन में उन्नति का द्वार अपना

ही अनुभव कराता है। अच्छा अभी जो बापदादा ने कहा वह हरेक एक मिनट के लिए दृढ़ संकल्प स्वरूप में बैठो कि बहानेबाजी, आलस्य, अलबेलापन को हर समय दृढ़ संकल्प द्वारा समाप्त कर बहुतकाल का हिसाब जमा करना ही है। कुछ भी हो, कुछ नहीं देखना है लेकिन बाप के दिलतख्तनशीन बनना ही है, विश्व के तख्तनशीन बनना ही है। इस दृढ़ संकल्प स्वरूप में सभी बैठो। अच्छा।

चारों ओर के सदा उमंग-उत्साह के अनुभव में रहने वाले, सदा दृढ़ता सफलता की चाबी को कार्य में लगाने वाले, सदा बाप के साथ और हर कार्य में साथी बन रहने वाले, सदा एकनामी और एकॉनामी, एकाग्रता स्वरूप में आगे से आगे उड़ते रहने वाले, बापदादा के अति लाडले, सिकीलधे, विशेष बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- अभी दादियां भी सिकीलधी हो गई हैं। गिनती में आ गई हैं। सिकीलधी हो गई हैं ना। बस गीत गाते रहो इतना प्यार करेगा कौन! बाप कहता है इतना करते हैं बच्चे, बच्चे नहीं होते तो बाप क्या करता। बच्चे नहीं होते तो बाप कौन कहता! (जानकी दादी ने कहा, बाबा संसार तो है लेकिन संस्कार में आ जाए, बाबा यह करो ना) लेकिन बाप करेगा तो पायेगा कौन? यह भी बाप करे तो बाप को तो फल पाना नहीं है। सहयोग देना यह बाप का कर्तव्य है, टांग भी लगा दे, पांव भी लगा दे, लेकिन चलना तो खुद को पड़ेगा ना। अच्छा। बहुत अच्छा।

तीनों बड़े भाईयों से:- शिवरात्रि का यादगार बाप और बच्चों के इकट्ठे जन्म का यादगार है, तो संगठन की शक्ति, बाप ने भी अकेला कुछ नहीं किया, बच्चों के साथ हर कार्य किया, तो संगठन की शक्ति, उसको फिर से प्रैक्टिकल स्टेज पर लाना चाहिए। एक ने कहा और दूसरे ने किया। एक दो की बातों को न देख संगठन को मिलाना, यही आवश्यक है। आप निमित्त आत्माओं का यह काम है। संगठन को स्टेज पर प्रत्यक्ष करना। यही आवश्यकता है। ठीक है ना!

भोली दादी ने 9 फरवरी को शरीर छोड़ दिया: भोली से भी सबका प्यार था। चाहे कैसी भी तबियत रही लेकिन भण्डारा नहीं छोड़ा, जो ब्रह्मा बाप ने भण्डारे में बिठाया तो अन्त तक भण्डारा नहीं छोड़ा। यह भी कर्मणा की विशेष देवी रही। इसलिए सभी का आन्तरिक प्यार अच्छा रहा। (अभी मीरा भी अच्छा करेगी) हाँ क्यों नहीं करेगी, जरूर करेगी। पालना तो अच्छी ली है। अच्छा।

बापदादा ने डायमण्ड हाल की स्टेज पर अपने हस्तों से शिवध्वज फहराया और सबको बधाईयां दी:

सभी ने बहुत-बहुत प्यार से बाप का बर्थ डे और अपना बर्थ डे मनाया, इसकी पदम पदम पदमगुणा मुबारक हो, बधाई हो। जैसे यह चिन्ह रूप का झण्डा लहराया और फूल बरसाये ऐसे ही हर एक आत्मा के दिल में बाप की याद का झण्डा, स्मृति का झण्डा लहराओ। आपके दिल में तो है ही लेकिन अभी सर्व के दिलों में बाप का झण्डा अर्थात् याद का झण्डा लहराओ तो सारा विश्व फूलों का बगीचा बन जायेगा। कांटों का जंगल खत्म हो फूलों का बगीचा बन जायेगा। ऐसा संकल्प सदा दिल में इमर्ज करो, करना ही है, होना ही है, हुआ ही पड़ा है, सिर्फ निमित्त बनना है। अच्छा।

“परमात्म संग में, ज्ञान का गुलाल, गुण और शक्तियों का रंग लगाना ही सच्ची होली मनाना है”

आज बापदादा अपने लकीएस्ट और होलीएस्ट बच्चों से होली मनाने आये हैं। दुनिया वाले तो कोई भी उत्सव सिर्फ मनाते हैं लेकिन आप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं, मनाना अर्थात् बनना। तो आप होली अर्थात् पवित्र आत्मायें बन गये। आप सभी कौन सी आत्मायें हो? होली अर्थात् महान पवित्र आत्मायें। दुनिया वाले तो शरीर को स्थूल रंग से रंगते हैं लेकिन आप आत्माओं ने आत्मा को कौन से रंग में रंगा है? सबसे अच्छे ते अच्छा रंग कौनसा है? अविनाशी रंग कौनसा है? आप जानते हो, आप सबने परमात्म संग का रंग आत्मा को लगाया जिससे आत्मा पवित्रता के रंग में रंग गई। यह परमात्म संग का रंग कितना महान और सहज है इसलिए परमात्म संग का महत्व अभी अन्त में भी सतसंग का महत्व होता है। सतसंग का अर्थ ही है परमात्म संग, जो सबसे सहज है। संग में रहना और ऊंचे ते ऊंचे संग में रहना क्या मुश्किल है क्या? और इस संग के रंग में रहने से जैसे परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है वैसे आप बच्चे भी ऊंचे ते ऊंचे पवित्र महान आत्मायें पूज्य आत्मायें बन गई। यह अविनाशी संग का रंग प्यारा लगता है ना! दुनिया वाले कितना प्रयत्न करते हैं परम आत्मा का संग तो छोड़ो सिर्फ याद करने में भी कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन आप आत्माओं ने बाप को जाना, दिल से कहा मेरा बाबा। बाप ने कहा “मेरे बच्चे” और रंग लग गया। बाप ने कौन सा रंग लगाया? ज्ञान का गुलाल लगाया, गुणों का रंग लगाया, शक्तियों का रंग लगाया, जिस रंग से आप तो देवता बन गये लेकिन अब कलियुग अन्त तक भी आपके पवित्र चित्र देव आत्माओं के रूप में पूजे जाते हैं। पवित्र आत्मायें बहुत बनते हैं, महान आत्मायें बहुत बनते हैं, धर्म आत्मायें बहुत बनते हैं लेकिन आपकी पवित्रता देव आत्माओं के रूप में आत्मा भी पवित्र बनती और आत्मा के साथ शरीर भी पवित्र बनता है। इतनी श्रेष्ठ पवित्रता बनी कैसे? सिर्फ संग के रंग से। आप सभी फलक से कहते हो, अगर कोई आप बच्चों से पूछे, परमात्मा कहाँ रहता है? परमधाम में तो है ही लेकिन अभी संगम में परमात्मा आपके साथ कहाँ रहता है? आप क्या जवाब देंगे? परमात्मा को अभी हम पवित्र आत्माओं का दिलतख्त ही अच्छा लगता है। ऐसे है ना? आपके दिल में बाप रहता, आप बाप के दिल में रहते। रहते हैं? हाथ उठाओ जो रहता है? रहते हैं? अच्छा। बहुत अच्छा। फलक से कहते हो परमात्मा को मेरे दिल के सिवाए और कहाँ अच्छा नहीं लगता है क्योंकि कम्बाइण्ड रहते हो ना! कम्बाइण्ड रहते हो ना! कई बच्चे कम्बाइण्ड कहते हुए भी सदा बाप की कम्पनी का लाभ नहीं लेते हैं। कम्पैनियन तो बना लिया है, पक्का है। मेरा बाबा कहा तो कम्पैनियन तो बना लिया लेकिन हर समय कम्पनी का अनुभव करना, इसमें अन्तर पड़ जाता है। इसमें बापदादा देखते हैं नम्बरवार फायदा उठाते हैं। कारण क्या होता, आप सभी अच्छी तरह से जानते हो।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है अगर दिल में रावण की कोई पुरानी जायदाद, पुराने संस्कार के रूप में रह गये है तो रावण की चीज़ पराई चीज़ हो गई ना! पराई चीज़ को कभी भी अपने पास रखा नहीं जाता है। निकाल दिया जाता है। लेकिन बापदादा ने देखा है, रूहरिहान में सुनते भी हैं कि क्या कहते बच्चे, बाबा मैं क्या करूँ, मेरे संस्कार ही ऐसे हैं। क्या यह आपके हैं, जो कहते हो मेरे संस्कार? यह कहना राइट है कि मेरे पुराने संस्कार हैं, मेरी नेचर है, राइट है? राइट है? जो समझते हैं राइट है वह हाथ उठाओ। कोई नहीं उठाता। तो कहते क्यों हो? गलती से कह देते हो? जब मरजीवा बन गये, आपका अभी सरनेम क्या है? पुराने जन्म का सरनेम है वा बी.के. का सरनेम है। क्या अपना लिखते हो? बी.के. या फलाना, फलाना..? जब मरजीवा बन गये तो पुराने संस्कार मेरे संस्कार कैसे हुए? यह पुराने तो पराये संस्कार हुए। मेरे तो नहीं हुए ना! तो इस होली में कुछ तो जलायेंगे ना! होली जलाते भी हैं और रंग लगाते भी हैं तो आप सभी इस होली पर क्या जलायेंगे? मेरे संस्कार, यह अपने ब्राह्मण जीवन की डिक्शनरी से समाप्त करना। जीवन भी एक डिक्शनरी है ना! तो अभी कभी स्वप्न में भी यह नहीं सोचना, संकल्प की तो बात ही छोड़ो लेकिन पुराने संस्कार को मेरे संस्कार मानना, यह स्वप्न में भी नहीं सोचना। अब तो जो बाप के संस्कार वह आपके संस्कार, सभी कहते हो ना हमारा लक्ष्य है बाप समान बनना। तो सभी ने अपने दिल

में यह दृढ़ संकल्प का अपने से प्रतिज्ञा की? गलती से भी मेरा नहीं कहना। मेरा मेरा कहते हो ना, तो जो पुराने संस्कार हैं ना वह फायदा उठाते हैं। जब मेरा कहते हैं तो वह बैठ जाते हैं, निकलते नहीं हैं।

बापदादा सभी बच्चों को किस रूप में देखना चाहते हैं? जानते तो हो, मानते भी हो। बापदादा हर एक बच्चे को भ्रुकुटी के तख्तनशीन, स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा, अधीन बच्चा नहीं, राजा बच्चा, कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर, मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप में देख रहे हैं। आप अपना कौन सा रूप देखते? यही ना, राज्य अधिकारी हो ना! अधीन तो नहीं हैं ना? अधीन आत्माओं को आप सभी अधिकारी बनाने वाले हो। आत्माओं के ऊपर रहमदिल बन अधीन से उन्हों को भी अधिकारी बनाने वाले हो। तो आप सभी भी होली मनाने आये हो ना?

बापदादा को भी खुशी है कि सभी स्नेह के विमान द्वारा, सभी के पास विमान है ना! है विमान? बापदादा ने हर ब्राह्मण को जन्मते ही गिफ्ट दी मन के विमान की। तो मन का विमान है सभी के पास? अच्छा हाथ उठा रहे हैं। ठीक है? पेट्रोल ठीक है? पंख ठीक हैं? स्टार्ट करने का आधार ठीक है? चेक करते हो? ऐसा विमान जो तीनों लोकों में सेकण्ड में जा सकता है। अगर हिम्मत और उमंग उत्साह के दोनों पंख यथार्थ हैं तो एक सेकण्ड में स्टार्ट हो सकता है। स्टार्ट करने की चाबी क्या है? मेरा बाबा। मेरा बाबा कहो तो मन जहाँ पहुंचना चाहे वहाँ पहुंच सकता है। दोनों पंख ठीक होने चाहिए। हिम्मत कभी नहीं छोड़नी है। क्यों? बापदादा का वायदा है, वरदान है, एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की। चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो, हिम्मत कभी नहीं हारो। कारण? सर्वशक्तिवान बाप मददगार है और कम्बाइण्ड है, सदा हाज़िर है। आप हिम्मत से सर्वशक्तिवान कम्बाइण्ड बाप के ऊपर अधिकार रखो और दृढ़ रहो, होना ही है, बाप मेरा, मैं बाप की हूँ, यह हिम्मत नहीं भूलो। तो क्या होगा? जो कैसे करूँ, यह संकल्प उठता है वह कैसे शब्द बदल ऐसे हो जायेगा। कैसे करूँ, क्या करूँ, नहीं। ऐसे हुआ ही पड़ा है। सोचते हो, करते तो हैं, होगा, होना तो चाहिए, बाप मदद तो देगा...। हुआ ही पड़ा है, बाप बंधा हुआ है, दृढ़ निश्चयबुद्धि वाले को मदद देने के लिए। सिर्फ रूप थोड़ा चेंज कर देते हो, हक रखते हो बाप के ऊपर, लेकिन रूप चेंज कर देते हो। बाबा आप तो मदद करेंगे ना! आप तो बंधे हुए हो ना! तो ना लगा देते हो। निश्चयबुद्धि, निश्चित विजय हुई पड़ी है क्योंकि बापदादा ने हर बच्चे को जन्मते ही विजय का तिलक मस्तक में लगाया है। दृढ़ता को अपने तीव्र पुरुषार्थ की चाबी बनाओ। प्लैन बहुत अच्छे बनाते हो। बापदादा जब रूहरिहान सुनते हैं, रूहरिहान बहुत हिम्मत की करते हो, प्लैन भी बड़े पावरफुल बनाते हो लेकिन प्लैन को जब प्रैक्टिकल में करते हो तो प्लैन बुद्धि होके नहीं करते हो। उसमें थोड़ा सा करते तो हैं, होना तो चाहिए... यह स्वयं में निश्चय के साथ संकल्प नहीं, लेकिन वेस्ट संकल्प मिक्स कर देते हो।

अभी समय के प्रमाण प्लैन बुद्धि बन संकल्प को साकार रूप में लाओ। ज़रा भी कमजोर संकल्प इमर्ज नहीं करो। स्मृति रखो कि अभी एक बार नहीं कर रहे हैं, अनेक बार किया हुआ सिर्फ रिपीट कर रहे हैं। याद करो कितनी बार कल्प-कल्प विजयी बने हैं! अनेक बार के विजयी हैं, विजय अनेक कल्प का जन्म सिद्ध अधिकार है। इस अधिकार से निश्चयबुद्धि बन दृढ़ता की चाबी लगाओ, विजय आप ब्राह्मण आत्माओं के बिना कहाँ जायेगी! आप ब्राह्मणों का विजय जन्म सिद्ध अधिकार है, गले की माला है। है ना नशा? नशा है? होगा, नहीं होगा, नहीं। हुआ ही पड़ा है। इतने निश्चयबुद्धि बन हर कार्य करो, विजय निश्चित है ही। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मायें, है ही, यह नहीं बापदादा कहते है या नहीं, है ही। यही नशा रखो। थे, हैं और होंगे। तो ऐसे होली हो ना! होलीएस्ट तो हो। तो बापदादा के ज्ञान के गुलाल की होली तो खेल ली, अभी और क्या खेलेंगे?

बापदादा ने देखा कि सभी को मैजॉरिटी उमंग-उत्साह बहुत अच्छा आता है, यह कर लेंगे, यह कर लेंगे, यह हो जायेगा। बापदादा भी बड़े खुश होते हैं लेकिन यह उमंग-उत्साह सदा इमर्ज रहे, कभी-कभी मर्ज हो जाता है, कभी इमर्ज हो जाता है। मर्ज नहीं हो जाए, इमर्ज ही रहे क्योंकि आपका उत्सव पूरा संगमयुग ही उत्सव है। वह तो कभी-कभी उत्सव इसीलिए मनाते हैं, क्योंकि बहुत समय टेन्शन में रहते हैं ना, तो समझते हैं उत्साह में नाचें, गायें, खायें, तो चेंज हो जाए। लेकिन आप लोगों के पास तो नाचना और गाना है ही, हर सेकण्ड। आप सदा मन में खुशी से नाचते रहते हो ना! कि नहीं! नाचते हैं, नाचना आता है खुशी में? नाचना आता है! जिसको आता है वह हाथ

उठाओ। नाचना आता है, अच्छा, मुबारक हो, आता है तो। तो सदा नाचते रहते हो या कभी कभी?

बापदादा ने इस वर्ष का होमवर्क दिया था, दो शब्द कभी नहीं सोचना, समटाइम, समथिंग। वह किया है? कि अभी भी समटाइम है? समटाइम, समथिंग खत्म। इस नाचने में थकने की तो कोई बात ही नहीं है। चाहे लेटे रहे, चाहे काम करो, चाहे पैदल करो, चाहे बैठो, खुशी का डांस तो कर ही सकते हो और बाप के प्राप्तियों का गीत भी गा सकते हो। गीत भी आता है ना, यह गीत तो सभी को आता है, मुख का गीत तो किसको आता है किसको नहीं आता है लेकिन बाप के प्राप्तियों का, बाप के गुणों का गीत वह तो सबको आता है ना। तो बस हर दिन उत्सव है, हर घड़ी उत्सव है, और सदा नाचो और गाओ और काम तो दिया ही नहीं है। यही तो दो काम हैं ना, नाचो और गाओ। तो इन्ज्वाय करो। बोझ क्यों उठाते? इन्ज्वाय करो, नाचो गाओ बस। अच्छा।

होली तो मना ली ना! अभी रंग की होली भी मनायेंगे? अच्छा आपको ही तो भक्त कापी करेंगे ना! आप भगवान के साथ होली खेलते हो तो भक्त भी होली कोई न कोई आप देवताओं के साथ खेलते रहते हैं। अच्छा, तो आज कई बच्चों के ईमेल भी आये हैं, पत्र भी आये हैं, फोन भी आये हैं, जो भी साधन हैं उससे होली की मुबारक भेजी है। बापदादा के पास तो जब संकल्प करते हैं ना तभी पहुंच जाता है। लेकिन चारों ओर के बच्चे विशेष याद करते हैं और किया है, बापदादा भी हर बच्चे को पदम पदम दुआयें और पदमगुणा दिल की यादप्यार रिटर्न में हर एक को नाम सहित विशेषता सहित दे रहे हैं। जब सन्देशी जाती है ना तो हर एक अपने अपने तरफ की यादें देते हैं। जिन्होंने नहीं भी दी हो ना, बापदादा के पास पहुंच गई है। यही तो परमात्म प्यार की विशेषता है। यह एक एक दिन कितना प्यारा है। चाहे गांव में हैं, चाहे बहुत बड़े-बड़े शहरों में हैं, गांव वालों की भी याद साधन न होते हुए भी बाप के पास पहुंच जाती है क्योंकि बाप के पास स्पीचुअल साधन तो बहुत हैं ना!

अच्छा - सभी ने दादी की याद भी बहुत-बहुत दी है। सभी का एक ही संकल्प है कि दादी जल्दी से जल्दी अपने मधुबन में पहुंच जाए। बापदादा भी यही चाहते हैं। दादी बोलती नहीं है लेकिन दिल में संकल्प द्वारा मधुबन की याद, ब्राह्मणों की याद, अपनी बेहद सेवा के जिम्मेवारी की याद रहती ही है। अभी प्यार से याद तो आप सभी बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं कि बापदादा से तो सभी का प्यार है लेकिन दादी से भी कम नहीं है। प्यार की याद तो दादी तक पहुंचती है लेकिन अभी ऐसे शक्तिशाली, जैसे पावरफुल दवाई देते हैं ना, दवाई में भी पावर का फर्क होता है ना! तो आप सबने स्नेह की दवाई तो भेजी है लेकिन अभी सब मिलकर शक्तिशाली तन्दरूस्त भव के दृढ़ संकल्प की किरणें ऐसी भेजो जो वह किरणें अपना काम शुरू कर दें। टाइम तो थोड़ा लगेगा लेकिन यह आप सब ब्राह्मणों के दिल के सहयोग की किरणें अपना काम दिखायेंगी। वहाँ कमरे का वायुमण्डल भी दिल के शक्तिशाली वायब्रेशन क्या हुआ, क्या हो रहा है, नहीं। हो रहा है। होना ही है। इस उमंग-उत्साह का, सर्व ब्राह्मण चाहे कोई भी सेवाधारी का वायुमण्डल ऐसा शक्तिशाली हो, आप सबके दिल के प्यार का वायब्रेशन बापदादा के पास भी पहुंचता है। जो भी सेवाधारी सेवा के निमित्त बनते हैं, उन्हीं का सदा यही वायब्रेशन हो, निश्चयबुद्धि बन शक्तिशाली किरणों की स्पीचुअल शक्ति सदा देते रहो। सेवा दिल से कर रहे हैं, भावना बहुत अच्छी है, अभी शक्तिशाली संकल्प की दुआ दो। कोई भी व्यर्थ संकल्प दिल में लाना नहीं, क्या होगा नहीं, अच्छा होना ही है। अच्छा।

सेवा का टर्न गुजरात का है, गुजरात के 6500 आये हैं:- गुजरात दर पर है ना। गुजरात के साढ़े छः हजार आ गये हैं, अच्छा है भले आये। गुजरात में बापदादा ने देखा है कि मैजॉरिटी एक तो गीता पाठशालायें बहुत हैं और गीता पाठशालायें चलाने वाले हैण्डस भी बहुत हैं। और साथ में गुजरात में सेवा भी बहुत है, सेवाधारी हैण्डस भी बहुत हैं। अभी गुजरात क्या करेगी? सेवाधारी भी बहुत हैं, सेवा भी बहुत है, अभी नई सेवा क्या करेंगे? जो किसने नहीं की हो, ऐसा कोई प्लैन बनाया है? जो किसने नहीं की हो, वह गुजरात करके दिखावे। प्लैन बनाया है? (थोड़ा सोचा है, आपस में मिलकर करेंगे) वैसे बापदादा सभी ज़ोन को कहते हैं कि ऐसा कोई स्पीकर तैयार करो, आप स्पीच करो वह नहीं, लेकिन आपकी तरफ से कोई ऐसा स्पीकर तैयार हो जिसका आवाज बड़ा हो, बुलन्द हो। जिसको देख करके अनेकों का कल्याण हो जाए। ऐसे हैं, हर एक ज़ोन में ऐसे हैं लेकिन स्टेज पर नहीं आये हैं। बापदादा अभी यह चाहते हैं कि ब्राह्मण बैकबोन हों और सामने ऐसी आत्मायें निमित्त हों जिसका सुन करके अनेकों

के दिल में वह आवाज लग जाए। क्योंकि समय के अनुसार हर ज़ोन ने, जिस भी विधि से सेवा की है, वह अच्छी की है, बापदादा सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों का उमंग-उत्साह देख करके भी खुश होते हैं लेकिन अभी कोई नवीनता हो। कोई स्वयं ही निमित्त बने और प्लैन देवे कि यह यह कर सकते हैं। क्योंकि वर्गीकरण की सेवा को भी काफी समय हो चुका है। हर एक वर्ग से ऐसे कोई स्पीकर तैयार हो, आप टापिक देते हो उस पर भाषण करते हैं, नहीं। खुद उमंग आवे मुझे यह करना है। ऐसा कुछ प्लैन बनाओ। उसका आधार है, स्वयं निमित्त बनने वाले सेकण्ड में वेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमण्डल में फैलायें। वेस्ट अभी भी है इसलिए मन्सा द्वारा सेवा का रेसपान्ड प्रैक्टिकल रूप में कम है। जैसे शुरू-शुरू में स्थापना के समय में देखा ब्रह्मा बाप का मन्सा वायब्रेशन कईयों को घर बैठे साक्षात्कार होने लगा, आवाज गया कोई आया है जाओ। ऐसे बेस्ट थॉट्स का वायुमण्डल नजदीक ला सकता है। कोई भी विस्तार में नहीं जाओ, शार्ट। जो भी कारोबार की बातें करनी तो पड़ती हैं लेकिन जहाँ तक हो सके विस्तार से शार्ट करते मन्सा शक्तिशाली सेवा को बढ़ाओ। जैसे शिकारी जो होशियार होते हैं वह ऐसा तीर लगाते जो पंछी तीर सहित आके पांव में पड़ता। यहाँ मन्सा सेवा ऐसी पावरफुल हो, जो आत्माओं को प्राप्ति की अनुभूति हो, रह नहीं सके। मन्सा शक्तिशाली से मन्सा सेवा की सिद्धि प्राप्त होनी है। तो गुजरात क्या करेगा? मन्सा सेवा में नम्बरवन होके दिखाओ। सभी के लिए है। लेकिन गुजरात का टर्न है तो गुजरात को कह रहे हैं लेकिन अभी मन्सा स्वयं की पावरफुल होने से मन्सा सेवा की रिजल्ट सामने आयेगी। जैसे वाचा की पहले नहीं थी, अभी वाचा सेवा की रिजल्ट सामने आ रही है। मेहनत तो अच्छी की है। बापदादा मेहनत, निमित्त मेहनत की मुबारक भी देते हैं लेकिन समय फास्ट है, अभी भी समय बहुत फास्ट जा रहा है। अच्छा। मुबारक हो, गुजरात को टाइल है कि बिल्कुल नजदीक जैसे देश के हिसाब से हैं वैसे बाप के दिल में भी नजदीक हैं। अच्छे अच्छे हैं, शुरू से देखो तो निकले भी अच्छे अच्छे, पाण्डव या शक्तियां अच्छे निकले हैं। अभी ऐसे स्पीकर तैयार करो। आप सकाश दो और वह भाषण करें। अच्छा। बहुत अच्छा। पदमगुणा मुबारक है।

98 देशों से 1200 विदेशी भाई बहिनें आये हैं: अच्छा। विदेशी उठो। अच्छा आप भी हाथ हिलाओ। बापदादा को जब विदेश के बच्चे आपस में इकट्ठे होके स्व-उन्नति और सेवा की वृद्धि दोनों साथ-साथ प्लैन बनाते हैं तो बापदादा को अच्छा लगता है क्योंकि विदेश में तो बहुत अलग अलग रहते हैं लेकिन यहाँ एक तो फ्री होके आते हैं दूसरा संगठन भी अच्छा होता है, तो स्व-उन्नति और भविष्य प्लैन अच्छा बनाते हैं। बापदादा के पास रिपोर्ट तो आती है। समाचार पहुंचता रहता है। तो जो भी अलग अलग ग्रुप बनके, क्योंकि छोटे ग्रुप में अटेन्शन जाता है, नजदीक आने का चांस मिलता है, तो यह ग्रुप बनाके जो सेवा की है, यह अच्छी की है। अभी डबल विदेशियों में पुरुषार्थ की रफ्तार भी अच्छी चल रही है लेकिन अभी भी थोड़ी थोड़ी कम्पलेन है, पुरुषार्थ की तरफ अटेन्शन अच्छा है, अटेन्शन दिलाते भी अच्छा है और अटेन्शन देते भी अच्छा है सिर्फ उसको अविनाशी बनाने के लिए कोई ऐसा प्लैन बनाओ जो रिफेशमेंट वहाँ जाने के बाद भी बढ़ती रहे। सेवा के साधन भी अच्छे निकालते हैं, वी.आई.पी. वा भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवाओं के जो प्लैन बनाते हो वह भी अच्छा बनाया है। अभी दूसरे साल जब आओ, अभी तो नजदीक आ गई है ना सीजन का। लेकिन जब दूसरी बार आओ तो यह रिजल्ट दिखाई दे कि सभी इतने मन्सा सेवा, वाचा सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सेवा कर्मणा हो गई ना यह, चेहरे और चलन द्वारा सेवा करने में इतने सब बिजी रहते जो वेस्ट बातों को आने के लिए मार्जिन ही नहीं है। फुल बिजी। बिजी रहते हैं लेकिन फुल बिजी। माया का आने का कोई मार्जिन ही नहीं रहे। चाहे संकल्प में, चाहे एक दो के साथ सहयोग में ऐसी रिजल्ट निकल सकती है। हो सकता है ऐसे! इतने बिजी हो सकते हो? हो सकते हो? कि टाइम चाहिए? एक साल है। बापदादा तो इण्डिया में भी यही चाहते, विदेश में भी यह चाहते यह आवाज हो कि माया आ नहीं सकती। मेहनत नहीं करनी पड़े। देखो कौन सा ज़ोन करता है? बापदादा ने तो पहले ही कहा है, कि बापदादा डायमण्ड कप देने चाहते हैं लेकिन प्राब्लम प्रूफ हो। प्राब्लम क्या होती है यह नामनिशान नहीं हो। (बाबा ने कहा है तो हुआ ही पड़ा है) देखो होना तो है ही। आप नहीं होंगे तो कौन होंगे। होना तो है, सिर्फ नजदीक लाओ उसको। ठीक है ना। डबल फारेनर्स? डायमण्ड कप लेने वाले हो। बापदादा तो सदा आफर करते हैं। लेकिन एक दो के साथी भी हों, सिर्फ मैं

ठीक हूँ, नहीं। साथी भी ठीक हों। (भारत और विदेश मिलकर ही डायमण्ड कप लेंगे) आपके मुख में गुलाबजामुन। होना ही है। सिर्फ समय को थोड़ा नजदीक लाओ। रिजल्ट अच्छी है। रिजल्ट पहले से काफी फर्क है, इसकी मुबारक है लेकिन अभी फुल नहीं है थोड़ी-थोड़ी फीलिंग है। अभी फुल हो जायेंगे। बापदादा वतन से बहुत बढ़िया फरिश्तेपन की सौगात देंगे। हर एक ऐसे अनुभव करेंगे मैं हूँ फरिश्ता, चमकता हुआ। होना ही है। अच्छा है, बैठ जाओ, थक जायेंगे। अच्छा।

बापदादा कहते हैं आजकल के जमाने में डाक्टर्स कहते हैं दवाई छोड़ो, एक्सरसाइज़ करो। तो बापदादा भी कहते हैं कि युद्ध करना छोड़ो, मेहनत करना छोड़ो, सारे दिन में 5-5 मिनट मन की एक्सरसाइज़ करो। वन मिनट में निराकारी, वन मिनट में आकारी, वन मिनट में सब तरह के सेवाधारी, यह मन की एक्सरसाइज़ 5 मिनट की सारे दिन में भिन्न-भिन्न टाइम करो। तो सदा तन्दरूस्त रहेंगे, मेहनत से बच जायेंगे। हो सकता है ना! हो सकता है? मधुबन वाले, मधुबन है फाउण्डेशन, मधुबन का वायब्रेशन चारों ओर न चाहते भी पहुंच जाता है। जो मधुबन में एक दिन कोई बात होती है ना, सारे भारत में, जगह जगह में दूसरे दिन पहुंच जाती है। इतना मधुबन में कोई साधन लगे हुए हैं, कोई बात नहीं छिपती, अच्छी भी तो पुरुषार्थ की भी। तो मधुबन जो करेगा वह वायब्रेशन स्वतः और सहज फैलेगा। पहले मधुबन निवासी वेस्ट थॉटस का स्टॉप करें, हो सकता है? हो सकता है? यह आगे-आगे बैठे हैं ना! मधुबन निवासी हाथ उठाओ। तो मधुबन निवासी आपस में कोई ऐसा प्लैन बनाओ वेस्ट खत्म। बापदादा यह नहीं कहते हैं कि संकल्प ही बन्द करो। वेस्ट संकल्प फिनिश। फायदा तो है नहीं। परेशानी ही है। हो सकता है? जो समझते हैं मधुबन निवासी, आपस में मीटिंग करके यह करेंगे, वह हाथ उठाओ। करेंगे करना है तो लम्बा हाथ उठाओ। दो-दो हाथ उठाओ। मुबारक हो। बापदादा दिल से दुआयें दे रहे हैं। मुबारक देते हैं। हिम्मत है मधुबन में, जो चाहे वह कर सकते हैं। करा भी सकते हैं। मधुबन की बहनें भी हैं, बहनें हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ। मीटिंग करना। आप मीटिंग कराना दादियां। देखो हाथ सभी उठा रहे हैं। अभी हाथ की लाज रखना। अच्छा।

अभी अभी सेकण्ड में जो बाप ब्रह्मा ने लास्ट में वरदान दिया, निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी, यह ब्रह्मा बाप के लास्ट वरदान, एक बहुत बड़ी सौगात बच्चों के प्रति रही। तो क्या सेकण्ड में ब्रह्मा बाप की सौगात मन से स्वीकार कर सकते हैं? दृढ़ संकल्प कर सकते हो कि बाप की सौगात को सदा प्रैक्टिकल लाइफ में लाना है? क्योंकि आदि देव की सौगात कम नहीं है। ब्रह्मा ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर है। उसकी सौगात कम नहीं है। तो अपने-अपने पुरुषार्थ प्रमाण संकल्प करो कि आज के दिन होली अर्थात् जो बीत चुकी, हो ली, हो गई। लेकिन अब से सौगात को बार-बार इमर्ज कर ब्रह्मा बाप को सेवा का रिटर्न देंगे। देखो ब्रह्मा बाप ने अन्तिम दिन, अन्तिम समय तक सेवा की। यह ब्रह्मा बाप का बच्चों से प्यार, सेवा से प्यार की निशानी है तो ब्रह्मा बाप को रिटर्न देना अर्थात् बार-बार जीवन में दी हुई सौगात को रिवाइज कर प्रैक्टिकल में लाना। तो सभी अपने दिल में ब्रह्मा बाप से स्नेह के रिटर्न में संकल्प दृढ़ करो, यह है ब्रह्मा बाप के स्नेह की सौगात का रिटर्न। अच्छा।

चारों ओर के लकीएस्ट, होलीएस्ट बच्चों को सदा दृढ़ संकल्प की चाबी प्रैक्टिकल में लाने वाले हिम्मत वाले बच्चों को, सदा अपने मन को भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा में बिजी रखने वाले, कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले बच्चों को, सदा हर दिन उत्साह में रहने वाले, हर दिन को उत्सव समझ मनाने वाले, सदा खुशानसीब बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

मोहिनी बहन, ईशू बहन से:- अभी वहाँ भी (हॉस्पिटल में भी) प्रोग्राम बनाना, जो भी कमरे में बैठो या बाहर भी बैठो वहाँ और कोई बात नहीं। ऐसा वायुमण्डल बनाना जैसे वह लोग साधनों द्वारा कमरे का वायुमण्डल बनाते हैं ना, तो वहाँ बिल्कुल ऐसा शक्तिशाली वायुमण्डल हो, जो आवे वह सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव करे। इससे यह दवाई शक्तिशाली है। (कुछ दिन तबियत ठीक रहती है, फिर कुछ न कुछ नीचे ऊपर हो जाता है) अभी तो खेल चल रहा है ना, अभी यह वायुमण्डल, दवाई और दुआ दोनों साथ-साथ हो। (चारों ओर सेन्ट्रों में भी योग चल रहा है) सब तरफ विशेष योग में बैठें या बिजी भी हों लेकिन लक्ष्य वह हो। समझें हमको यह सेवा करनी

है। प्यार का रिटर्न तो यही है।

दादा विश्वरतन ने 26 फरवरी को अचानक अपना पुराना शरीर छोड़ दिया: क्योंकि ड्रामा में कोई-कोई आत्मा को अचानक और एवररेडी का पाठ पक्का कराना है। देखो, जब चन्द्रमणी ने शरीर छोड़ा तो कुछ समय वह लहर अच्छी रही। सभी अचानक के पाठ में पक्के रहे, फिर धीरे-धीरे हल्का हो गया। फिर यह जो ड्रामा में पार्ट हुआ यह वायुमण्डल में अचानक और एवररेडी का पाठ फिर से पक्का कराने के निमित्त बनें। विश्वरतन का निराकारी स्थिति का ध्यान अच्छा रहा, गुप्त में यह पाठ पक्का था। इसीलिए जल्दी सेकण्ड में पार्ट पूरा हो गया। यह भी समय सभी को अटेन्शन खिंचाने के लिए निमित्त बनता है। सभी थोड़ा थोड़ा अभी समझते हैं, अभी तो टाइम पड़ा है, यह लहर अभी होनी नहीं चाहिए। एवररेडी रहना चाहिए क्योंकि बहुतकाल का भी अटेन्शन रहना चाहिए। अच्छा।

(दादियों से) आपका ग्रुप तो अटेन्शन वाला है ही ना। अटेन्शन रहता है ना। अच्छा। आपका अटेन्शन तो रहता है ना, एवररेडी है?

दादा के सेवाधारी मनोज से: ड्रामा को देखके खुश हो ना, ड्रामा में जो भी होता है अच्छा होता है। (दादा की बहुत याद आती है) याद भले आवे, उनके गुण और उनके कर्तव्य याद आवे और फिर फॉलो करो। याद तो आयेगा ही। बस आज्ञा यही है कि फॉलो करो, खुश रहो खुशी बांटो।

निर्वैर भाई ने दादी जी का समाचार सुनाया और सभी की याद दी:- सभी को सेवा की मुबारक और याद देना। (मुन्नी बहन ने याद दी है, दादी जी को जल्दी से जल्दी मधुबन लाने की इच्छा है) जल्दी नहीं करे, जल्दी का संकल्प नहीं, बस। वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाये। अभी यह संकल्प करो ही नहीं। यह करो - अच्छा है, अच्छा है, अच्छा है। हो जायेगा कोई बात नहीं

रमेश भाई से:- बाम्बे क्या करेगी? कोई नया प्लैन निकालो। वर्गीकरण के प्रोग्राम तो होते ही रहते हैं कोई नया ऐसा हो जो प्रत्यक्ष दिखाई दे। किया और निकला और सेवा शुरू कर दे, ऐसे अभी तुरत दान महापुण्य।

भोपाल भाई, गोलक भाई से:- मधुबन के चारों ओर भी पावरफुल वायुमण्डल बनाओ।

मीटिंग करना, सभी मिलके मीटिंग करना। (दादी जानकी से) मधुबन वालों की मीटिंग कराना।

चन्द्रहास दादा से:- तबियत अच्छी है। अच्छा है, अपनी तबियत को खुद ही समझके चलाते रहो। बड़े में बड़ा डाक्टर खुद हैं।

डा. करसन भाई पटेल (चेयरमैन निरमा ग्रुप):- अभी जैसे अपने लौकिक बिजनेस में उन्नति कर रहे हो ना, ऐसे अभी यह आध्यात्मिक बिजनेस भी करो। परमात्मा से बिजनेस करो, बहुत इज़्जी। जो अविनाशी रहे। यह बिजनेस तो एक जन्म रहेगा ना लेकिन वह 21 जन्म की गैरन्टी है। तो 21 जन्म करना नहीं पड़ेगा। सिर्फ खाना पीना मौज करना पड़ेगा। तो ऐसा बिजनेस करो। करने चाहते हो? निमित्त बनो। आपको देखकर फिर औरों में भी उमंग आयेगा। यहाँ तक पहुंचे हो तो अवश्य कोई भाग्य छिपा हुआ था जो यहाँ पहुंच गये हो। जो भाग्य यहाँ ले आया है। निमित्त तो कोई बनेगा ना! कितने बारी सोचा जाना है, जाना है, आज ही कैसे पहुंचे? तो यह भाग्य आपको ले आया। बहुत अच्छा किया।

स्वामी समर्पणानंदगिरी जी, पुरी: बहुत अच्छा है। साथ-साथ मिलके करेंगे ना तो आवाज बुलन्द होगा। बुलन्द आवाज बहुतों के कानों में जायेगा। अच्छा है। सब धर्म के नेतायें मिलके करें ना तो आवाज बहुत जल्दी फैले। यह भी होना है। थोड़ा टाइम लग रहा है लेकिन होना है। सब मिलकरके एक ही झण्डा लहरायेंगे।

राकेश मेहता, आई.ए.एस. बिजली बोर्ड दिल्ली:- यहाँ भी देखो आत्मा लाइट है और लाइट हाउस होके लाइट देनी है। तो डबल लाइट का ज्ञान लेने वाले भाग्यवान आत्मा हो। वह भी लाइट जरूरी है, यह भी लाइट जरूरी है। अभी निमित्त बनके दुःखी आत्माओं को सुखी करो। टेन्शन फ्री लाइफ बनाओ।

17-03-07

श्रेष्ठ वृत्ति से शक्तिशाली वायब्रेशन और वायुमण्डल बनाने का तीव्र पुरुषार्थ करो, दुआ दो और दुआ लो

आज प्यार और शक्ति के सागर बापदादा अपने स्नेही, सिकीलधे, लाडले बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। सभी बच्चे भी दूर-दूर से स्नेह की आकर्षण से मिलन मनाने के लिए पहुंच गये हैं। चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे देश विदेश में बैठे हुए स्नेह का मिलन मना रहे हैं। बापदादा चारों ओर के सर्व स्नेही, सर्व सहयोगी साथी बच्चों को देख हर्षित होते हैं। बापदादा देख रहे हैं मैजॉरिटी बच्चों के दिल में एक ही संकल्प है कि अभी जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। बाप कहते हैं सभी बच्चों का उमंग बहुत अच्छा है, लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान सम्पन्न सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे। तो बच्चे पूछते हैं बाप से कि कब प्रत्यक्ष होगा? और बाप बच्चों से पूछते हैं कि आप बताओ आप कब स्वयं को बाप समान प्रत्यक्ष करेंगे? अपने सम्पन्न बनने की डेट फिक्स की है? फॉरेन वाले तो कहते हैं एक साल पहले डेट फिक्स की जाती है। तो अपने को बाप समान बनने की आपस में मीटिंग करके डेट फिक्स की है?

बापदादा देखते हैं आजकल तो हर वर्ग की भी मीटिंग्स बहुत होती हैं। डबल फारेनर्स की भी मीटिंग बापदादा ने सुनी। बहुत अच्छी लगी। सब मीटिंग्स बापदादा के पास तो पहुंच ही जाती हैं। तो बापदादा पूछते हैं कि इसकी डेट कब फिक्स की है? क्या यह डेट ड्रामा फिक्स करेगा या आप फिक्स करेंगे? कौन करेगा? लक्ष्य तो आपको रखना ही पड़ेगा। और लक्ष्य बहुत अच्छे ते अच्छा, बढ़िये ते बढ़िया रखा भी है, अभी सिर्फ जैसा लक्ष्य रखा है उसी प्रमाण लक्षण, श्रेष्ठ लक्ष्य के समान बनाना है। अभी

लक्ष्य और लक्षण में अन्तर है। जब लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे तो लक्ष्य प्रैक्टिकल में आ जायेगा। सभी बच्चे जब अमृतवेले मिलन मनाते हैं और संकल्प करते हैं तो वह बहुत अच्छे करते हैं। बापदादा चारों ओर के हर बच्चे की रूहरिहान सुनते हैं। बहुत सुन्दर बातें करते हैं। पुरुषार्थ भी बहुत अच्छा करते हैं लेकिन पुरुषार्थ में एक बात की तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। तीव्रता की दृढ़ता उसकी एडीशन चाहिए।

बापदादा की हर बच्चे के प्रति यही आश है कि समय प्रमाण हर एक तीव्र पुरुषार्थी बनें। चाहे नम्बरवार हैं, बापदादा जानते हैं लेकिन नम्बरवार में भी तीव्र पुरुषार्थ सदा रहे, उसकी आवश्यकता है। समय सम्पन्न होने में तीव्रता से चल रहा है लेकिन अभी बच्चों को बाप समान बनना ही है, यह भी निश्चित ही है सिर्फ इसमें तीव्रता चाहिए। हर एक अपने को चेक करे कि मैं सदा तीव्र पुरुषार्थी हूँ? क्योंकि पुरुषार्थ में पेपर तो बहुत आते ही हैं और आने ही हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी के लिए पेपर में पास होना इतना ही निश्चित है कि तीव्र पुरुषार्थी पेपर में पास हुआ ही पड़ा है। होना है नहीं, हुआ ही पड़ा है, यह निश्चित है। सेवा भी सभी अच्छी रूचि से कर रहे हैं लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा है कि वर्तमान समय के प्रमाण एक ही समय पर मन्सा-वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे द्वारा तीनों ही प्रकार की सेवा चाहिए। मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का परिचय कराना और चलन वा चेहरे द्वारा सम्पूर्ण योगी जीवन के प्रैक्टिकल रूप का अनुभव कराना, तीनों ही सेवा एक समय करनी है। अलग-अलग नहीं, समय कम है और सेवा अभी भी बहुत करनी है। बापदादा ने देखा कि सबसे सहज सेवा का साधन है -वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना क्योंकि वृत्ति सबसे तेज साधन है। जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रूहानी शुभ

भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हैं। सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता है, वह भूलता नहीं है। जैसे मधुबन में अनुभव किया है कि ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि, योग भूमि, चरित्र भूमि का वायुमण्डल है। अब तक भी हर एक उसी वायुमण्डल का जो अनुभव करते हैं वह भूलता नहीं है। वायुमण्डल का अनुभव दिल में छप जाता है। तो वाणी द्वारा बड़े-बड़े प्रोग्राम तो करते ही हो लेकिन हर एक को अपनी श्रेष्ठ रूहानी वृत्ति से, वायुब्रेशन से वायुमण्डल बनाना है, लेकिन वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में, मन में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायुब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति सदा स्वच्छ हो क्योंकि किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई व्यर्थ वृत्ति या ज्ञान के हिसाब से निगेटिव वृत्ति है तो निगेटिव माना किचड़ा, अगर मन में किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे। तो पहले अपने आपको चेक करो कि मेरे मन की वृत्ति शुभ रूहानी है? निगेटिव वृत्ति को भी अपनी शुभ भावना शुभ कामना से निगेटिव को भी पॉजिटिव में चेन्ज कर सकते हो क्योंकि निगेटिव से अपने ही मन में परेशानी तो होती है ना! वेस्ट थॉट्स तो चलते हैं ना! तो पहले अपने को चेक करो कि मेरे मन में कोई खिटखिट तो नहीं है? नम्बरवार तो हैं, अच्छे भी हैं तो साथ में खिटखिट वाले भी हैं, लेकिन यह ऐसा है, यह समझना अच्छा है। जो रांग है उसको रांग समझना है, जो राइट है उसको राइट समझना है लेकिन दिल में बिठाना नहीं है। समझना अलग है, नॉलेजफुल बनना अच्छा है, रांग को रांग तो कहेंगे ना! कई बच्चे कहते हैं बाबा आपको पता नहीं यह कैसे है! आप देखो ना तो पता पड़ जाए। बाप मानते हैं आपके कहने से पहले ही मानते हैं कि ऐसे हैं, लेकिन ऐसी बातों को अपनी दिल में वृत्ति में रखने से स्वयं भी तो परेशान होते हो। और खराब चीज़ अगर मन में है, दिल में है

तो जहाँ खराब चीज़ है, वेस्ट थॉटस हैं, वह विश्व कल्याणकारी कैसे बनेंगे? आप सभी का आव्यूपेशन क्या है? कोई कहेगा हम लण्डन के कल्याणकारी हैं, दिल्ली के कल्याणकारी हैं, यू.पी. के कल्याणकारी हैं? या जहाँ भी रहते हो, चलो देश नहीं तो सेन्टर के कल्याणकारी हैं, आव्यूपेशन सब यही बताते कि विश्व कल्याणकारी हैं। तो सब कौन हो? विश्व कल्याणकारी हो? हैं तो हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) विश्व कल्याणकारी! विश्व कल्याणकारी! अच्छा। तो मन में कोई भी खराबी तो नहीं है? समझना अलग चीज़ है, समझो भले, यह राइट है यह रांग है, लेकिन मन में नहीं बिठाओ। मन में वृत्ति रखने से दृष्टि और सृष्टि भी बदल जाती है।

बापदादा ने होम वर्क दिया था - क्या दिया था? सबसे सहज पुरुषार्थ है जो सभी कर सकते हैं, मातायें भी कर सकती हैं, बूढ़े भी कर सकते हैं, युवा भी कर सकते हैं, बच्चे भी कर सकते हैं, वह यही विधि है सिर्फ एक काम करो किसी से भी सम्पर्क में आओ - "दुआ दो और दुआ लो।" चाहे वह बद्दुआ देता है, लेकिन आप कोर्स क्या कराते हो? निगेटिव को पॉजिटिव में बदलने का, तो अपने को भी उस समय कोर्स कराओ। चैलेन्ज क्या है? चैलेन्ज है कि प्रकृति को भी तमोगुणी से सतोगुणी बनाना ही है। यह चैलेन्ज है ना! है? आप सबने यह चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाना है? बनाना है? कांध हिलाओ, हाथ हिलाओ। देखो, देखादेखी नहीं हिलाना। दिल से हिलाना, क्योंकि अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। तो वृत्ति में अगर ज़रा भी किचड़ा होगा, तो वृत्ति से वायुमण्डल कैसे बनायेंगे? प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा, वाणी तो नहीं जायेगी। वायब्रेशन जायेगा और वायब्रेशन बनता है वृत्ति से, और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। मधुबन में भी सब एक जैसे तो नहीं हैं। लेकिन ब्रह्मा बाप और अनन्य बच्चों के वृत्ति द्वारा, तीव्र पुरुषार्थ द्वारा वायुमण्डल बना है।

आज आपकी दादी याद आ रही है, दादी की विशेषता क्या देखी? कैसे कन्ट्रोल किया? कभी भी कैसी भी वृत्ति वाले की कमी दादी ने मन में नहीं रखी। सभी को उमंग दिलाया। आपकी जगदम्बा माँ ने वायुमण्डल बनाया। जानते हुए भी अपनी वृत्ति सदा शुभ रखी, जिसके वायुमण्डल का अनुभव आप सभी कर रहे हो। चाहे फॉलो फादर है लेकिन बापदादा हमेशा कहते हैं कि हर एक की विशेषता को जान उस विशेषता को अपना बनाओ। और हर एक बच्चे में यह नोट करना, बापदादा का जो बच्चा बना है उस एक एक बच्चे में, चाहे तीसरा नम्बर है लेकिन यह ड्रामा की विशेषता है, बापदादा का वरदान है, सभी बच्चों में चाहे 99 गलतियां भी हों लेकिन एक विशेषता जरूर है। जिस विशेषता से मेरा बाबा कहने का हकदार है। परवश है लेकिन बाप से प्यार अटूट होता है। इसीलिए बापदादा अभी समय की समीपता अनुसार हर एक जो भी बाप के स्थान हैं, चाहे गांव में हैं, चाहे बड़े ज़ोन में हैं, सेन्टर्स पर हैं लेकिन हर एक स्थान और साथियों में श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल आवश्यक है। बस एक अक्षर याद रखो अगर कोई बददुआ देता भी है, तो लेने वाला कौन? क्या देने वाला, लेने वाला एक होता है या दो? अगर कोई आपको कोई खराब चीज़ दे, आप क्या करेंगे? अपने पास रखेंगे? या वापस करेंगे या फेंक देंगे कि अलमारी में सम्भाल के रखेंगे? तो दिल में सम्भाल के नहीं रखना क्योंकि आपकी दिल बापदादा का तख्त है। इसीलिए एक शब्द अभी मन में पक्का याद कर लो, मुख में नहीं मन में याद करो - दुआ देना है, दुआ लेना है। कोई भी निगेटिव बात मन में नहीं रखो। अच्छा एक कान से सुना, दूसरे कान से निकालना तो आपका काम है कि दूसरे का काम है? तब ही विश्व में, आत्माओं में फास्ट गति की सेवा वृत्ति से वायुमण्डल बनाने की कर सकेंगे। विश्व परिवर्तन करना है ना! तो क्या याद रखेंगे? याद रखा मन से? दुआ शब्द याद रखो, बस क्योंकि आपके जड़ चित्र क्या देते हैं? दुआ देते

हैं ना! मन्दिर में जाते हैं तो क्या मांगते हैं? दुआ मांगते हैं ना! दुआ मिलती है तभी तो दुआ मांगते हैं। आपके जड़ चित्र लास्ट जन्म में भी दुआ देते हैं, वृत्ति से उनकी कामनायें पूरी करते हैं। तो आप बार-बार ऐसे दुआ देने वाले बने हो तब आपके चित्र भी आज तक दुआयें देते हैं। चलो परवश आत्माओं को अगर थोड़ा सा क्षमा के सागर के बच्चे क्षमा दे दी तो अच्छा ही है ना! तो आप सभी क्षमा के मास्टर सागर हो? हो या नहीं हो? हो ना! कहो पहले मैं। इसमें हे अर्जुन बनो। ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो कोई भी सामने आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का अनुभव करे, सहयोग का अनुभव करे, उमंग-उत्साह का अनुभव करे। ऐसे हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन वाले हो सकता है? हाथ उठाओ। पहले करना पड़ेगा। तो सभी करेंगे? टीचर्स करेंगी?

अच्छा - अभी लास्ट टर्न में 15 दिन पड़े हैं, ठीक है ना। मधुबन में तो मदद है ही, आप सभी जितने भी हैं, जहाँ के भी हो लेकिन यह 15 दिन यह प्रैक्टिस करना कि दुआ देना है और दुआ लेना है। ठीक है? यह होमवर्क ठीक है? करेंगे? मधुबन वाले, अच्छा है, मधुबन वालों को सीट बहुत अच्छी मिली है, सीट अच्छी ले ली है, होशियार हैं मधुबन वाले, सीट अच्छी पकड़ ली है। अभी नम्बरवन की भी सीट लेनी है क्योंकि मधुबन वासी बनना, भाग्य की निशानी है। और अभी सभी कहाँ के हो? लण्डन के, अमेरिका के, अभी सभी मधुबन के हो। इस समय तो मधुबन के हो ना? कितना अच्छा है। अभी सब मधुबन निवासी हैं। तो 15 दिन के बाद बापदादा रिजल्ट लेंगे, ठीक है? पीछे वाले ठीक है? ऊपर गैलरी में भी बैठे है। गैलरी वाले ठीक है? अच्छा। अभी विश्व को बहुत आवश्यकता है। आप निवारण मूर्त बन जाओ। आपके निवारण मूर्त बनने से आत्मायें निर्वाण में जा सकेंगी। अगर आप निवारण मूर्त नहीं बनेंगे तो आत्मायें

बिचारी निर्वाण में जा नहीं सकेंगी। निर्वाण का गेट आपको ही खोलना है। बाप के साथ-साथ गेट खोलेंगे ना? गेट की सेरीमनी करेंगे ना? अभी डेट बनाना आपस में। बापदादा सब मीटिंग सुनते हैं, बापदादा को क्या है, स्वीच आन किया, सुना। एक ही समय पर सभी ज़ोन, सभी देश की बातें सुन सकते हैं, सुनने चाहें तो। अभी बेहद में आओ। कोई कोई बच्चे थोड़े ज्यादा गम्भीर बनते हैं, गम्भीरता अच्छी है लेकिन ज्यादा गम्भीरता सीरियस लगता है, तो सीरियस किसको अच्छा नहीं लगता है। गम्भीर बनो लेकिन अन्दर गम्भीरता हो, बाहर चेहरा मुस्कराता हो। मुस्कराता हुआ चेहरा सभी को पसन्द आता है और ऐसे ज्यादा गम्भीर वाला चेहरा उससे डरते हैं, दूर भागते हैं। सहयोगी नहीं बनेंगे। ब्रह्मा बाप का मुस्कराना, जगत अम्बा माँ का मुस्कराना, अपनी दादी का मुस्कराना, याद है ना! डबल फारेनर्स को भी दादी का मुस्कराता चेहरा अच्छा लगता है ना! हाथ हिला रहे हैं। हँसो नहीं, मुस्कराओ। ज़ोर से हंसना नहीं, मुस्कराना क्योंकि बापदादा को अभी तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। क्यों? क्योंकि बापदादा ने देखा कि बहुतकाल का संस्कार आवश्यक है। अगर अन्त में तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो बहुतकाल में जमा नहीं होगा। और बहुतकाल में अगर आपका जमा नहीं होगा तो 21 जन्म का बहुतकाल का अधिकार भी कम हो जायेगा। तो बापदादा नहीं चाहता है कि एक भी बच्चे का अधिकार कम हो, जब मेरा बाबा कहा, तो मेरा बाबा कहने वाले बच्चे का अधिकार कम नहीं होना चाहिए क्योंकि बाप का तो चाहे लास्ट बच्चा है, बाप जानता है, लास्ट है लेकिन कभी मुरली में नहीं कहा कि यह लास्ट बच्चा है। मीठे मीठे बच्चे कहते हैं तो जो कडुवे हैं उन्हीं को छोड़के मीठे बच्चों को याद प्यार, यह कभी कहा है? जानते तो हैं कि लास्ट बच्चा है लेकिन फिर भी मीठे मीठे बच्चे कहते हैं, कडुवा नहीं कहते हैं। तो बाप समान बनना है ना! बापदादा को खुशी होती है, जब सभी का लक्ष्य पूछते हैं तो कहते हैं बाप समान

बनना है, लास्ट नम्बर भी यही कहता है, तो बापदादा खुश होते हैं, फिर भी लक्ष्य ऊंचा रखा है तो लक्षण भी आते जायेंगे। बहुतकाल जरूर इकट्ठा करना है फिर लास्ट में नहीं उलहना देना कि हमें तो बहुतकाल याद ही नहीं था। 63 जन्म के बहुतकाल का प्रभाव अभी तक भी देख रहे हैं। चाहते नहीं हैं हो जाता है, यह क्या है? बहुतकाल का प्रभाव है। इसलिए बापदादा हर एक प्यारे से प्यारे बच्चों को यही कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी भव! होमवर्क याद रखना, 15 दिन के बाद रिजल्ट पूछेंगे। 15 दिन में संस्कार पड़ जायेंगे ना! तो आगे भी होगा। यहाँ तो वायुमण्डल की मदद है ना। और सब मधुबन वाले ड्युटी में हैं या ज़ोन जिसका टर्न है, वह ड्युटी पर हैं और तो सब फ्री हैं। तो क्या करेंगे? दादी (दादी जानकी से) सुनाओ क्या करेंगे? करके दिखायेंगे? करके ही दिखाना है। (बाबा जरूर आपको प्रत्यक्ष करके दिखायेंगे) पहले अपने को प्रत्यक्ष करो तब बाप प्रत्यक्ष होगा। क्योंकि आप द्वारा होना है ना! तो बाप कहते हैं आप कब अपने को प्रत्यक्ष करेंगे? आपसे तो बाप प्रत्यक्ष हो ही जायेगा। है उमंग? कितना उमंग है? बहुत उमंग है? सभी को जितना बहुत-बहुत उमंग है उतना ही बापदादा पदम-पदम-पदमगुणा इनएडवांस मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

जगह जगह से बच्चों के ईमेल और पत्र तो आते ही हैं। तो जिन्होंने पत्र भी नहीं लिखा है लेकिन संकल्प किया है तो संकल्प वालों का भी याद प्यार बापदादा के पास पहुंच गया है। पत्र बहुत मीठे मीठे लिखते हैं। पत्र ऐसे लिखते हैं जो लगता है कि यह उमंग-उत्साह में उड़ते ही रहेंगे। फिर भी अच्छा है, पत्र लिखने से अपने को बंधन में बांध लेते हैं, वायदा करते हैं ना! तो चारों ओर के जो जहाँ देख रहे हैं या सुन रहे हैं, उन सभी को भी बापदादा सम्मुख वालों से भी पहले यादप्यार दे रहे हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कि कहाँ कोई टाइम है, कहाँ कोई टाइम है लेकिन सब बड़े उत्साह से बैठे हैं, याद में सुन भी रहे हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न - यू.पी. और इन्दौर ज़ोन का है - (सामने टीचर्स खड़ी है) यह सब टीचर्स हैं। दोनों तरफ की टीचर्स हैं। अच्छा है। बापदादा को टीचर्स पर भी नाज़ है क्योंकि हिम्मत रखकर सरेण्डर होके सारी जीवन सेवा के प्रति लगाने का संकल्प ले लिया है। टीचर्स पक्की हैं ना? पक्के हैं कि थोड़े थोड़े कच्चे हैं? टीचर्स कच्चे नहीं बनना। टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से फ्युचर दिखाने वाली। अभी संगमयुग का फ्युचर है - फरिश्ता भव। और भविष्य का फीचर्स है - देवता भव। तो जो भी सेवाधारी ग्रुप आया है, उनको डबल नशा है कि फरिश्ता सो देवता बनना ही है! सभी पक्के हैं ना? हाँ देखो, आपका फोटो आ रहा है, तो ऐसा नहीं हो कि फोटो दिखाई नहीं दे, पक्के रहना। क्योंकि जब कहाँ थोड़ी बहुत हलचल होती है ना तो कई बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। गहराई में नहीं जाते, घबरा जाते हैं। अगर गहराई में जाये ना, तो कभी भी कितना भी बड़ा हलचल वाला पेपर हो या बात हो लेकिन गहराई में जाने वाले जैसे समुद्र होता है ना, तो समुद्र के तले में जाने वाले बहुत माल लेके आते हैं। ऊपर-ऊपर वाले नहीं, ऊपर वालों को तो मछली मिलेगी लेकिन गहराई में जाने वाले बहुत चीज़ें ले आते हैं। तो यहाँ भी कोई भी बात होवे, बातें तो आयेंगी, बातें नहीं आयेंगी - यह बापदादा नहीं कहेगा। जितना आगे जायेंगे उतनी सूक्ष्म बातें आयेंगी क्योंकि पास विद आनर होना है ना। टीचर्स ने क्या सोचा है? पास विद आनर होना है या 33 मार्क्स से पास होना है? पास विद आनर होना है तो हाथ उठाओ। इन्हों का अच्छी तरह से फोटो निकालो। अच्छा। तो हलचल में घबराना नहीं। बापदादा को उस समय भूल जाते हो, अकेले बन जाते हो ना तो छोटी बात भी बड़ी लगती है। बापदादा कम्बाइण्ड है, कम्बाइण्ड रखो, अनुभव करो तो देखो पहाड़ भी रूई बन जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। कितने बारी पास हुए हो, कितने कल्प पास हुए हो, पता है? नशा है? अनेक बार मैं ही पास हुआ हूँ, अभी

रिपीट करना है। नई बात नहीं है, सिर्फ रिपीट करना है, यह स्मृति रखो। तो इन्दौर और यू.पी., यू.पी. को तो साकार माँ बाप की बहुत पालना मिली है। तो यू.पी. को तो कमाल करना है। और इन्दौर की भी विशेषता है कि साकार बाप की प्रेरणा से सेन्टर खुला है। ऐसे है ना? दोनों की विशेषता है, तो अभी दोनों ही करो कमाल। ऐसा वायुमण्डल बनाके दिखाओ, जैसे अभी किसको भी परिचय देते हो तो क्या कहते हो? मधुबन में आके देखो, कहते हो ना! तो अभी अपने ज़ोन को, अपने स्थान को ऐसा बनाओ जो किसको भी कहें कि इन्दौर में जाके देखो, यू.पी. में जाके देखो। ठीक है ना? पसन्द है ना? क्या नहीं हो सकता है! आप एक-एक मास्टर सर्वशक्तिवान के संकल्प में इतनी ताकत है जो चाहो वह हो सकता है। सिर्फ दृढ़ता चाहिए। दृढ़ता की चाबी कभी-कभी माया चोरी कर देती है। इस चाबी को सदा यूज करो, ऐसे नहीं सम्भाल के रखो, दिमाग में है, चाबी है लेकिन समय पर यूज करो। समय बीत जाता है ना, फिर क्या कहते हैं, करना तो ऐसे था, था, था करते हैं। तो था, था नहीं करना। समय पर करना। तो ज़ोन नम्बरवन हो जायेगा। सभी का लक्ष्य अच्छा है, नम्बरवन होना है। यही लक्ष्य है ना, कि जो भी नम्बर मिले ठीक है? बापदादा को भी हर ज़ोन प्यारे ते प्यारा है, क्योंकि हर ज़ोन में कोई न कोई विशेषता है, लेकिन अभी खास विशेषता प्रत्यक्ष नहीं किया है। होना तो है ही। होना तो है! नहीं, हुआ ही पड़ा है, सिर्फ रिपीट करो। तो सब खुश हैं? कभी खुशी तो नहीं गंवाते? खुशी गई जीवन गई। नीरस जीवन में कोई मजा नहीं। तो अच्छा है, कोई कमाल करके दिखाओ। अभी बापदादा ने सभी ज़ोन को कहा है कोई नवीनता करके दिखाओ। अभी नवीनता नहीं दिखाई है। यह बड़े प्रोग्राम करना, यह वर्गीकरण के प्रोग्राम करना, यह तो हो रहे हैं, होते रहेंगे। अब कोई नवीनता दिखाओ। उसमें देखें कौन सा ज़ोन आगे जाता है, विदेश जावे या देश जाये। जो सब कापी कर सकें,

ऐसी नवीनता हो। देखेंगे, कौन करता है। करना तो है ही। अच्छा। बहुत अच्छा चांस लिया, बापदादा कहते हैं जो हर विशेषता में चांस लेते हैं वह चांसलर बन जाते हैं। यज्ञ सेवा का पुण्य जमा किया, बहुत बड़ा पुण्य जमा किया क्योंकि यहाँ वायुमण्डल और बेफिकर की मदद है, कोई जिम्मेवारी का फिकर नहीं, जो ड्युटी मिली वही करनी है, बस। तो दोनों ज़ोन ने बहुत-बहुत कमाई जमा की? थोड़ी तो नहीं की, बहुत की? अच्छा।

96 देशों से 900 विदेशी भाई-बहिनें आये हैं - विदेश वाले संख्या बढ़ाने में अच्छा रिकार्ड दिखा रहे हैं। एक तरफ संख्या बढ़ा रहे हैं और दूसरी तरफ एरिया को सम्पन्न बनाने का भी उमंग अच्छा है। बापदादा ने सुना कि मैजॉरिटी सभी तरफ अभी एक दो को उमंग आ रहा है, हर एक अपनी एरिया को चेक करके सन्देश देने का प्रोग्राम बना रहे हैं। भिन्न-भिन्न विधि से कर रहे हैं लेकिन जो भी कर रहे हो वह अच्छा कर रहे हो। अपना उल्हना उतार रहे हो। यह उमंग-उत्साह स्वयं को भी उड़ाता है, और औरों में भी खुशी की लहर फैलाता है। जैसे कोई डूबे हुए को पत्ते का भी सहारा मिल जाता है, तिनके का सहारा मिल जाता है ना, ऐसे दुःखी आत्माओं को सहारा मिल जाता है। उनके मन से जो दुआयें निकलती हैं वह आपके पुण्य के खाते में जमा हो जाती हैं। यह गुह्य हिसाब है। जितनों को जो प्राप्ति होती है, आपके खाते में वो प्राप्ति जमा हो जाती है। बाकी अच्छा मीटिंग का भी समाचार सुना, अच्छा अटेंशन दे रहे हैं। अपनी अवस्था का भी अच्छा चांस लेते हैं और सेवा के प्रोग्राम में भी अच्छा भविष्य प्रोग्राम बना देते हैं। एक उमंग अच्छा है, कि जो स्नेही सहयोगी हैं उन्हें को और सहजयोगी बनाने में समीप लाये हैं। यह भारत वाले भी करते हैं लेकिन फारेन वाले भी अच्छा कर रहे हैं। अभी सभी मैजॉरिटी जहाँ-जहाँ सेवा करते हो चाहे वी.आई.पी हैं, चाहे साधारण हैं लेकिन समझते हैं कि यहाँ कुछ मिलता है। कुछ नवीनता है, अभी यह

वायुमण्डल पहले से काफी चेंज हो गया है। पहले कितना मुश्किल से बुलाने पर आते थे, अभी तो वह खुद कहते हैं कि हमको चांस लेने दो, फ़र्क हो गया ना। तो विदेश की सेवा पर भी बापदादा खुश है। लेकिन स्व की सेवा में क्या सुनाया? तीव्र पुरुषार्थी, पुरुषार्थी सभी हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बनना है, जो सोचा वह किया, बाप ने कहा बच्चों ने किया। यही आपके जगत अम्बा की युक्ति थी, नम्बरवन हो गई। तो रात को और चलते फिरते भी चेक करो कि जो बाप ने कहा करना है, चलना है, सोचना है, वह किया? जो बाप ने कहा वह करना ही है। बाकी वृद्धि भी है और अटेन्शन भी है। प्रोग्राम भी अच्छे बनाये हैं। डबल मुबारक हो। अच्छा।

भिन्न-भिन्न वर्ग वाले भी आये हैं, बापदादा को मालूम है, अपनी अपनी मीटिंग्स कर रहे हैं। जो भी वर्ग वाले आये हैं, प्लैन तो बहुत अच्छा बना रहे हैं, अभी सिर्फ एडीशन यह करो कि जब भी मीटिंग करते हैं तो हमेशा स्व और सेवा दोनों का बैलेन्स रख एक दो को सेवा का उमंग भी दिलाओ, लेकिन साथ में स्व उन्नति का उमंग-उल्हास भी दिलाओ। बैलेन्स रखो। तो डबल करने से डबल ब्लैसिंग मिलेगी। यह ऑटोमेटिक ब्लैसिंग मिलती है, देनी नहीं पड़ती है ऑटोमेटिक मिलती है। बापदादा ने देखा है - स्व-उन्नति का भी समाचार भेजा है। (स्पार्क मीटिंग का समाचार रमेश भाई ने लिखकर सन्देशी द्वारा बापदादा के पास भेजा था) रमेश जो कर रहे हैं ना, उसमें स्व-उन्नति का भी लिखा है, उसको बार-बार अटेन्शन दिलाओ। जैसे सेवा में प्रैक्टिकल कर लेते हो ना, ऐसे स्व-उन्नति में प्रैक्टिकल किया या नहीं उसका भी चार्ट रखो। बाकी समाचार मिला था, सोचा अच्छा है। जिन्होंने भी मीटिंग की है बापदादा को समाचार मिला है। अभी तक बापदादा को एक बात का वर्ग वालों ने रेसपान्ड नहीं दिया है, याद है? कौन सा रेसपान्ड नहीं दिया है? बापदादा चाहते हैं हर

एक वर्ग का एक एक विशेष स्नेही भी हो, सहयोगी भी हो, वी.आई.पी. भी हो, माइक भी हो और सहजयोग के इन्ट्रेस्ट वाला भी हो, ऐसा हर वर्ग का एक-एक का ग्रुप बाप के आगे आवे, सभी वर्ग का, एक वर्ग का नहीं, कभी कोई आई.पी. आते हैं, वी.आई.पी आते हैं वह वेलकम। लेकिन बापदादा एक ही समय पर हर वर्ग के ऐसे क्वालिफिकेशन वाले ग्रुप को देखने चाहता है। आई.पीज का ग्रुप आता है लेकिन वर्गीकरण का एक विशेष माइक हो, आप सकाश बनो वह स्पीकर बने। आप माइट वह माइक। तो यह अभी करके दिखाना। फारेन वाले तो प्रोग्राम करते हैं, उसमें आ जाते हैं। काल आफ टाइम भी करते हैं, उसमें भी आई.पी. आ जाते हैं। यह वर्गीकरण के रूप में माइक लाना। यह ध्यान रखना। (ऐसे हर वर्ग के भारत में तैयार हैं, बापदादा मिलने की डेट दें) अभी सभी वर्गों से एक-एक माइक हो, ऐसा ग्रुप लाओ, उसके लिए टाइम देंगे। अच्छा।

सभी ने संकल्प किया, तीव्र पुरुषार्थ कर नम्बरवन बनना ही है। किया? हाथ उठाओ। अच्छा अभी टीचर्स उठा रही हैं। पहली लाइन तो है ही ना। अच्छा है - बापदादा ने यह भी डायरेक्शन दिया कि सारे दिन में बीच-बीच में 5 मिनट भी मिले, उसमें मन की एक्सरसाइज करो क्योंकि आजकल का जमाना एक्सरसाइज का है। तो 5 मिनट में मन की एक्सरसाइज करो, मन को परमधाम में लेके आओ, सूक्ष्मवतन में फरिश्तेपन को याद करो फिर पूज्य रूप याद करो, फिर ब्राह्मण रूप याद करो, फिर देवता रूप याद करो। कितने हुए? पांच। तो पांच मिनट में 5 यह एक्सरसाइज करो और सारे दिन में चलते फिरते यह कर सकते हो। इसके लिए मैदान नहीं चाहिए, दौड़ नहीं लगानी है, न कुर्सी चाहिए, न सीट चाहिए, न मशीन चाहिए। जैसे और एक्सरसाइज शरीर की आवश्यक है, वह भले करो, उसकी मना नहीं है। लेकिन यह मन की ड्रिल, एक्सरसाइज, मन को सदा खुश रखेगी। उमंग-उत्साह में रखेगी, उड़ती कला का अनुभव

करायेगी। तो अभी-अभी यह झिल सभी शुरू करो - परमधाम से देवता तक। (बापदादा ने झिल कराई) अच्छा -

चारों ओर के सदा अपने वृत्ति से रूहानी शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा अपने स्थान और स्थिति को शक्तिशाली वायुब्रेशन में अनुभव कराने वाले दृढ़ संकल्प वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा दुआ देने और दुआ लेने वाले रहमदिल आत्माओं को, सदा अपने आपको उड़ती कला का अनुभव करने वाले डबल लाइट आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से - आप लोगों का संगठन सभी को सकाश देता है। देता है ना? क्योंकि फिर भी अनुभवी हो ना! तो अनुभवी का प्रभाव ज्यादा पड़ता है। आदि से आप आत्माओं में बाप और माँ ने अनुभवी मूर्त बनने का संस्कार डाल दिया है। डाला है ना! बापदादा भी खुश होते हैं। अच्छा है, ठीक है? कैसी भी तबियत है लेकिन यज्ञ का श्रृंगार हो। (दादी शान्तामणि को देखकर) चाहे भागदौड़ नहीं भी कर सकते हैं लेकिन आप लोगों को देख करके भी, आप लोगों की हाजिरी भी सभी को बल देती है। आदि रत्न हो ना! तो आदि के संस्कार पावरफुल, आदि की भट्टी सभी याद करते हैं ना! वह साकार की पालना सभी याद करते हैं। अच्छा।

मोहिनी बहन ने दादी जी की याद बापदादा को दी - बापदादा भी बहुत-बहुत याद दे रहे हैं। बाप को सिर्फ याद नहीं है, सभी को याद है। बाप भी याद करते हैं। इसीलिए जैसे ब्रह्मा बाप एक एकजैम्मुल था, वैसे दादी भी एक एकजैम्मुल है। अचानक के पार्ट को कितना सहज कर दिया। ब्रह्मा बाप ने यज्ञ को रचा, लेकिन दादी ने ब्रह्मा बाप से भी ज्यादा समय यज्ञ सम्भाला। इसीलिए सभी के दिल में दादी की याद है ही। क्योंकि उनके गुण, उसका चेहरा, उसकी चलन विशेष रही है, इसीलिए सबके दिल में

विशेष याद है ही है। अभी सभी ने योग किया ना, यह प्यार की निशानी है। अभी और जोर से योग करो जो दादी मधुबन में पहुंच जायेगी। जैसे वह आक्सीजन देते हैं ना, वेंटीलेटर से देते हैं तो साइंस पावर से आपकी साइलेन्स पावर कम थोड़ेही है। और योग लगाओ, पावरफुल योग। देखो, आपके योग से डाक्टर्स को टचिंग हुई, कोई तो विधि चेंज की ना। अभी धीरे-धीरे कर रहे हैं, आप सभी के दृढ़ संकल्प से विधि भी निकल आयेगी। ठीक है ना! और योग लगाओ, योग को कम नहीं करना। अच्छा। जो भी सेवाधारी हैं मुन्नी है, योगिनी है, गुप्ता है और कुमारियां भी हैं सभी दिल से सेवा कर रहे हैं, बापदादा आपके दिल की मेहनत देख खुश हैं और आपकी मेहनत अवश्य रूप दिखायेगी।

निर्वैर भाई ने सबकी याद दी – सभी का मन यहाँ है, तन वहाँ है। (अभी सबका एक ही संकल्प है दादी चले, फिरे) होना तो है ही। अच्छा है।

बृजमोहन भाई से – दिल्ली में कोई ऐसी नई इन्वेन्शन करो जो सब कर सकें, छोटे बड़े सब कर सकें।

विदेश की मुख्य बहनों से – बहुत अच्छा है, विदेश को अनुभवी आत्मायें होने के कारण अच्छा आगे बढ़ा रहे हो क्योंकि जो आप लोगों में बाप की डायरेक्ट पालना का बीज है, वह बीज फल दे रहा है। अभी सेवा की वृद्धि और उमंग-उत्साह बढ़ रहा है। पहले जो नाजुकपन था, अभी नाजुकपन खत्म हो गया है। वह कलचर भी खत्म हो गया है, क्योंकि आप लोग एक्जैम्पुल हो ना, तो आपके एक्जैम्पुल को देखकर अभी समझ गये हैं कि क्या करना है। बाकी प्लैन बहुत अच्छा बनाया है। यह ग्रुप-ग्रुप बनाके जो उन्हों के अनुसार ट्रेनिंग देते हैं ना, वह बहुत अच्छा। टीचर्स भी रिफ्रेश और आने वाले भी रिफ्रेश हो जाते हैं। जिस डिपार्टमेंट को जो चाहिए वह मिलता है, यह अच्छा है। और अटेन्शन दिलाना भी बहुत

जरूरी है। अच्छा किया है। यज्ञ में भी अटेन्शन दिया, यह भी बहुत अच्छा किया है क्योंकि यज्ञ के हो। सिर्फ सेवा के लिए बाहर गये हैं। तो आप लोगों का जरा भी इशारा अच्छा होता है, इसमें खराब नहीं मानो, अच्छा है। बापदादा खुश है। इतना टाइम भी देते तो हो ना। अभी ऐसा एक दो के विचारों में समीप आओ जो सभी समझें कि यह सब एक हैं, 6 नहीं हैं एक हैं, इतना एक दो के विचारों के भी नजदीक। हो रहा है, बापदादा देख रहे हैं किया है और आगे भी करते रहेंगे। (दिल से बहुत थैंक्स) आपको बहुत थैंक्स।

“सपूत बन अपनी सूरत से बाप की सूरत दिखाना, निर्माण (सेवा) के साथ निर्मल वाणी, निर्माण स्थिति का बैलेन्स रखना”

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के भाग्य की रेखायें देख हर्षित हो रहे हैं। सभी बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की रेखा चमक रही है। नयनों में रूहानियत की भाग्य रेखा दिखाई दे रही है। मुख में श्रेष्ठ वाणी के भाग्य की रेखा दिखाई दे रही है। होठों में रूहानी मुस्कराहट देख रहे हैं। हाथों में सर्व परमात्म खजाने की रेखा दिखाई दे रही है। हर याद के कदम में पदमों की रेखा देख रहे हैं। हर एक के हृदय में बाप के लव में लवलीन की रेखा देख रहे हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य हर एक बच्चा अनुभव कर रहे हैं ना! क्योंकि यह भाग्य की रेखायें स्वयं बाप ने हर एक के श्रेष्ठ कर्म के कलम से खींची है। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य जो अविनाशी है, सिर्फ इस जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्मों की अविनाशी भाग्य रेखायें हैं। अविनाशी बाप है और अविनाशी भाग्य की रेखायें हैं। इस समय श्रेष्ठ कर्म के आधार पर सर्व रेखायें प्राप्त होती हैं। इस समय का पुरुषार्थ अनेक जन्म की प्रालब्ध बना देती है।

बापदादा सभी बच्चों के इस समय भी जो प्रालब्ध अनेक जन्म मिलनी है वह इस जन्म में पुरुषार्थ की प्रालब्ध की प्राप्ति अभी देखने चाहते हैं। सिर्फ भविष्य नहीं लेकिन अभी भी यह सब रेखायें सदा अनुभव में आयें क्योंकि अभी के यह दिव्य संस्कार आपका नया संसार बना रहा है। तो चेक करो, चेक करना आता है ना! स्वयं ही स्वयं के चेकर बनो। तो सर्व भाग्य की रेखायें अभी भी अनुभव होती हैं? ऐसे तो नहीं समझते कि यह प्रालब्ध अन्त में दिखाई देगी? प्राप्ति भी अब है तो प्रालब्ध का अनुभव भी अभी करना है। भविष्य संसार के संस्कार अभी प्रत्यक्ष जीवन में अनुभव होना है। तो क्या चेक करो? भविष्य संसार के संस्कारों का गायन करते हो कि भविष्य संसार में एक राज्य होगा। याद है ना वह संसार! कितने बार उस संसार में राज्य किया है? याद है? कि याद दिलाने से याद आता है? क्या थे, वह स्मृति में है ना? लेकिन वही संस्कार अभी के जीवन में प्रत्यक्ष रूप में हैं? तो चेक करो अभी भी मन में, बुद्धि में, सम्बन्ध-सम्पर्क में, जीवन में एक राज्य है? वा कभी-कभी आत्मा के राज्य के साथ-साथ माया का राज्य भी तो नहीं है? जैसे भविष्य प्रालब्ध में एक ही राज्य है, दो नहीं है। तो अभी भी दो राज्य तो नहीं है? जैसे भविष्य राज्य में एक राज्य के साथ एक धर्म है, वह धर्म कौन सा है? सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा का धर्म है। तो अभी चेक करो कि पवित्रता सम्पूर्ण है? स्वप्न में भी अपवित्रता का नामनिशान नहीं हो। पवित्रता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में एक ही धारणा सम्पूर्ण पवित्रता की हो। ब्रह्माचारी हो। अपनी चेकिंग करने आती है? जिसको अपनी चेकिंग करनी आती है वह हाथ उठाओ। आती है और करते भी हैं? करते हैं, करते हैं? टीचर्स को आता है? डबल फारेन्स को आता है? क्यों? अभी की पवित्रता के कारण आपके जड़ चित्र से भी पवित्रता की मांग करते हैं। पवित्रता अर्थात् एक धर्म अब की स्थापना है जो भविष्य में भी चलती है। ऐसे ही भविष्य का क्या गायन है? एक राज्य, एक धर्म और साथ में सदा सुख-शान्ति, सम्पत्ति, अखण्ड सुख, अखण्ड शान्ति, अखण्ड सम्पत्ति। तो अब के आपके स्वराज्य के जीवन में, वह है विश्व राज्य और इस समय है स्वराज्य, तो चेक करो अविनाशी सुख, परमात्म सुख, अविनाशी अनुभव होता है? ऐसे तो नहीं, कोई साधन वा कोई सैलवेशन के आधार पर सुख का अनुभव तो नहीं होता? कभी दुःख की लहर किसी भी कारण से अनुभव में नहीं आनी चाहिए। कोई नाम, मान-शान के आधार पर तो सुख अनुभव नहीं होता है? क्यों? यह नाम मान शान, साधन, सैलवेशन यह स्वयं ही विनाशी हैं, अल्पकाल के हैं। तो विनाशी आधार से अविनाशी सुख नहीं मिलता। चेक करते जाओ। अभी भी सुनते भी जाओ और अपने में चेक भी करते जाओ तो पता पड़ेगा कि अब के संस्कार और भविष्य संसार की प्रालब्ध में कितना अन्तर है! आप सबने जन्मते ही बापदादा से वायदा किया है, याद है वायदा? है याद वायदा कि भूल गया है? यही वायदा किया कि हम सभी बाप के साथी बन, विश्व कल्याणकारी बन नया सुख शान्तिमय संसार बनाने वाले हैं। याद है? याद है अपना वायदा? है याद? हाथ उठाओ। पीछे वाले भी उठा रहे हैं। यहाँ भी उठा रहे हैं, पक्का वायदा है या थोड़ा गड़बड़ हो जाती है? नया संसार अब परमात्म संस्कार के आधार से बनाने वाले हैं। तो सिर्फ अभी पुरुषार्थ नहीं करना है लेकिन पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी अभी अनुभव करनी है। सुख के साथ शान्ति को भी चेक करो - अशान्त सरकमस्टांश, अशान्त वायुमण्डल उसमें भी आप शान्ति

सागर के बच्चे सदा कमल पुष्प समान अशान्ति को भी शान्ति के वायुमण्डल में परिवर्तन कर सकते हो? शान्त वायुमण्डल है, उसमें आपने शान्ति अनुभव की, यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपका वायदा है अशान्ति को शान्ति में परिवर्तन करने वाले हैं। तो चेक करो - कर रहे हैं ना चेक? परिवर्तक हो? परवश तो नहीं हो ना? परिवर्तक हो। परिवर्तक कभी परवश नहीं हो सकता। इसी प्रकार से सम्पत्ति, अखुट सम्पत्ति, वह स्वराज्य अधिकारी की क्या है? ज्ञान, गुण और शक्तियां स्वराज्य अधिकारी की सम्पत्तियां यह हैं। तो चेक करो - ज्ञान के सारे विस्तार के सार को स्पष्ट जान गये हो ना? ज्ञान का अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ भाषण किया, कोर्स कराया, ज्ञान का अर्थ है समझ। तो हर संकल्प, हर कर्म बोल ज्ञान अर्थात् समझदार, नॉलेजफुल बनके करते हैं? सर्वगुण प्रैक्टिकल जीवन में इमर्ज रहते हैं? सर्व हैं वा यथाशक्ति हैं? इसी प्रकार सर्व शक्तियां आपका टाइटिल है - मास्टर सर्वशक्तिवान, शक्तिवान नहीं हैं। तो सर्व शक्तियां सम्पन्न हैं? और दूसरी बात सर्व शक्तियां समय पर कार्य करती हैं? समय पर हाजिर होती हैं या समय बीत जाता है फिर याद आता है? तो चेक करो तीनों ही बातें एक राज्य, एक धर्म और अविनाशी सुख-शान्ति, सम्पत्ति। क्योंकि नये संसार में यह बातें जो अभी स्वराज्य के समय का अनुभव है वह नहीं हो सकेगा। अभी इन सभी बातों का अनुभव कर सकते हैं। अभी से यह संस्कार इमर्ज होंगे तब अनेक जन्म प्रालब्ध के रूप में चलेंगे। ऐसे तो नहीं समझते हैं कि धारण कर रहे हैं, हो जायेगा, अन्त तक तो हो ही जायेगे!

बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है कि बहुतकाल का अभी का अभ्यास बहुतकाल की प्राप्ति का आधार है। अन्त में हो जायेगा नहीं सोचना, हो जायेगा नहीं, होना ही है। क्यों? स्वराज्य का जो अधिकार है वह अभी बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। अगर एक जन्म में अधिकारी नहीं बन सकते, अधीन बन जाते तो अनेक जन्म कैसे होंगे! इसलिए बापदादा सभी चारों ओर के बच्चों को बार-बार इशारा दे रहे हैं कि अभी समय की रफ्तार तीव्रगति में जा रही है इसलिए सभी बच्चों को अभी सिर्फ पुरुषार्थी नहीं बनना है लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थ की प्रालब्ध का अभी बहुतकाल से अनुभव करना है। तीव्र पुरुषार्थ की निशानियां बापदादा ने पहले भी सुनाई हैं। तीव्र पुरुषार्थी सदा मास्टर दाता होगा, लेवता नहीं देवता, देने वाला। यह हो तो मेरा पुरुषार्थ हो, यह करे तो मैं भी करूं, यह बदले तो मैं भी बदलूं, यह बदले, यह करे, यह दातापन की निशानी नहीं है। कोई करे न करे, लेकिन मैं बापदादा समान करूं, ब्रह्मा बाप समान भी, साकार में भी देखा, बच्चे करें तो मैं करूं, कभी नहीं कहा, मैं करके बच्चों से कराऊं। दूसरी निशानी है तीव्र पुरुषार्थ की, सदा निर्माण, कार्य करते भी निर्माण, निर्माण और निर्माण दोनों का बैलेन्स चाहिए। क्यों? निर्माण बनकर कार्य करने में सर्व द्वारा दिल का स्नेह और दुआयें मिलती हैं। बापदादा ने देखा कि निर्माण अर्थात् सेवा के क्षेत्र में आजकल सभी अच्छे उमंग उत्साह से नये-नये प्लैन बना रहे हैं। इसकी बापदादा चारों ओर के बच्चों को मुबारक दे रहे हैं।

बापदादा के पास निर्माण के, सेवा के प्लैन बहुत अच्छे-अच्छे आये हैं। लेकिन बापदादा ने देखा कि निर्माण के कार्य तो बहुत अच्छे लेकिन जितना सेवा के कार्य में उमंग-उत्साह है उतना अगर निर्माण स्टेज का बैलेन्स हो तो निर्माण अर्थात् सेवा के कार्य में और सफलता और ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में हो सकती है। बापदादा ने पहले भी सुनाया है - निर्माण स्वभाव, निर्माण बोल और निर्माण स्थिति से सम्बन्ध-सम्पर्क में आना, देवताओं का गायन करते हैं लेकिन है ब्राह्मणों का गायन, देवताओं के लिए कहते हैं उनके मुख से जो बोल निकलते वह जैसे हीरे मोती, अमूल्य, निर्मल वाणी, निर्मल स्वभाव। अभी बापदादा देखते हैं, रिजल्ट सुना दें ना, क्योंकि इस सीजन का लास्ट टर्न है। तो बापदादा ने देखा कि निर्मल वाणी, निर्माण स्थिति उसमें अभी अटेन्शन चाहिए।

बापदादा ने पहले खजाने के तीन खाते जमा करो, यह पहले बताया है। तो रिजल्ट में क्या देखा? तीन खाते कौन से हैं? वह तो याद होगा ना! फिर भी रिवाइज कर रहे हैं - एक है अपने पुरुषार्थ से जमा का खाता बढ़ाना। दूसरा है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट रहे और दूसरे को भी सन्तुष्ट करे, भिन्न-भिन्न संस्कार को जानते हुए भी सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना इससे दुआओं का खाता जमा होता है। अगर किसी भी कारण से सन्तुष्ट करने में कमी रह जाती है तो पुण्य के खाते में जमा नहीं होता। सन्तुष्टता पुण्य की चाबी है। चाहे रहना, चाहे करना। और तीसरा है - सेवा में भी सदा निःस्वार्थ, मैं पन नहीं। मैंने किया, या मेरा होना चाहिए, यह मैं और मेरापन जहाँ सेवा में आ जाता है वहाँ पुण्य का खाता जमा नहीं होता। मेरापन, अनुभवी हो यह रॉयल रूप का भी मेरापन बहुत है। रॉयल रूप के मेरेपन की लिस्ट साधारण मेरेपन से लम्बी है। तो जहाँ भी मैं और मेरेपन का स्वार्थ आ जाता है, निःस्वार्थ नहीं है वहाँ पुण्य का खाता

कम जमा होता है। मेरेपन की लिस्ट फिर कभी सुनायेंगे, बड़ी लम्बी है और बड़ी सूक्ष्म है। तो बापदादा ने देखा कि अपने पुरुषार्थ से यथाशक्ति सभी अपना-अपना खाता जमा कर रहे हैं लेकिन दुआओं का खाता और पुण्य का खाता वह अभी भरने की आवश्यकता है। इसलिए तीनों खाते जमा करने का अटेन्शन। संस्कार वैरायटी अभी भी दिखाई देंगे, सबके संस्कार अभी सम्पन्न नहीं हुए हैं लेकिन हमारे ऊपर औरों के कमजोर स्वभाव, कमजोर संस्कारों का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, कमजोर संस्कार शक्तिशाली नहीं हैं। मुझ मास्टर सर्वशक्तिवान के ऊपर कमजोर संस्कार का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। सेफ्टी का साधन है बापदादा की छत्रछाया में रहना। बापदादा के कम्बाइण्ड रहना। छत्रछाया है श्रीमता।

अभी इस सीजन का लास्ट टर्न है, दूसरी सीजन समय प्रमाण चालू होगी लेकिन जैसे नई सीजन मिलन मनाने की चालू होगी, उसमें नवीनता क्या दिखायेंगे? अपने लिए कोई नया प्लैन बनाया है? जैसे सेवा के लिए नये-नये प्लैन सोचते हो ना, तो स्व के प्रति, जो पुरानी बातें हैं उसमें नवीनता क्या सोची है? अगर नहीं सोची भी है तो बापदादा इशारा दे रहे हैं कि स्व प्रति हर एक को संकल्प, बोल, सम्पर्क-सम्बन्ध, कर्म में नवीनता लाने का प्लैन बनाना ही है। बापदादा पहले रिजल्ट देखेंगे क्या नवीनता लाया? क्या पुराना संस्कार दृढ़ संकल्प से परिवर्तन किया? यह रिजल्ट पहले देखेंगे। क्या सोचते हो? ऐसा करें? करें? हाथ उठाओ जो कहते हैं करेंगे, करेंगे? अच्छा करेंगे या दूसरे को देखेंगे? क्या करेंगे? दूसरे को नहीं देखना, बापदादा को देखना, अपनी बड़ी दादी को देखना। कितनी न्यारी और प्यारी स्टेज है। बापदादा कहते हैं अगर किसको मैं और हृद का मेरापन से न्यारा देखना हो तो अपने बापदादा के दिलतख्तनशीन दादी को देखो। सारी लाइफ में हृद का मेरापन, हृद का मैं-पन से न्यारी रही है, उसकी रिजल्ट बीमारी कितनी भी है लेकिन दुःख दर्द की भासना से न्यारी है। एक ही शब्द पक्का है, कोई भी पूछता दादी कुछ दर्द है, दादी कुछ हो रहा है? क्या उत्तर मिलता? कुछ नहीं। क्योंकि निरस्वार्थ और दिल बड़ी, सर्व को समाने वाली, सर्व की प्यारी, इसकी प्रैक्टिकल निशानी देख रहे हैं। तो जब ब्रह्मा बाप की बात कहते हैं, तो कहते हैं उसमें तो बाप था ना, लेकिन दादी तो आपके साथ प्रभू पालना में रही, पढ़ाई में रही, सेवा में साथी रही, तो जब एक बन सकता है, निःस्वार्थ स्थिति में तो क्या आप सभी नहीं बन सकते? बन सकते हैं ना! बापदादा को निश्चय है कि आप ही बनने वाले हैं। कितने बार बने हैं? याद है? अनेक कल्प बाप समान बने हैं और अभी भी आप ही बनने वाले हो। इसी उमंग से, उत्साह से उड़ते चलो। बाप को आपमें निश्चय है तो आप भी अपने में सदा निश्चयबुद्धि, बनना ही है ऐसा निश्चयबुद्धि बन उड़ते चलो। जब बाप से प्यार है, प्यार में 100 परसेन्ट से भी ज्यादा है, ऐसे कहते हो। यह ठीक है? जो भी सभी बैठे हैं वा जो भी अपने-अपने स्थान पर सुन रहे हैं, देख रहे हैं वह सभी प्यार की सबजेक्ट में अपने को 100 परसेन्ट समझते हैं? वह हाथ उठाओ। 100 परसेन्ट? (सभी ने उठाया) अच्छा। पीछे वाले लम्बे हाथ उठाओ, हिलाओ। इसमें तो सभी ने हाथ उठाया। तो प्यार की निशानी है समान बनना। जिससे प्यार होता है उस जैसा बोलना, उस जैसा चलना, उस जैसा सम्बन्ध-सम्पर्क निभाना, यह है प्यार की निशानी।

तो अगली सीजन में सभी की सूरत में बाप की सूरत दिखाई दे। हर एक के सम्बन्ध-सम्पर्क में बाप जैसे संस्कार दिखाई दें। यह है स्नेह का रिटर्न, स्वयं को टर्न करना। देखो, आप सबके एक संकल्प की वृत्ति ने, योग की शक्ति ने दादी के परिवर्तन में (तबियत के परिवर्तन में) चार चांद लगा दियो। साइलेन्स की शक्ति से एकमत होके एक वृत्ति से विधि ने प्रत्यक्ष फल दिखाया, इसकी मुबारक हो सभी को। हाँ भले ताली बजाओ। जब एक बात का प्रत्यक्ष प्रमाण देख लिया, दृढ़ संकल्प संगठन की साइलेन्स, याद की शक्ति का। जब एक प्रमाण देख लिया तो आगे के लिए स्व परिवर्तन के लिए, अपने को देखना है, अपने को बदलना है, अगर झुकना पड़े तो झुकना है लेकिन परिवर्तन करने से स्व को हटाना नहीं है। ऐसे दृढ़ संकल्प कर हर एक को सबूत देना है क्योंकि सभी सपूत बच्चे हो। सपूत बच्चे का काम ही है प्रत्यक्ष सबूत देना। अच्छा।

जो बापदादा ने होम वर्क दिया था - 15 दिन के लिए। एक बात का होमवर्क दिया, याद रहा? जिसने संकल्प तक भी न दुःख दिया, न दुःख लिया, स्वप्न में भी नहीं, संकल्प में भी नहीं, वह हाथ उठाओ। उठ के खड़े हो। जिन्होंने पास मार्क्स ली, थोड़ी मार्क्स वाले नहीं, पास मार्क्स ली, क्यों! पहली लाइन ने नहीं ली। पहली लाइन वाले क्यों नहीं उठते! अगर किया है तो उठो। अगर दुःख नहीं दिया है तो उठो। स्वप्न में भी, संकल्प में भी नहीं, फिर तो ताली बजाओ इन्हीं के लिए। डबल फारेनर्स ने भी उठाया है। अच्छा। अच्छा। अमर रहेंगे ना! अमरभव का वरदान याद रखना।

सेवा का टर्न ईस्टर्न ज़ोन का है, (बंगाल-बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल, तामिलनाडु ज़ोन):- यह तो बहुत अच्छा, सभी ज़ोन वालों ने चांस लेने की विधि अच्छी बनाई है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल और तामिलनाडु कितनी राजधानियां हैं। बहुत हैं। तो सेवा में चमत्कारी सेवा का चांस है। अच्छा आप सबने कोई नई इन्वेन्शन निकाली है, सेवा की नवीनता सोची है? ज़ोन के सभी तरफ की विशेष टीचर्स हाथ उठाओ। भिन्न-भिन्न स्थान की हेड, एक ज़ोन हेड नहीं, लेकिन भिन्न-भिन्न स्थान की एक एक हेड। अच्छा तो आप सभी ने सेवा में नवीनता का प्लैन क्या बनाया? कोई बनाया है? आगे वाली टीचर्स बनाया है? कि बना रहे हैं? बना रहे हैं। क्योंकि आपका ज़ोन जो है उसमें विस्तार बहुत है, कितनी आत्मायें हैं, कितने देश हैं, कितने गांव हैं, तो ऐसा प्लैन बनाओ, जैसे बापदादा ने देखा तो फारेन में अफ्रीका वालों ने सिर्फ प्लैन नहीं बनाया, लेकिन प्रैक्टिकल में सब एरिया कवर की है, तो आपकी तरफ तो बहुत एरिया है तो कितने लोग समय समाप्त होने पर वंचित रह जायेंगे ना! तो मिल करके ऐसा कोई प्लैन बनाओ, ऐसे ही बापदादा के पास रशिया वालों का भी प्लैन आया और आज समाचार सुनाया कि आज से उन्होंने प्रोग्राम चालू कर दिया है। आज गांव वालों ने भी सुनाया (ग्राम विकास प्रभाग की ओर से इस वर्ष अखिल भारतीय मोटर साइकिल अभियान निकालने के बारे में सन्देशी द्वारा बापदादा को सन्देश भेजा गया था) तो बापदादा के पास समाचार पहुंचा कि इन्डिया में, हर ज़ोन के गांव-गांव में सन्देश पहुंचाने के लिए मोटरसाइकिल यात्रा का प्रोग्राम बनाया है। सभी ज़ोन मिलकर करेंगे। तो आप भी ऐसा आपस में प्लैन बनाओ, कोई एरिया रह नहीं जाये, कम से कम सन्देश तो मिल जाये, नहीं तो आपको बहुत उलहनें मिलेंगे। हमारा बाबा आया, और हमें सूचना नहीं दी। और दूसरा तामिलनाडु भी है, वह भी देखे ऐसा प्लैन बनाया है? हर ज़ोन को ऐसा प्लैन आपस में मिलकर बनाना ही चाहिए। खुशी होती है, अपने मन में सैटिस्फैक्शन होता है हमने अपनी सेवा का कार्य सन्देश देने का तो पूरा किया। तो अभी बनाना बना सकते हैं ना! बंगाल वाले हाथ उठाओ। बिहार वाले हाथ उठाओ, नेपाल वाले, उड़ीसा वाले तो बहादुर हैं। और भी हैं ना, आसाम। देखो कितनी एरिया ली है, बहुत बड़ी एरिया ली है, बड़ा राजा बनना है ना। तो दूसरी सीजन में यह सन्देश देने का कार्य का प्लैन बनाके प्रैक्टिकल में शुरू कर लेना। कर सकते हैं ना! कर सकते हैं? क्योंकि बापदादा को भी कोई बच्चे का उलहना अच्छा नहीं लगता। प्लैन बापदादा ने सुने हैं, प्लैन सभी ने बहुत अच्छा बनाया है लेकिन बापदादा हमेशा कहते हैं कि प्लैन के साथ प्लैन बुद्धि। प्लैन बुद्धि और प्लैन दोनों साथ-साथ हों। तो सफलता बहुत सहज और श्रेष्ठ निकलती है। तो तामिलनाडु भी करेगा ना! करेंगे? देखो, बापदादा ने सभी बच्चों को उमंग-उत्साह और हिम्मत का वरदान एक जैसा दिया है। किसको ज्यादा, किसको कम नहीं दिया है। तो जहाँ उमंग-उत्साह है, वहाँ हिम्मत है तो क्या नहीं हो सकता है। असम्भव भी सम्भव हो सकता है।

सभी पूछते हैं आगे क्या करना है? बापदादा का संकल्प है कि अभी ज्यादा में ज्यादा बनी बनाई स्टेज पर चांस लो। उन्हीं को सहयोगी बनाओ और आप सकाश दो। 70 साल अपने हिम्मत से किया। अभी दूसरों का भाग्य बनाओ। भाग्य बनाने का चांस दो उन्हीं को। भाग्य बनाने के लिए सिर्फ स्वयं सकाश कौन सी दो? एक तो रहमदिल बहुत बनो। क्षमा में बाप के साथी बनो। शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल ऐसा बनाओ जो स्वयं आफर करें, ऐसे आफर चारों ओर से आये। हर ज़ोन में आफर आये, यहाँ आओ, यहाँ आओ, यहाँ आओ, तब यही है, यही है, यह स्वतः ही प्रसिद्ध हो जायेगा। अभी उन्हीं को भी सहयोगी स्नेही बनने का चांस दो। उन्हीं को भी चांस दो क्योंकि बापदादा ने देखा है कि स्नेही, सहयोगी हर ज़ोन में यथा शक्ति है लेकिन उन्हीं को सेवा के साथी बनाओ। उन्हीं को भी उमंग उत्साह के पंख दो। हैं चारों ओर क्योंकि बापदादा चक्कर तो लगाते हैं ना! तो अपने बच्चों को भी देखते हैं और स्नेही-सहयोगी आत्माओं को भी देखते हैं। बापदादा की नज़र में हैं लेकिन चांस नहीं दिया है, प्रैक्टिकल चांस नहीं लिया है। तो यह वर्ष उन्हीं को निमित्त बनाओ, स्नेही-सहयोगियों को उमंग-उत्साह में लाओ। लाना पड़ता है। नहीं तो वह भी आपको उलहना देंगे कि हमको तो आपने बताया ही नहीं कि ऐसा भी कर सकते हैं। इसलिए अभी चांस देने वाले बनो। कैसे फारेन वाले हो सकता है ना? हो सकता है फारेन वाले? फारेन के भाई उठो। जो सेवा में निमित्त हैं वह उठो। देखो कितने अच्छे अच्छे सकाश देने वाली आत्मायें हो। तो अभी देखेंगे सबसे कौन से ज़ोन ने बनी बनाई स्टेज ली है। जैसे एक वर्ष में मेगा प्रोग्राम करने की धुन लगा दी थी। ऐसे अभी बनी बनाई स्टेज का चांस लेने की धूम मचाओ। हो सकता है? फारेन वाले हो सकता है? हो सकता है! आपको सामने कह रहे हैं (आस्ट्रेलिया के ब्रायन को कह रहे हैं) कमाल

करके दिखाना। दादी जानकी की राय से करते चलो। बापदादा साथी दे रहे हैं। सभी कर सकते हैं क्योंकि सभी पुराने और सर्विसएबुल हो। (जयन्ती बहन ने सुनाया - विदेश में इस वर्ष ऐसे इन्टरनेशनल 4 निमन्त्रण मिले हैं, जिसमें दादियां आकर आशीर्वाद दें, लण्डन में जो बाबा का दुकान है उसको सेवा के लिए गोल्ड मैडल मिला है) अच्छा है मुबारक हो। सभी के तालियों की मुबारक उसको दे देना।

500 डबल विदेशी आये हैं: बापदादा सदा कहता है कि डबल विदेशी मधुबन का विशेष श्रंगार हैं। जैसे देश अपने-अपने उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं ऐसे विदेश भी कम नहीं हैं। विदेश ने भी थोड़े समय में विस्तार अच्छा किया है। अभी विदेश को सिर्फ एक ही इनाम लेना है, बतायें कौन सा इनाम लेना है, खास डबल विदेशियों को? चारों ओर स्व और सेवा के बैलेन्स का इनाम लेना है। पसन्द है? विदेशी पसन्द है? लेना है? हाथ उठाओ। वेलकमा मुबारक इन एडवांस मुबारक। (जर्मनी में एक बड़े गुरु ने अपने प्रोग्राम में ब्रह्माकुमारियों को प्रवचन के लिए निमन्त्रण दिया है) बहुत अच्छा। ऐसे तो कभी कभी इन्डिया में भी मिलते हैं। लेकिन अभी लहर फैलाओ। कभी कभी तो मिलते हैं लेकिन अभी चारों ओर हर ज़ोन में देश में विदेश में यह लहर फैलाओ। अच्छा।

मधुबन निवासी क्या करेंगे? क्या करेंगे मधुबन वाले! बताओ मधुबन वाले क्या करेंगे! आबू में स्टेज बनायेंगे? कोई नवीनता करो मधुबन वाले। मधुबन की एक विशेषता तो बहुत अच्छी है, जो भी आते हैं, जो भी ज़ोन वाले सेवा करते हैं, सेवा वहाँ करते हैं लेकिन जो छाप लगती है वह मधुबन में लगती है। तो मधुबन वाले वायुमण्डल और वायुब्रेशन, स्वच्छता और स्नेह का छाप अच्छी लगाते हैं। जैसे आप मधुबन घर में रहते हो ना, ऐसे जो आने वाले हैं उसको भी घर का बना देते हो, यह मधुबन की विशेषता है। करते हो ना ऐसे? सेवा अच्छी करते हो ना! करते हो ना? यह सब मधुबन वाले बैठे हैं। मधुबन वाले उठो, अच्छा। बाहर भी मधुबन वाले बैठे होंगे। बापदादा को पता है बाहर बहुत बैठते हैं। अच्छा है वह लाते हैं, आप उन्हीं को उड़ाते रहो। डबल लाइट बनाके उन्हीं की ऐसी पालना करो खिलाओ, पिलाओ, अपना अनुभव सुनाओ, उनको छाप लगा दो। करते हो ना सेवा? करते हैं सभी। वायुमण्डल की सेवा तो करते हैं ना! अच्छा है, दादियां भी उठी हैं, मुबारक हो। दादियों की ताली तो बजाओ। अच्छा है। मधुबन, मधुबन ही है और आखिर में सभी को कहाँ पहुंचना है, मधुबन में ही पहुंचेंगे ना। सेवा अच्छी करते हो। ड्युटी अपनी अच्छी बजाते हो, सिर्फ जो आज बापदादा ने कहा है ना, स्व तीव्र पुरुषार्थ और सेवा दोनों का बैलेन्स इसका आपस में संगठन कर बैलेन्स करके दिखाओ। अगली सीजन में क्या करेंगे? मधुबन वाले करेंगे? आपस में मीटिंग कर दादियों का भी सहयोग लेकर बैलेन्स का जलवा दिखाओ। जिसको देखे वह जैसे कोई हालचाल पूछते हैं ना, आपका हाल क्या है? आपका चाल क्या है? तो जो भी आवे वह सबका कुशल हाल और फरिश्ते की चाल देखे। जहाँ देखे वहाँ फरिश्ते की चाल, चलने की चाल नहीं, उड़ने की चाल। चलने वाले तो रह जायेंगे, उड़ने वाले बाप के साथ जायेंगे। तो मधुबन में रहने वालों को पहला चांस लेना है, दादियों के साथ रहते हो, बाप के साथ उड़ने का चांस लें, पीछे पीछे नहीं। लेंगे ना चांस? मीटिंग करेंगे? हाँ बताओ ऐसी मीटिंग करेंगे? अच्छा। एक मास में रिजल्ट देंगे। एक मास ठीक है? दृढ़ निश्चय से हाथ उठा रहे हो ना! फिर तो बापदादा कोई न कोई गिफ्ट देगा मधुबन वालों को। अच्छे हैं। मधुबन निवासी टाइटिल ही बहुत बढ़िया है। तो पक्का है ना! अभी पक्का। कुछ भी जाये, दूसरे को नहीं देखना, अपने को देखना, मुझे करना है, मुझे बदलना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ, नहीं। ऐसे करेंगे? करेंगे? पीछे वाले करेंगे? पक्का? पक्का का ऐसा हाथ करो। देखो सभी को कितनी खुशी हो रही है, मधुबन वालों का नाम सुनकर खुश हो जाते हैं। अच्छा।

7 अप्रैल 2007 से वार्षिक मीटिंग रखी गयी है उसके लिए बापदादा की प्रेरणा:- उस मीटिंग में जो बापदादा ने सेवा का साधन बताया है, बनी बनाई स्टेज लेने का और साथ में पुरुषार्थ और उसकी प्रालब्ध दोनों का प्रैक्टिकल स्वरूप प्रत्यक्ष करने का। जो मीटिंग में आये उसको रिजल्ट देनी है। वह आपस में राय करके दो मास, तीन मास, एक मास फिक्स करना और उसकी रिजल्ट प्रैक्टिकल में लाना। वह बापदादा देखेंगे क्योंकि यह मीटिंग है विशेष निमित्त आत्माओं की। अगर निमित्त आत्माओं ने बैलेन्स की विशेषता दिखाई तो उसका वायुमण्डल बहुत जल्दी और पावरफुल फैलेगा। अपने को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप की प्रत्यक्षता भी बहुत सहज और जल्दी होगी। मीटिंग में जिसका भी नाम रखा है वह जिम्मेवार है, सिर्फ सुनने वा सुनाने के लिए नहीं लेकिन जिम्मेवार है बैलेन्स रखने और रखाने के। यह मीटिंग का विशेष कार्य है। और बापदादा सन्देशी द्वारा भी रिजल्ट सुनते रहेंगे फिर आगे के लिए प्रोग्राम देंगे।

बापदादा का लक्ष्य तो सभी ने समझ लिया कि अभी बापदादा हर एक बच्चे को अधिकारी रूप में देखने चाहते

हैं। किसी भी सेवा में या पुरुषार्थ में परवश नहीं। अधिकारी। एक एक राज्य अधिकारी हो। सभी राजे हो ना! कि राजे नहीं हो? राजयोगी हो? प्रजायोगी तो नहीं हैं ना! तो राज्य अधिकारी देखने चाहते हैं। ऐसे नहीं क्या करूं, हो गया। चाहता नहीं था हो गया, यह नहीं। स्व अधिकारी। पुराने स्वभाव संस्कार के अधीन नहीं, अधिकारी। ठीक है। अच्छा।

अभी बापदादा ने जो ड्रिल बताई थी याद है? 5-5 मिनट सारे दिन में अनेक बार ड्रिल करनी है। वह किया है? जिसने वह ड्रिल की है, वह हाथ उठाओ। थोड़ों ने हाथ उठाया है। क्यों? थोड़ा टाइम किया है? बहुत टाइम नहीं किया है तो अभी क्या करेंगे? कम से कम बतायें, कम से कम 8 बारी सारे दिन में कर सकते हो? कर सकते हो? इसमें हाथ उठाओ। करेंगे? करेंगे? अच्छा है। फिर जब सीजन शुरू होगी ना, जब दूसरी सीजन शुरू होगी उसमें बापदादा सभी से रिजल्ट मंगायेगे। पीछे एक बात बतायेगे, अभी नहीं बतायेगे। पीछे बात बतायेगे। मधुबन वाले तो करेंगे ना? पहला नम्बर। तो इस वर्ष का होमवर्क, इस सीजन का होमवर्क दूसरी सीजन तक कम से कम 8 बारी यह ड्रिल जरूर करनी है। जरूर, देखेंगे नहीं, करनी ही है। चाहे मिस हो जाए तो एक घण्टे में अनेक बार करके पूरा करना। नींद पीछे करना। सोना पीछे। पहले ड्रिल, आठ बारी पूरा करके पीछे सोना। ठीक है ना। टीचर्स! पंखे हाथ में लिये हैं, गर्मी हो रही है। बहुत अच्छा, टीचर्स का वायुमण्डल स्वतः ही फैलेगा।

आज बापदादा सभी को यह देखना चाहते हैं, अभी अभी देखना चाहते हैं कि एक सेकण्ड में स्वराज्य के सीट पर कन्ट्रोलिंग पावर, रूनिंग पावर के संस्कार में इमर्ज रूप से सेकण्ड में बैठ सकते हैं! तो एक सेकण्ड में दो तीन मिनट के लिए राज्य अधिकारी की सीट पर सेट हो जाओ। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों की यादप्यार के पत्र और साथ-साथ जो भी साइंस के साधन हैं उन्होंने द्वारा यादप्यार बापदादा के पास पहुंच गई है। अपने दिल का समाचार भी बहुत बच्चे लिखते भी हैं और रूहरिहान में भी सुनाते हैं। बापदादा उन सभी बच्चों को रेसपान्ड दे रहे हैं कि सदा सच्ची दिल पर साहेब राजी है। दिल की दुआयें और दिल का दुलार बापदादा का विशेष उन आत्माओं प्रति है। चारों ओर के जो भी समाचार देते हैं, सभी अच्छे अच्छे उमंग-उत्साह के प्लैन जो भी बनाये हैं, उसकी बापदादा मुबारक भी दे रहे हैं और वरदान भी दे रहे हैं, बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो।

चारों ओर के बापदादा के कोटों में कोई, कोई में भी कोई श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को बापदादा का विशेष यादप्यार, बापदादा सभी बच्चों को हिम्मत और उमंग-उत्साह की मुबारक भी दे रहे हैं। आगे तीव्र पुरुषार्थी बनने की, बैलेन्स की पदमा-पदमगुणा ब्लैसिंग भी दे रहे हैं। सभी के भाग्य का सितारा सदा चमकता रहे और औरों का भाग्य बनवाते रहें इसकी भी दुआयें दे रहे हैं। चारों ओर के बच्चे अपने अपने स्थान पर सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं और बापदादा भी सभी चारों ओर के दूर बैठे बच्चों को देख-देख खुश हो रहे हैं। देखते रहो और मधुबन की शोभा सदा बढ़ाते रहो। तो सभी बच्चों को दिल की दुआओं साथ नमस्ते।

दादियों से:- आप सबके साइलेन्स बल ने डाक्टरों को टच किया। नई नई इन्वेन्शन निकाल रहे हैं। कोई न कोई ऐसी बात निकाली है जो सहज हो रहा है। (मोहिनी बहन ने सभी की याद दी) सभी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं, दिल से सेवा कर रहे हैं। (अंकल-आंटी ने याद दी है) उन्होंने को विशेष यादप्यार और टोली भेजना। अच्छा है स्थापना के कार्य में निमित्त बनें हैं। फारेन में वी.आई.पी के रूप में यह पहला मिसाल। सेवा के निमित्त बनें। अच्छा। दादियां तो सभी तन्दरूस्त हो गई हैं।

(परदादी से) कमाल करके दिखाई। (4 महीना अहमदाबाद में रही) वह भी सेवा की, ऐसे नहीं रही, सेवा की है। (बाबा की गोदी में आ गई) सदा बाबा की गोदी में रहती है। अच्छा।

योगिनी बहन:- अच्छी हिम्मत रखी है, प्यार है मेहनत नहीं। यह तो बाम्बे वालों को लिफ्ट मिली है। आपने हिम्मत अच्छी रखी है।

शान्तामणि दादी: इसने कमाल की। डाक्टर भी मानते हैं यह विल पावर है। तो यह विल पावर की प्रत्यक्षता दिखाई, इसकी मुबारक हो बहुत। एक एकजैम्मुल तो बनी। विल पावर क्या चीज़ होती है उसका एकजैम्मुल बनी। बापदादा को बहुत अच्छा लगा। उसकी मुबारक है।

हर निमित्त दादी की विशेषता है। और देखो कोई भी दादी नहीं होती है तो सब कहते हैं खाली खाली हैं, 1000 रहे पड़े हैं फिर भी कहते हैं खाली है। तो जहाँ दादियां हैं वहाँ रौनक है। ऐसे ही सभी को सिखाओ। ऐसा कोई ग्रुप

तैयार करो, बापदादा बहुत इनाम देगा, ऐसा ग्रुप तैयार करो। पाण्डवों को भी ऐसा ग्रुप तैयार करना है जिसमें बस एक दो को हाँ जी, हाँ जी करें और हज़ूर हाजिरा देखेंगे। दादियां ग्रुप पहले तैयार करती या पाण्डव तैयार करते। निमित्त दादियां भले हो लेकिन आपस में भी हिम्मत रखनी पड़े। हिम्मत आपकी मदद दादियों की। बापदादा तो है ही। कोई ग्रुप जरूर चाहिए। पाण्डवों का भी ग्रुप चाहिए शक्तियों का भी चाहिए, इससे वायुमण्डल बहुत जल्दी फैलेगा। अच्छा है।

डा.अशोक मेहता से:- एवररेडी का प्रैक्टिकल रूप दिखा दिया। ऐसे ही पुरुषार्थ में भी एवररेडी। अच्छा है हॉस्पिटल एक एकजैम्पुल है। इस हॉस्पिटल में ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो सभी को एड्रेस मिले कि अगर आपको देखना हो कि कैसे सहज योगी और सहज धारणा स्वरूप सेवाधारी हैं, लेकिन सेवा करते हुए भी योगी, ऐसा एकजैम्पुल सभी वर्कर्स सहित बनाओ। ऐसा ग्रुप बनाओ जो सभी को एड्रेस देवे कि देखो कर्म करते भी ऐसे हैं। ऐसी कोई नवीनता करके दिखाओ। हॉस्पिटल का काम तो चलता रहेगा लेकिन आप कोई नवीनता करके दिखाओ। ऐसा कोई ग्रुप बनाओ फिर बापदादा के पास ले आना जो कर्मयोगी की जीवन बताये। कहाँ भी करो लेकिन जैसे कहते हैं ना यह दवाई इस हॉस्पिटल में अच्छी मिलती है यह आपरेशन यहाँ अच्छा होता है, ऐसे यह प्रसिद्ध हो जाए कर्मयोगी ग्रुप अगर देखना है तो यहाँ देखो। यह करके दिखाओ। (आपकी आशीर्वाद चाहिए) बापदादा की आशीर्वाद से ही पैदा हुए हो। पैदा ही आशीर्वाद से हुए हो। पैदा भी हो गये पले भी हो। अच्छा है ज्यादा नहीं फंसाओ अपने को, कोई नवीनता करके दिखाओ। अच्छा।

बृजमोहन भाई से:- सेवा हो रही है लेकिन अभी कोई सेवा की नवीनता दिखाओ। नवीनता यह करके दिखाओ जो स्नेही सहयोगी हैं ना, हर वर्ग का वह ग्रुप ले आओ। दिल्ली में अगली सीजन में ग्रुप बनाओ ऐसा, हर वर्ग का हो। और छोटा ग्रुप बनाओ तो आपको सब कापी करेंगे।

रमेश भाई से:- अच्छा है बाम्बे में भी कोई ऐसा प्लैन बनाओ जो शार्ट भी हो नवीन भी हो।

डा.प्रताप भाई से:- हॉस्पिटल वालों को विशेष यादप्यार देना और आप भी बहुत अच्छा कर रहे हो। सुनो नहीं किसका। बापदादा जानते हैं आप क्या कर रहे हो कितना कर रहे हो। कोई फिकर नहीं करो उड़ते रहो। बापदादा का सर्टीफिकेट ठीक है।

भोपाल भाई— शान्तिवन की शोभा है ना। सभी को सुख तो मिला ना। तो उसकी दुआयें मिलती हैं।

गोलक भाई— यह भी ठीक है, थकते तो नहीं हैं। हिम्मत आपकी मदद बाप की। अभी लक्ष्य अच्छा रखा है, और होता जायेगा। (मीटिंग की थी) रिजल्ट बताना दादियों को।

कुछ वी.आई.पीज बापदादा से मिल रहे हैं

* देखो आप लोग सबसे ज्यादा सेवा कर सकते हो, क्योंकि आप न्युटरल होके अपने अनुभव से औरों को अनुभव बना सकते हैं। कई ज्ञान नहीं सुनने चाहते लेकिन अनुभव सुनने चाहते हैं। तो आप सभी अपने अनुभव के आधार से सेवा कर सकते हैं। ऐसा माइक बनो, माइट वाला माइक। जैसे यह लाइट वाला माइक है ना, आप माइट वाला माइक बनो, बन सकते हैं। कितना अच्छा बन सकते हैं। कितनी माताओं का कल्याण कर सकती हो। माताओं को जगाओ। शिव शक्ति बनाओ। यह यूथ को जगाये। सभी सेवा कर सकते हो। और बापदादा की मुबारक है।

* आप लोगों का लक कितना बड़ा है जो कहा जाता है कोटों में कोई, तो आप कोई हो। अभी क्या बनना है! कोई में भी कोई, बनना है ना! कोटों में कोई तो बन गये, लेकिन अभी कोई में भी कोई बनना है। तो क्या बनना है? सेवा करनी है ना। अपने भाग्य का, प्राप्ति का अनुभव सुनाओ सभी को। क्योंकि प्रैक्टिकल अनुभव का प्रभाव जल्दी पड़ता है और कुछ भी नहीं सुनाओ। मुझे क्या मिला! क्या अन्तर आया लाइफ में, वह सुनने से आपका पुण्य बन जायेगा। पुण्य का खाता जमा करना है ना। भविष्य बनाना है ना। तो वर्तमान खुशी मिलेगी और भविष्य के लिए पुण्य जमा होगा, डबल फायदा। भाषण कोई सुने नहीं सुने, कहानी आपकी सुनेंगे, क्योंकि आपके जीवन की कहानी हो गई तो कहानी सब रूचि से सुनते हैं और कहानी याद भी आती है। तो ऐसी सेवा करो। कर सकते हैं ना? कर सकते हैं।

* इनकी विशेषता यह है, जो संकल्प करते हैं ना, वह पूरा करते हैं। यह बच्ची भी अच्छी है। सारा परिवार लकी है। माता जी भी लकी है ना। अच्छा है। देखो कहाँ के भी आये हो लेकिन सर्विसएबुल हो। बहुत अच्छी सेवा कर सकते

* ब्लैसिंग यही है कि सदा सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्ट करो। ऐसी लाइफ बनाओ जो आपके चेहरे से सदा सन्तुष्टता दिखाई दे, तो सन्तुष्टता सबको चाहिए। आपकी सूरत बोले, शक्ल बोले। बोल नहीं, शक्ल बोले।

* जो ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनते हैं तो सहयोग का रिटर्न बाप की मदद मिलती है। तो हिम्मत आपकी मदद बाप की। सदा यह याद रखना हिम्मत मेरी मदद बाप की। सब कार्य सहज होता जायेगा। जो भी आये हैं सभी को सेवा में लग जाना चाहिए। सभी को सन्देश दो, अपने अनुभव के आधार से।

* जहाँ भी कार्य करते हो, वहाँ अपने अनुभव के आधार पर औरों को अनुभवी बनाते जाओ। जो भी मिले खुशी बांटें तो पुण्य का खाता जमा होता जायेगा।

विदेश की बड़ी बहनों से:- बैलेन्स द्वारा सदा ब्लैसिंग लेने वाले। जहाँ बैलेन्स है वहाँ ब्लैसिंग स्वतः मिलती है। कितनी ब्लैसिंग मिलती है? अमृतवेले स्व स्थिति को इमर्ज करो। अपने स्वमान को इमर्ज करो। बाकी वैसे सेवा बढ़ती जा रही है, इसकी मुबारक है। अभी सेवा और स्व दोनों का बैलेन्स रखो। ऐसा सेवास्थान बनाओ जो सबके आगे एक एक्जैम्पुल हो। जैसे म्युजियम होता है ना तो सब एड्रेस देते हैं ना, शहर में कहाँ भी जाओ, तो एड्रेस देते हैं यहाँ जाओ, यहाँ जाओ। ऐसे जिसको शान्ति चाहिए, हिम्मत चाहिए, उमंग उत्साह चाहिए वह आपकी एड्रेस में पहुंचे। फैल जावे, अगर शान्ति का वायब्रेशन लेना हो तो यहाँ जाओ, अगर हिम्मत भरनी हो तो यहाँ जाओ। ऐसे स्पेशल बनाओ। ठीक है ना! बाकी म्युजियम तो जहाँ तहाँ आध्यात्मिक म्युजियम भी हैं, भाषण भी करते सब कुछ है। लेकिन कोई विशेषता ऐसी स्थान की बनाओ जो ब्राह्मणों में भी और बाहर में भी यह प्रसिद्ध हो जाए कि यह चाहिए तो यहाँ जाओ क्योंकि आजकल लोगों को सुनने की आदत तो है लेकिन अनुभव करने की आदत नहीं है तो अगर अनुभव करने चाहें तो आपके पास आये, यह प्रसिद्ध हो जाए कि अगर आपको अनुभव करना है तो यह एड्रेस है। बाकी अच्छे हैं। निमित्त बने हुए हैं। बापदादा को सेवा तो बड़ी पसन्द है। सेवा अच्छी कर रहे हो। और आपस में यहाँ जब संगठन में आते हो तो संगठन भी अच्छा करते हो, स्वयं और सेवा दोनों का अच्छा करते हो। इसमें आगे बढ़ते रहो।

डबल विदेशी मुख्य भाईयों से: अच्छा है आपका संगठन बढ़िया है। अगर सभी जो बाप ने आज बैलेन्स सुनाया, स्व का और सेवा का, दोनों का बैलेन्स बाप की ब्लैसिंग दिलाता रहेगा। बाकी सभी अपनी अपनी सर्विस में अच्छे चल रहे हो उसकी मुबारक हो। निर्विघ्न है ना! क्योंकि आप निमित्त हो तो निमित्त वाले जो करेंगे वह सब देख करके करेंगे। और उसका एकस्ट्रा पुण्य मिलता है क्योंकि दूसरे को हिम्मत मिली। तो वह भी आगे बढ़ा। तो आपके अनुभव से दूसरा अनुभवी बनता है, आगे बढ़ता है तो उनका फल आपको मिलता है, वह क्या मिलता है? अन्दर की खुशी। हल्कापना कोई प्राबलम, प्राबलम नहीं लगेगी। जो गायन है ना पहाड़ भी रूई बन जायेगा। देखने में बड़ी प्राबलम आयेगी लेकिन अनुभव के आधार से ऐसी हल्की हो जायेगी जैसे रूई। तो प्राबलम पूफ हो जायेंगे। ऐसी लाइफ हो जायेगी, नो प्राबलम। है प्राबलम? बस दिल से याद करो, कोई भी छोटी मोटी बात आवे, मेरा बाबा, बसा बाबा आप ले लो। तो प्राबलम बाबा के पास पहुंच जायेगी, आप हल्के हो जायेंगे। बाप के साथ चलना है ना, पीछे पीछे तो नहीं आना है, साथ साथ चलना है तो उड़ना पड़ेगा। बाप उड़ेंगे और बच्चे हल्के नहीं होंगे तो उड़ेंगे कैसे। साथ तो चल नहीं सकेंगे। इसलिए डबल लाइट। कोई भी प्रकार का बोझ नहीं। जो बोझ हो बाप को दे दो। खुद हल्के रहो। देना तो आना है ना। और बहुत अच्छा पार्ट बजाने वाले हो। प्राबलम नहीं देखो। डबल लाइट बनके आगे बढ़ते रहो। इसके (दादी जानकी के) डायरेक्शन से चलो। बाप आपको मदद देगा। बहुत सेवा कर सकते हैं। विशेषता है। सभी विशेष है। ग्रुप ही विशेष है। हर एक में कोई न कोई विशेषता है तभी यह ग्रुप बना है। उस विशेषता को कार्य में लाओ। रूको नहीं कार्य में लाओ। ठीक है। सब बहुत अच्छी निमित्त आत्मायें अच्छी हो। बापदादा का विशेष प्यार है। सभी एक दो से अच्छे हो। अच्छा।